सुभाष चन्द्र यादव

मैथिली त्रैमासिक

रचना

दरभंगा • दिसम्बर 05–मार्च 06 • मूल्य- 15 टका मात्र

राजकमल चौधरी : मोनोग्राफ

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ :-

महात्मा गाँधी शिक्षण संस्थान

मुख्य शाखा-गाँधी विहार, मिर्जा खाँ तालाब के
उत्तर, लहेरियासराय, दरभंगा - 846001,
फोन - 251802
शाखा- खाजासराय, लहेरियासराय, दरभंगा - 846001,
मो०-9835443796

स्थापित - 2001

विशेषताएँ :-

- वर्ग नर्सरी से वर्ग दशम् तक अंग्रेजी माध्यम से C.B.S.E. पाठ्यक्रमानुसार पूर्णतः विद्यालयीय शिक्षा ।
- कम्प्यूटर, उर्दू, कला-संगीत एवं शारीरिक शिक्षा की व्यवस्था ।
- विज्ञान की सुसज्जित प्रयोगशाला एवं समृद्ध पुस्तकालय ।
- कमजोर विद्यार्थियों के लिए विशेष वर्ग की व्यवस्था ।
- छात्र एवं छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास ।
- सैनिक स्कूल, रामकृष्ण मिशन, नवोदय, मिलिट्री स्कूल, सत्य साईं, वनस्थली सरीखे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए अलग से व्यवस्था ।
- वर्ष 2002 में 07, 2003 में 34, 2004 में 45 और 2005 में 22 विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में चयनित ।

पंजीयन प्रारम्भ
दिनांक- 03-01-2006 से

प्राचार्य
महात्मा गाँधी शिक्षण संस्थान

वर्ष : 5 : नव क्रमांक : 17-18 दिसम्बर 05-मार्च 06

सम्पादक
विश्वनाथ

रचना

मैथिली त्रैमासिक

मोनोग्राफ

राजकमल चौधरी

सुभाषचन्द्र यादव

सम्पादकीय

पोस्टमारटम

7 जनवरी 2005 । सुपौल । किसुन कुटीर । राजकमल चौधरीक विनिबन्धक संबंध मे चर्चा होइत रहय । केदार कानन कहलनि मूल मैथिलीमे लिखल विनिबन्ध एखन धरि नहि छपलैक । मैथिलीमे हमर प्रिय लेखक सतीशचर्मा कहलनि- 'एहि विनिबन्धक प्रकाशन अपेक्षित।' उदास मोनसँ हम सुपौलक कच्ची-पक्की सड़ककेँ पार करैत मधेपुरा दिस विदा भ' गेलहुं । हमर मोन, प्राण आ आत्मामे राजकमल चौधरीक कविता चक्कर काट' लागल- 'बड्ड अल्पवयस छी हम सभ, नई देखि सकब अप्पन शव यात्रा'- हम की जवाब देबैक इतिहासकेँ। साहित्य अकादेमी.. अपन-अपन निहितार्थ । अकादमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि.. परामर्श मंडलक सदस्य ! पुरस्कार पर पुरस्कार । व्यवस्था सँ जुड़ल लोक । पूँजीवादी संरचनाक कल-पुर्जा भेल मनुक्ख स्वांग रचैत अछि.. सुभाषचन्द्र यादवक लिखल विनिबन्ध.. राजकमल चौधरीक आत्मा.. सुपौल आ मधेपुराक सड़क पर दउगल जाइत मोटरसाइकिल.. कानमे गुलेबन्द बन्हने पाछाँमे बैसल.. फेर हमर मोनमे राजकमल चौधरीक कविता हहाइत रहल:

चक्र व्यूहमे मरि गेल, अछि अभिमन्यु
कनइत रहू हे अर्जुन, हे द्रौपदी कोनो लाभ नइँ;

मोनमे विचार रहय महिषी जयबाक.. भगवती उग्रताराक दर्शन करबाक। वनगामक रामबाबू आ हरिजी मोन पड़लाह । वनगामक अनेक स्मृति । महिषीक उग्रतारा परिसरक अनेक दृश्यखंड :

शक्ति पबइ छी तोहर भक्तिसँ हम, हे पाषाणी
जयहे, जय जय हे तारिणी, जन-कल्याणी

चाह-पानक छोटछीन गुमती । कोसी कातक साँझ । मोटर साइकिल रुकैत अछि । हमरा लोकनि पान खाइत छी । हमर सभक राजकमल चौधरी ..15 अगस्त 1947 केँ स्वतंत्रताक सूर्योदय भेलैक । लोक केँ भेलैक स्वतंत्रताक लड़ाइ खतम भ' गेल । राजकमल चौधरीक विप्लव एतहिसँ आरंभ होइत अछि- देश स्वतंत्र भ' गेल, मनुक्ख कहाँ स्वतंत्र भेल ? सामाजिक दासताक बन्हन कहाँ टूटल ? एकटा व्यवस्थाक अंत भेल आ दोसर व्यवस्था दोशाला आ रेशमी संस्कृतिकेँ जन्म देलक । जन संघर्ष, व्यवस्थाक खिलाफ विद्रोह, कल्याणकारी राज्यक मुखौटाकेँ उतारबाक आमरण संकल्प, स्त्रीक मुक्ति, औनाइत लोकक आत्म-संघर्ष... आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रस्थान- बिन्दु राजकमल चौधरीक साहित्य सँ आकार ग्रहण करैत अछि । राजकमलक साहित्यमे विचारधाराक ऊर्जा आ उष्मा अछि । वैश्विक वैचारिक चेतना सँ मैथिली केँ लयबद्ध कएलनि.. मैत्री, करुणा, स्नेह आ वात्सल्यक अमृत सँ परिप्लावित राजकमल चौधरीक रचना-संसार संघर्षरत मनुक्खक यथार्थक धूँआ आ धधरा, राख आ चिनगीकेँ रूपायित करैत अछि । सुपौल- मधेपुरा सड़क पर मोटरसाइकिल भागल जा रहल अछि । मोन पड़ैत छथि बन्धुवर कीर्त्तिनारायण मिश्र.. आखरक राजकमल विशेषांक आ उदास आ विह्वल हमर मोन केँ नव उष्मा दैत अछि महाप्रकाशक कविता :

राजकमलक पोस्टमारटम भ' रहल छैक
हिन्दी सँ मैथिली धरि,
मैथिली सँ बंगला धरि,
कवि लेखकक कनफेरेंसमे
चौराहा पर कैफेमे
प्यालीमे विहाड़ि ।

हमरा लोकनि जे मृत्युधर्मा छी, बड़ छोट छी प्रतिभा आ कलेजामे, साहित्यकार आकि कवि-कथाकार बनबाक स्वांग रचैत रहैत छी आ कि सम्पादक बनबाक गरब सँ दुग्ध-धवल (विषकुम्भं पयोमुखः) होएबाक प्रयत्नमे थूक देखैत छी आ कि आलोचक आ विद्वानक प्रमाण पत्र बँटबाक साहस जुटबैत छी.. आ कि अपन चटिया केँ कवि कथाकारक प्रमाणपत्र दैत-दैत धन्य होइत रहैत छी.. आकि राजकमल आ सुभाषचन्द्र यादवक समर्पण, निष्ठा, वैचारिक उष्मा आ इमानदारी सँ आतंकित भ' जाइत छी... आकि हीनताग्रन्थिसँ तिलमिला उठैत छी !

आबऽ दिअौ.. प्रतायी सूर्यकेँ.. बन्धु ! अहूँकेँ प्रकाश भेटत !

हम मधेपुरामे मोटरसाइकिल पर सँ उतरि जाइत छी !

राजकमल चौधरी

स्मृति राजकमलक

प्रो. रमाकान्त मिश्र

❑ १९५० इसबीक क्रिसमसक अवकाश । बौआ ढहना कऽ डेरा घूरल रही । दुपहरियाक समय । बाहरक कोठलीक केवाड़क दुनू पट्टाकेँ मुँह बौने पाजि नोकर सरयुगवा पर क्रोध करिते रही जे नछटवा केवाड़ फुजले छोड़ि कतहु मटर गस्ती मे अछि कि देखलहुँ तकसपोस पर एकटा व्यक्तिकेँ लम्बायमान । आहट पाबि, उठि कऽ बैसि, ओ व्यक्ति, कनेँ हँसैत, हमरा बड़ परिचित रूपेँ सम्बोधित कयने रहथि,- "रामू ?" आश्चर्यसँ हिनका टोहिअबिते रही कि ओ हँसैत आँखिए अपन हाथ हैन्ड सेककेँ मुद्रामे बढ़ौने रहथि-"हम छी मणीद्र चौधरी । दिवानाथक दोस्त" ।

❑ स्मरण होइछ जे राजक बाहरी आकृति शान्त रहैत छल, कोनो प्रकारक दम्भ नहि, कोनो प्रकारक पूर्वाग्रह नहि, अनेरे वाक्युद्ध करबाक प्रवृत्ति नहि । राज मंचपर चढ़ि भाषण करऽ बला व्यक्ति नहि छलाह । स्मरण होइछ राजक व्यक्तित्वक सबसँ विचित्र लक्षण-गप्प करिते-करिते उठि कऽ कत्तौ चल गेनाइ । उठि कऽ ताकी तँ राजकमल चौराहा दिससँ मस्तगज जकाँ झुलैत चल अबैत धोती पर तीन बटनबला, कने लम्बा सर्ट पहिरने । पुछिऐक- "की हौ, चुपचाप किएक चल गेलह ? की बात ।" कहय- "इएह, कने सिगरेट लाबऽ चल गेलहुँ ।" आ, एकटा सिगरेट ऑफर करैत पुनः राज बच्चा जकाँ छोटकी मजीराक दुनदुनी जकाँ हँसय । राजक कलाकार ओइ प्रारम्भिक समयमे, जखन कि ओ सृजनक मात्र रिहलसले करैत छल, सतत छटपटाइत रहबाक, सतत चंचल रहबाक बोध करायय । राजक प्रथमहि ओइ दरिभंगा-यात्रामे ई आभास भऽ गेल छल जे एहि व्यक्तिक भीतरमे बहुत रास विस्फोटक सामग्री छैक, बहुत रास ज्वलनशील समिधा छैक ।

❑ राजकमल सन पत्र लिखनिहार आइ तक हमरा नहि भेटल अछि । राजक कविता, कहानी वा अन्य कोनो विधामे लिखल वस्तुक कलात्मक शैलीसँ कनेको कम रोचक हम हुनक पत्र केँ नहि मानैत छी । एहि बातक अनुभव हुनक अनेको मित्र केँ भेल होयतनि । हुनक जे कोनो पत्र उपलब्ध अछि, ओकरा पुनः पढ़ैत छी आ ओहने आनन्द होइत अछि जेहन कोनो रोचक कविता वा कहानी पढ़ने होइछ । जँ हुनक पत्रक संकलन हो आ ओकरा पुस्तकाकार कयल जाय तँ ई एकटा साहित्यिक उपलब्धि होयत ।

❑ 1956 केर अन्त धरि वा 1957 केर कोनो समय हमरो सबकेँ दरिभंगा हाउस छोड़ऽ पड़ल रहय, किएक त, प्रासाद पटना विश्वविद्यालय कीनि लेने रहैक । हम सब कतेको ठाम रने-बने बौआयल रही आ, अन्ततः राजेक माध्यमसँ नाला रोड स्थित रामकृष्ण मिशन लेनक सामने नेपाली लॉजमे शरण लेने रही । राज ओहि गलीमे, कने आगाँ, एकटा धोबीक दूमंजिला मकानमे सपत्नीक रहय । सचिवालयक किरानीगिरी आ गृहस्थीक भारसँ व्यस्त राजक संग ओहि समय साहित्य-चर्चा बड़ कम हो । मुदा राजक 'ट्रेल' हमरा सदिखन रहैत छल, कखनो सोडा फाउन्टेन मे तँ कखनो पटना मार्केटवला होटलमे चाह पीबैत आगाँ मे एकटा कागज पर बहुत फुर्तीसँ लिखैत कोनो कथाक नोट्स, वा कोनो कविता । राज अपन अपूर्ण कथा वा कविता हट्ठे नहि देखबितय । संगे चाह पीवि पुनः धुरि कऽ डेरा तक अबितहुँ । राजक पत्नी शशिजीसँ हमरा कोनो बाजा भुक्की नहि छल । कइएक बेर लक्ष्य कयने रहिऐक जे सचिवालयसँ राज पैरहिँ अपन वासा अबैत छल, कोनो सवारी पर नहि । दुढ़ेकिया धोती पर ठेहुन तक लम्बा, तीन बटनवला सर्ट पहिरने मस्त हाथी जकाँ झुलैत चल अबैत राजकेँ नेपाली लॉजक छत सँ देखिऐक । मुड़ अबैक तँ चाह पीबऽ चल आबए आ अपन नवीन कृतिक चर्चा करय नहि तँ व्यस्त भावेँ हाथ हिलिबैत गलीमे विलीन भऽ जाय । जँ कहियो इहो इच्छा हो कि राजक ठाम जा कऽ हुनक स्त्रीसँ धाख छोड़ा (राज हमरासँ तीन वर्षक जेठ रहय) चाहक आग्रह कऽ दिअनि आ राजक संग किछु साहित्यिक चर्चामे समय बितावी तँ ई सोचि रुकि जाइ जे गृहस्थ राजकमलक ऊपर ई अत्याचार उचित नहि होयत किएक तँ साँझ खनकेँ थाकल ठेहिआयल आयल राज आराम करैत होयत । कइ एक दिन ओकरे टोहिआबऽ जाइ तँ राज हाथमे झोड़ा लऽ सब्जीबागसँ तरकारी कीनऽ हमरे संग चलि पड़य । एकटा बड़ संतुलित आ संयमित व्यक्तित्व बला सद् गृहस्थ राज । एहन-एहन समय राजक भावुक लेखक आ भीतर सँ छटपटाइत कलाकार एकटा साधारण किरानी बाबूक दिनचर्या मे विलीन रहैत छल । तखन अहाँ नहि भाँपि सकैत छलिऐक ओकर अभ्यन्तरक दावानलकेँ, ओकर मनोरथक हिनहिनाइत, टाँग पटकैत, सरपट दौड़बाक आकांक्षा रखैत तुरगकेँ । ई तँ बादमे भान भेल । शुरू मे तँ ठका गेल रही । सुसुप्त शांत जलक शीतलताक ठथर तलमे एकटा ज्वालामुखी छैक, एकर भान तखन नहि भेल रहय । गृहस्थ राजकमल तँ एकटा पार्ट अदा करऽबला माँजल कलाकार छल । वास्तवमे ओ जतबेक जमीनसँ ऊपर छल ततबे जमीनसँ नीचाँ-प्रच्छन्न, रहस्यमय, चंचल आ आस्थाहीन ।

❑ मोने आ मस्तिष्केँ राजकमल यायावर छलाह । हुनका सँ, अपन सम्पर्क सम्बन्ध कथाक सात वर्षक काल खण्ड कें जखन आब पीठक आँखिए देखैत छी, बहुत रास घटना अघटनाक जखन आब सूक्ष्म परीक्षण करैत छी, हुनक हिन्दी आ मैथिली मे लिखल गद्य आ पद्य केँ पढ़ैत छी, हुनक अनेक कथा, अनेक कविता अनेक पत्र-पत्रादिक, आत्म कथ्य परक लेखक अवगाहन करैत छी आ, पुनः हुनक भोगल यथार्थक व्यथा-कथाक सूत्र सब मिलबैत छी तँ बड़ इच्छा होइछ जे राजक जीवनक विस्फोटक उद्दण्डताक जड़ि केँ खोधी, ओकर विद्रोहक उत्सकेँ पकड़ी, ओकर निरंकुशताक उत्प्रेरक सामग्रीक पता लगाबी, ओकर आस्थाहीनता, ओकर नकारात्मक स्वरक मनोवैज्ञानिक आधार भूमिक विश्लेषण करी । नव पीढ़ीक कतेको युवक कथाकारकेँ राजक साहित्य anti-establishmentक साहित्य लगैत होयतनि, व्यवस्था-विरोधक साहित्य लगैत होयतनि । अंशतः से सत्य, मुदा प्रायः अर्ध सत्य पूर्ण सत्य नहि ।

❑ राज ओहन जीवन नहि बितबितथि, जेना ओ बितौलनि, जँ हुनक पिता तेसर विवाह नहि कऽ लितथिन । जँ राजकेँ अपन मायसँ अपन पितासँ अछिन्नरे स्नेह भेटल रहितनि तँ प्रायः राज 'साँझकगाछ, 'ननदि-भाउज' "वैष्णव" सन मैथिली कथा आ 'मछली मरी हुई' वा 'मछली जाल' सन हिन्दी उपन्यास नहि लिखतथि । अथवयसू होइत पिताक तृतीय पत्नीक प्रति जवान होइत राजक दृष्टिकोण की

माय-बेटाक रहल होयतनि ? पिताक प्रतिएँ मोन मे कतेक विद्रोह भरि गेल होयतनि । किशोरावस्थाक देहरि टपैत राजक मोनमे ? आ, अपन माय कतेक मोन पड़ैत हेथनि ? तेँ ई कहब अतिशयोक्ति नहि होयत जे राजक जवान होइत देह आ मोन अपन माय बापक दिस सँ एकटा वितृष्णा सँ भरि गेल होइनि । स्त्री जातिक प्रतिएँ राजक मोन एकटा अनास्थासँ भेरि भऽ गेल होनि । अपन मायक स्नेहसँ बंचित, अपन पिताक स्नेहसँ विच्छिन्न ओही समय सँ Bohamian भऽ रौल रहथि, यायावर भऽ गेल रहथि, भाए-बाप रहितहुँ मैटूअर-बपटूअर भऽ गेल रहथि । तेँ विद्रोह सँ भरल राज, गथा-नवादाक कतेको "बाँधा"क स्वच्छन्द विचरण बिना छान आ पगहाकेँ करथि । कम्युनिस्टि पार्टीक कार्यकर्त्ताक संग सर्वहाराक जीवनक कटु-मधु अनुभव प्राप्त करऽ चल जाथि । गाँजा, भांग, ताड़ी पीबऽबला किछु विद्रोही युवकक संग राजकेँ अनेक देह व्यापार करऽ बाली वारांगना आ ओकर दलाली करऽबला विभिन्न रूप-रंगक पात्र आ पात्रीकेँ लगीचसँ देखबाक अवसर जवानीक प्रारम्भहिमे भेटि गेल रहनि । पटनाक बी० एन० कॉलेज मे विज्ञानमे दू बेर 'फेल' होबयबला युवक, अपन पितासँ तिरस्कार प्राप्त करऽबला युवक, अपन सतमायसँ प्रताड़ना आ अवहेलना प्राप्त करऽबला युवक, एकटा लक्ष्यहीनताक बोध करऽबला युवक घुरि कऽ पुनः ओही स्नेहरिक्त 'आश्रम' मे जैबाक असाध्य वैकल्य बोधसँ तिलमिलाइत युवक राज केर भीतर अनेक विस्फोटक सामग्री, यथेष्ट समिधा संगृहीत भऽ गेल छलनि । एहने समिधा लऽ कोनो ऋषिक खोजमे राज कथाकार आ शब्द शिल्पकार भऽ गेलाह । मुदा राजक विद्रोह, राजक अनास्थाक स्वर कोनो दार्शनिक चिन्तन पर आधारित नहि छलनि । वास्तवमे राज स्नेह तकैत छलाह जे हुनका पितामे नहि भेटलनि, माय तकैत छलाह जे हुनका विमातामे नहि भेटलनि, आदर तकैत छलाह जे हुनका अपन परिवार वा पार्श्वमे नहि भेटलनि, प्रेम तकैत छलाह जे प्रायः अपन पत्नीमे भेटलनि तऽ मुदा ओहन नहि जेहन हुनका चाही । राज व्यवस्थो तकैत छलाह, अनुशासनो चाहैत छलाह, प्रायः एकटा गृहस्थी, एकटा निरापद आ स्नेहसिक्त नीड़क निर्माण चाहैत छलाह जे हुनका नहि भेटलनि ।

❑ स्मरण होइछ एकटा घटना । कोनो छुट्टीक दिन राज सँ भेँट भेल रहय आ हम सब ओकरा रातिक नौ बजे नेपाली लॉज मे आबि तास खेलयबाक निमंत्रण देने रहिऐक । मुदा, जखन चारिम पार्टनरक अन्वेषण मे हम आ किसुनजी भाइ ओकर वासा घर अचानक साढ़े नौ बजे राति केँ ओकर केवाड़ी खटखटलिएक तँ सपत्नीक सव्यास्थ राज भीतर सँ कोनो गुहा मानव जकाँ गुर्रिल रहय । वा कोनो सद्गृहस्थ जकाँ कुपित भेल रहय ? जकरा हमर सन-सन उत्तरदायित्वहीन युवकक उपस्थिति, रतिऐल रातुक ओहि काल मे बड़ खराप लागल रहैक । बुझायल रहय जेना अपन गृहस्थीक लक्ष्मण-रेखाक मोहित वृत्त (Charmed circle) मे ओ कोनो मित्रक अनधिकार प्रवेश नहि चाहैत हो । क्रोध तँ अवश्य भेल रहय, मुदा सुखद आश्चर्यो भेल रहय जे राज सद्गृहस्थ अछि, पत्नी केँ दसक रातुक बाद एकसरे कोना छोड़ि दोस्त संग तास खेलायत ?

❑ राजक कथा 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' जकाँ अछि । स्वरगन्धा सँ लऽ कऽ राजक अनेक कविता तँ आत्म कथनात्मके अछि । ठीके, राज महादेव जकाँ एहि जंगल सँ ओहि जंगल भटकैत रहल रहय अपना काँन्ह पर अनेक उपालम्भ, अनेक राग, अनेक उपराग, अनेक दोषक व्यथाक लहास लदने । आ, इहो सत्य जे कलाक विष्णु ओहि लहासक खण्ड-खण्ड करैत राज केँ एकबेर फेर भारमुक्त, दोषमुक्त कऽ देलथिन । मुदा, तावत तँ राज आहत छलाह, अपन मृत्युक आहटि सुनि रहल छलाह । [रचना (मासिक), दिसम्बर 1984 सँ साभार]

न वह किसी का पुत्र था
न भाई था
न पति था
राख और जंगल से बना हुआ
वह
एक ऐसा चरित्र था
जिसे किसी भी शर्त पर
राजकमल होना था

-धूमिल

पत्नीक नाम राजकमल चौधरीक अन्तिम पत्र

पटना १८/५/६७

प्रिय शशि,
हम सकुशल छी । हम २१ मई (रवि) साँझ खन गाम आयब ।
काल्हि सुधीरक ससुर आयल छलाह । मधुबनी वाली कनियाँ केँ बेटा भेल छनि-काल्हिए छठिहार छलनि ।
कनियाँ आब पहिनें सँ नीक छथि ।
पटनाक सभ समाचार नीक ।
आशा अछि, अहाँ ठीक समय पर दबाई खाइत हैब, आ नीलू केँ सेहो दबाई दैत हेबैक । जँ समय पर दबाई नहि देबैक, तऽ रोग नहि छूटत ।
विशेष किछु लिखबाक नहि अछि । दिव्या, मुक्ता, नीलू कें हम्मर दैनिक आशीर्वाद । आशा अछि, दिव्या प्रतिदिन स्कूल जाइत हैत । मुक्ता कें सेहो पढ़ैबाक व्यवस्था करब ।
पन्ना तरकारी लगौलनि, की नहि लगौलनि ?

अहींक,
राजकमल

कविता

असमाप्त कथा : असमाप्त पत्र

राजकमल चौधरी

राजकमल चौधरी

कलकत्ता-प्रवास के हे संगी, योगिराज
भय गेल समाप्त जे कथा, पुनः कहबा के कोन काज ?
बोवल "संतोष" (कौ भेटि सकत पुनि हमरा ?)
नइँ परोक्षमे सभटा वसन्तसुख सिसोहि लेत कोनो नव भमरा ?
किन्तु, कोना हम बान्ही गृह उजड़ल-उखड़ल
अमृत त' लए गेल छीनि कए समय-देवता, अछि बचल गरल
हम स्थिर छी, अनासक्त, स्थितप्रज्ञ, समाधिग्रस्त योगी सन
अतिभोगिता भुखल वेश्या सन हमर आत्मा, अछि क्षयरोगी सन
अकस्मात, घुमइए आकाश, छथि जेहर हमर दमयन्ती
ढरकि पड़इए विन्ध्याचल, करय अगस्त्य मुनिसँ बिनती
उठइत अछि ऊपर एकटा रूपलोकित पर्वतीय नगर
मुदा, की पुनः बनि भय सकत कमलपत्रपुटमे हृदय-भ्रमर?
प्रेम थिक हमरा सभक स्वर्गिक आनन्द, राजसी भोजन
स्मृतिक वनस्पति घीमे छानि मलपुआ खाइ छथि सभ जन
किन्तु प्रेमक वास्तविकता अछि अप्राप्य, दुर्लभ
जेना खिड़कीसँ अबइत सूर्यरश्मि, जेना नीललोहित नभ
रश्मि करइए, स्मृति करइए हमर स्पर्श, मुदा नइँ सूर्य
सूर्य आयत त' भए जायब हम भस्म

हम मनुक्ख छी, स्मरण अछि एखनउँ धरि
भीजल नयन, सुखायल रक्त अधरक एकटा चेहरा
एकटा अभागलि नारि, जकरा पक्षमे नइँए किछु तर्क
अछि निर्णायक काल, करइए दुर्वह दण्डक घोषणा
जीवनक आस्था चुप्प अछि अनुभवी ओंकिल जकाँ
पशाँत युगमे भागि जाइ छथि सौन्दर्यक सभ साक्षी
ककरा परवाहि छइ ? ढहत त', ढहि जाए कोनो गृह...
हम छी एहि कचहरीक उँघाएल द्वारपाल
भए जाइए निन, स्वप्नमे चिकरइ छी-
टूटि जाए सभटा महल, प्रकोष्ठ, देबाल, खिड़की, केबाड़
टूटि जाए, सभटा मोह सभटा बन्धन छूटि जाए...

उठए आत्मासँ प्रश्न-के छलि "सावित्री" ?
कतए छलि, किअए छलि, हमरासँ छलइ कोन सम्बन्ध ?
चन्द्रमाक किरनजाल प्रभातवायुमे बिला गेल
छीनि लेलक स्वार्थी सूर्य सभटा ज्योति, सभटा शान्ति
अहर्निश रातिमे कएल, प्रतिज्ञा पर करत के दिनमे विश्वास ?
कहइए चन्द्रकिरिन-बिदा लिअ, दोसर नइँए उपाय
मृत्युक आँगा हम, अहाँ, ओ सभ छथि निरुपाय

आर कतेक काल धरि ठहरत गुलाबक डारि पर हिमखण्ड ?
की अस्तित्वक नाशे थिक सिनेहक एकमात्र दण्ड ?
जँ स्थितिक होइतउँ हम विधाता, होइतउँ ब्रह्मा, विश्वकर्मा
त' पल विपल क्षणक सीमाकेँ बना दितउँ अमर अनन्तधर्मा
मुदा नइँ छी विधाता तइओ, हमर आत्मामे जीवित अछि
एकटा गुलाब, एकटा हिमखण्ड अमर अछि, असीमित अछि
सृष्टिक ई आदिकथा, विश्वक ई मूल नियम
नइँ नाश कए सकत महेश, नइ समाप्त करत यम
अग्नि ज्वालहुँ मे हँसबे करत गुलाब दलक-दल
एहने बहुत किछु लिखबाक अछि...राजकमल

सुभाषचन्द्र यादव

एहि मोनोग्राफक बारे मे

राजकमल चौधरी पर मोनोग्राफ लिखबाक काज हमरा 1993 ई.क अंतमे भेटल छल । सुनलहुँ जे साहित्य अकादेमीक एहि निर्णयसँ एहन कतेको व्यक्ति खिसिया गेलाह, जिनका कोनो ने कोनो कारणेँ ई विश्वास छलनि जे राजकमल पर मोनोग्राफ लिखबाक लेल वैह सर्वाधिक उपयुक्त आ योग्य छथि । मैथिलीमे निस्संदेह अनेक योग्य व्यक्ति छथि आ ई काज किनको देल जा सकैत छल । लेकिन मैथिली परामर्श मंडलक जाहि बैसारमे ई निर्णय भेल ताहिमे कोनो दोसर नाम नहि छल । देवकान्त झा प्रस्ताव देलनि आ ओ स्वीकृत भऽ गेल ।

मोनोग्राफ लिखबामे हमरा बहुत विलम्ब भेल । ओकर पांडुलिपि हम 1996 ई.क अप्रैलमे कलकत्तामे भेल बोर्डक मीटिंगमे जमा कयलहुँ । मीटिंगे मे पांडुलिपि रामदेव झाकेँ समीक्षा हेतु दऽ देल गेलनि । ई बात ठीक नहि भेल, से मीटिंगक बाद तखन बुझायल जखन मोहन भारद्वाज एहि दिस ध्यान दिऔलनि । मीटिंगमे हम रामदेव झाक 'पसीझैत पाथर'क प्रस्तावित अंगरेजी अनुवादक विरोध कयने छलिऐक। पाँच-छह मास गुजरि गेलाक बादो जखन रामदेव झा अपन समीक्षात्मक रिपोर्ट नहि पठौलथिन तऽ विश्वास भऽ गेल जे ओ हमरा विरोध करबाक मजा चखा रहल छथि ।

फलतः साहित्य अकादेमीकेँ हम पत्र लिखलिऐक जे समीक्षकसँ रिपोर्ट अविलम्ब मंगाओल जाय । अंततः आठ महीनाक बाद जनवरी 1997मे रामदेव झा रिपोर्ट जमा कयलथि । पांडुलिपिकेँ ओ अस्वीकृत कऽ देने छलाह । हुनक रिपोर्ट 'वाचक का प्रतिवेदन' प्रकाशित कयल जा रहल अछि । ओहि रिपोर्टक जवाब, जे हम साहित्य अकादेमीकेँ पठौने छलिऐक, सेहो 'वाचक का प्रतिवेदन'क तुरंत बाद छापल जा रहल अछि।

रामदेव झा द्वारा रिपोर्ट जमा करबा सँ पहिने मोहन भारद्वाज दिल्ली गेल छलाह तँ हमरे कहला पर ओ साहित्य अकादेमीक उपसचिव रमेश भसीन सँ गप्प कयने छलथि । तकर सूचना दैत ओ लिखने छलाह– 'भसीन सँ अहाँक पत्रक प्रसंग गप्प भेल । ओ कहलनि जे अन्यथा रिपोर्ट अयला पर पुनः दोसर गोटेसँ रिव्यू कराओल जयतैक । पोथी छपतैक, कने-मने संशोधन करऽ पड़य से संभव । अहाँ निश्चिंत रहू ।'

पांडुलिपि अस्वीकृत हेबाक आशंका तँ रहबे करय । रच्छ ई छल जे परामर्श मंडलक एकटा और मीटिंग, जे ओकर आखिरी मीटिंग होइत, अप्रैलमे निर्धारित छल, जाहिमे सदस्यक रूपमे उपस्थित रहि हम अपन पांडुलिपिकेँ बचेबाक प्रयास कऽ सकैत छलहुँ । दिल्लीमे मीटिंगसँ पहिने भसीन कहलनि जाहि नाम पर आपत्ति हो, तकर विरोध अहाँ मीटिंगेमे करब । मीटिंगमे निर्णय भेल जे पांडुलिपिक समीक्षा फेरसँ कराओल जाय । ककरा देल जाय ? सभ चुप छल । सुझाव रामदेवे झा दिससँ आयल– मोहन भारद्वाज । हमरा भसीनक सलाह मोन तँ पड़ल, लेकिन ई नहि खटकल जे रामदेव झा किएक मोहन भारद्वाजक नाम सुझा रहल छथि । हमरा मोहन भारद्वाज पर अविश्वास नहि रहय आ हम चुप रहि गेलहुँ । बादमे मोहन भारद्वाज कहलथि– आब अहाँक मोनोग्राफ बचि गेल । हमरो लागल जे ठीके आब ओ छपि जायत । मीटिंगक बाद सुरेश्वर झा आ रामदेव झा इलाहाबाद जयकांत मिश्रसँ भेंट करऽ चल गेलाह– साहित्य अकादेमीक अगिला मैथिली संयोजक बनबाक पैरवीमे ।

मोहन भारद्वाज पांडुलिपि पढ़िकऽ रामदेवे झाक लाइन पकड़ि लेलनि । ओहो कहऽ लगलाह जे मैथिली साहित्यकला खंड कने और पैघ कऽ दिअौ; राजकमलक यौन जीवनक ई अंश हटा दिअौ, ओ अंश हटा दिअौ आदि । राजमोहन झा आ सुकांतकेँ ओ अपना ढंगे बुझा-सुझा कऽ तेना तैयार कऽ लेलनि जे आब हुनका बदलामे वैह दुनू हमर पांडुलिपिकेँ अयोग्य घोषित करऽ लगलाह । महाप्रकाश एहि बात लऽकऽ सुकांतक फज्झैतो कयलथि । पांडुलिपिक प्रकाशनक चिंताक कारणेँ हम ओहिमे किछु जोड़बाक आ ओकरा संपादित करबाक लेल तैयार भऽ गेलहुँ । लेकिन ई जोड़-घटाव बहुत मामूली छल । पांडुलिपि मोहन भारद्वाज केँ घुरा देलियनि । किछु दिनक बाद ओ कहऽ लगलाह अहाँ जे किछु कहलिऐक अछि से निष्कर्ष रूपमे अलगसँ लिखि कऽ दऽ दिअौ । मोनोग्राफकेँ पी-एच.डी. थीसिस बना देबाक हमर कोनो इच्छा नहि छल । निष्कर्ष लेल हम एकदम तैयार नहि भेलहुँ । तथापि ई तय भऽ गेल छलैक जे साहित्य अकादेमीक अगिला मैथिली संयोजक रामदेव झा हेताह । मोहन भारद्वाजकेँ परामर्श मंडलक सदस्य बनबाक रहनि आ से हुनका रामदेवे झा बना सकैत छलनि; बनाइयो देलथिन । पता चलल हमर मोनोग्राफकेँ ओ रिजेक्ट कऽ देलनि । कारण ई जे विनिबंध लेखक पांडुलिपिमे अपेक्षित संशोधन आ परिवर्तन लेल तैयार नहि भेलाह ।

हमरा लेल ई बड़ पैघ आघात आ चुनौती छल । हम ओकर हिन्दी अनुवाद करब आरंभ कयलहुँ । एहि प्रसंगमे हमरा केदार काननक अविस्मरणीय सहयोग भेटल । मोनोग्राफक प्रतिलिपि तैयार करबाक आ ज्ञानरंजनसँ ओकर प्रकाशन संबंधी गप्प करबाक श्रेय केवारेकेँ छनि । ई मोनोग्राफ पहिने 1998 ई.मे पहल पुस्तिका रूपमे छपल आ 2001मे सारांश प्रकाशनसँ किताब रूपमे । आब ओ मैथिलीमे छपि रहल अछि । एहि मैथिली-रूपमे किछु एहनो चीज अछि जे हिन्दीमे नहि अछि ।

एहि मोनोग्राफक हिन्दीमे बहुत प्रशंसा भेल । प्रकाश मनु आ लीलाधर मांडलोईक प्रशंसात्मक समीक्षा हिन्दीक पैघ आ प्रतिष्ठित पत्रिकामे छपल । हमरा लग प्रशंसाक अनेक पत्र आयल । बहुत गोटय चिट्ठी लिखिकऽ ओकर खोज करैत रहल । बहुत गोटय राजकमलक बारेमे अपन संस्मरण लिखि कऽ पठौलक । मैथिली जगतमे एकरा रिजेक्ट करबाक बहुत विरोध आ आलोचना भेल । पत्रिकामे उतरा-चौरी, उकटा-पैंची आ विवाद चलल । एहिमे सर्वाधिक मुखर रमेश छलाह । मैथिली-हिन्दीक रचनाकार डॉ० सुवास कुमार, जे हैदराबाद विश्वविद्यालयमे हिन्दीक प्रोफेसर आ अध्यक्ष आ वेस्ट इंडीजमे कैक साल भिजिटिंग प्रोफेसर छलाह, एहि मोनोग्राफक बारेमे लिखने रहथि : उलटाने लगा तो खत्म किये बिना चैन न पड़ा । पूरा पढ़ गया– जिसे कहते हैं, एक ही साँसमे । बड़ा मनोयोग पूर्वक लिखा है आपने, और बड़ा ही संयत होकर । राजकमल पर इससे बेहतर कोई रचना मैंने नहीं देखी है । जानकारी और विश्लेषण दोनों ही दृष्टियों से अत्यंत उत्कृष्ट और समृद्ध है यह पुस्तिका । खुशी की बात है कि सारांश प्रकाशन से इसका पुनर्प्रकाशन होने वाला है ।

सुभाषचन्द्र यादव / 29.11.2005

90=00

वाचक-प्रतिवेदन

डा. रामदेव झा

डा. रामदेव झा

मैथिली विनिबन्ध 'राजकमल चौधरी'

1. मैथिली विनिबन्ध 'राजकमल चौधरी' की 94 पृष्ठों की पाण्डुलिपि आद्यन्त पढ़ गया । इसमें 54 पृष्ठों में राजकमल के जीवन और साहित्य पर विचार किया गया है । शेष 40 पृष्ठों के परिशिष्टमे राजकमल चौधरी के हिन्दी, मैथिली एवं अंगरेजीमे लिखित वैयक्ति पत्र, आलोचना, निबन्ध, कथा, नाटक, कविता एवं राजकमल द्वारा तथाकथित अंकित रेखाचित्र इत्यादि 'चयन' शीर्षक से संकलित किये गये हैं । इनमें प्रायः कतिपय अंगरेजी कविता को छोड़कर शेष प्रकाशित ही है । चालिस पृष्ठों के इस परिशिष्ट की, पुस्तक की कलेवर-वृद्धि के अतिरिक्त कोई प्रयोजनीयता नहीं जान पड़ती है । लगता है, लेखक ने राजकमल की रचनाओं का संकलन कर उसकी भूमिका के रूपमे पूर्वके 54 पृष्ठ लिख दिये हैं ।

2. पाण्डुलिपि की भाषा अशुद्धियों से भरी हुई है । कुछ अशुद्धियों को बानगी रूपमे देखा जा सकता है–

पृष्ठ और पंक्तियों का निर्देश कोष्ठ के अन्तर्गत दिया गया है–

अखनो (6/13, 29, अन्यत्रभी), बचपन (6/23, 40), लगलथि (6/25, 31, 26/14), दरार (7/1), डरि गेलीह (7/4), देलकनि 7/26- उचित देलथिन), बजौलकनि (7/28- उचित-बजौलथिन) शोर पाड़लकनि (7/29), लेकिन (7/31, 10/11, 11/14, 13/40), या (7/44, 8/8, 17/12, 51/44, 45) बारेमे (8/23, 13/23), बतबैत (9/4) पैदा (9/12, 50/21), तरीका (9/16), परिग्रह (?) (9/18), 'कऽ' स्थाने 'के' (सर्वत्र), 'तँ' स्थान 'तऽ' (सर्वत्र), लड़का (9/23, 43), खेलाइछ (10/2), सुस्वा (11/1), घरेलू (11/43), नाजुक (13/42; 28/33) कमौलथि (16/32), भेटाइन (17/11), लिखलथि (20/66), जीजिविषा (21/43), डिगा देलकनि (21/45), अही (22/2, 49/30) जुबक (25/26), कयलथि (25/26), निकाललथि (25/27), इज्जत (25/23), खुऔबनि (25/35), लेलथि (26/13), पिलथि (26/18), किनलथि (26/19), बबाल (27/7), निकाललथि (27/1), अखंडया (?) (26/25), देखलथि (27/10), अयलथि (27/10), चलि देलथि (28/13), तेइस (28/26), ढलैत (?) अछि (32/33), छिपल (33/28), खुलेआम (30/14), जांगट करैत रहय (33/35), छापलथि (33/37), भेटितियनि (33/46-उचित-भेटितनि), अता-पता (33/46-उचित-थाह-पता) मजबूर (50/6), चाह आ ललक (50/14), पैठ (53/51) इत्यादि-इत्यादि ।

3. सम्पूर्ण आलेख मैथिली भाषामे रहते हुए भी हिन्दी की शब्दावली, मुहाबरा, वाक्य-विन्यास एवं उक्ति भंगिमाओं से आक्रान्त है ।

4. 54 पृष्ठों के विवेचनात्मक भागमे लेखक ने अपने मन्तव्य, मान्यता एवं निष्कर्ष के समर्थन में अंगरेजी एवं बंगला भाषा के मूल उद्धरणों के अतिरिक्त हिन्दी भाषा के 55 मूल उद्धरणों का उपयोग किया है । इससे भ्रम हो जाता है कि आलेख मैथिलीमे है या हिन्दी में।

5. राजकमल चौधरी के साहित्य-विवेचनामे उनकी मैथिली रचनाओं पर 6 पृष्ठ मात्र खर्च किये गये हैं, जबकि हिन्दी रचनाओं पर विचार हेतु 16 पृष्ठ दिये गये हैं । इस तरह विनिबन्ध-लेखक सूचित करना चाहता है कि राजकमल चौधरी मैथिली की अपेक्षा हिन्दी के विशिष्ट साहित्यकार थे । वास्तविकता भी यही है कि राजकमल चौधरी की मैथिली की अपेक्षा हिन्दीमे ही अधिक रचनायें हैं । अतः उचित यह होता कि 'राजकमल चौधरी' पर 'भारतीय साहित्यके निर्माता' शृंखला में विनिबन्ध-लेखन- प्रकाशन की उपयुक्तता पर साहित्य-अकादेमी की हिन्दी परामर्श-समिति द्वारा विचार कर निर्णय लिया जाता ।

6. प्रस्तुत विनिबन्ध में राजकमल चौधरी के जीवन और साहित्य के सम्बन्ध में लेखक का दृष्टिकोण सर्वथा आत्मनिष्ठ रहा है ।

7. जीवन-वृत्त में छोटी-छोटी नगण्य या महत्त्वहीन घटनाओं को अनावश्यक विस्तार दिया गया है ।

8. समस्त विनिबन्धमे राजकमल चौधरी को दन्तकथाओं का अद्‌भुत और अविश्वसनीय पात्र (Legend) बना दिया गया है ।

9. अनेक स्थलों पर तथ्यात्मक विसंगतियाँ हैं या तथ्यों को व्यवस्थित रूप में नहीं रखा गया है । कहीं पुनरुक्ति है (हमरा दुख अछि... पृ. 31 और 33), कहीं अनावश्यक उद्धरण दिये गये हैं (पृ. 4 एवं पृ. 29), कहीं अनावश्यक विस्तृत विवरण भूखी पीढ़ी... पृ. 43-45) दिये गये हैं ।

10. राजकमल चौधरी के जीवन में और तदनुरूप उनके साहित्य में सेक्स और शराब का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है । विनिबन्ध लेखक ने राजकमल के इन दोनों पक्षों को उजागर करते हुए उनके दुर्व्यसनों को महिमा मंडित करने का प्रयत्न किया है । धर्मपत्नी शशिकान्ता से इतर शोभना, शकुन, संतोष, सावित्री शर्मा, नंदा अलका इत्यादि ज्ञात-अज्ञात स्त्रियों से राजकमल के विवाहेतर सम्बन्ध को काफी महत्त्व...

11. विनिबन्ध में राजकमल चौधरी के दुर्व्यसनों और अमर्यादित, अनौचित्यपूर्ण, विवादास्पद, चारित्रिक स्खलन-सूचक प्रसंगों को प्रयत्न-पूर्वक संग्रह कर समाविष्ट किया गया है जिन्हें श्रेयस्कर नहीं कहा जा सकता है । ऐसे कुछ प्रसंगों एवं कथनों के निर्देश मात्र किये जाते हैं–

i. 'ओ (राजकमल के पिता) एहन कन्यासँ विवाह कयने छलाह जे अवस्थामे हुनकासँ बहुत छोट आ राजकमलक उमरक रहनि।

समवयस्कताक कारणेँ जमुना देवी (राजकमल की सौतेली माँ) आ राजकमलक पारस्परिक आकर्षणक संभावना हुनका (पिता को) निरंतर आशंकित कयने रहैत हेतनि ।' (पृ. 9/पं. 35-37)

ii. शकुन-सम्पर्क प्रसंग (पृ. 10)

'शकुन हुनकासँ (राजकमल से) बहुत पैघ छलि आ दुपहरमे नहाइत काल अपन कामुक अंग-चेष्टासँ हुनका (राजकमल को) लोभबैत छलि ।' (पृ. 10/पं. 14-15)

iii. शोभना झा- सम्पर्क प्रसंग (पृ. 10-11)

iv. 'अन्यान्य व्यसन,... जाहिमे महताब जूनियर आ महताब सीनियर नामक भागलपुरक तबायफक संगति...' (पृ. 11/पं. 26-28)

v. शिश्न-भंग प्रसंग (पृ. 22/पं. 18-24)

vi 'काज खतम कऽ कें जखन ओ बोनि मांगय अयलनि तऽ (राजकमल) कहलथिन– अखन नहि साँझ खन अबिहें ।' 'से किएक मालिक ?' 'अरे साँझ खन अयबें तऽ एक बेर चुम्मो तऽ देबें।' (पृ. 26/ पं. 7-10)

vii. नौटंकी-प्रसंग (पृ. 26-27)

'राजकमल ककरो सँ पुछलथिन- नौटंकीमे छौंड़ियो सब छैक ?' जवाब भेटलनि- चारि-पाँच टा' (पृ. 26/पं. 33-34)

viii. 'कहीं एक कमरा, एक ग्लास दारू और एक स्त्री हमारे लिए, सिर्फ हमारे लिए जरूर हो, (पृ. 28/पं. 22-23)

ix. नारी शल्य-रति-प्रसंग (पृ. 34/पं. 35-40)

x. नाड़ी पीजथि (पृ. 10/पं. 2), नौटंकीक लौंडा जकाँ (पृ 10/पं. 3-4)

xi. मदिरा पान-प्रसंग (पृ. 11/18-19)

xii. 'राजकमल जंगबहादुर सिंह नामक गुंडाक सोहबतमे सेहो रहलाह ।' (पृ. 11/पं. 45)

xiii. 'पाँचबेर गाँजाक चिल्म पिलथि' (पृ. 26/पं. 17)

xiv. सहरसामे तीन बोतल शराब किनलथि । सुपौल पहुँचैत-

xv. 'ओ खूब गाँजा धुकैत रहथि' (पृ. 26/पं. 23-24)

12. अन्ततः लेखक ने स्वयं निष्कर्ष के रूप में स्वीकार किया है कि

क) 'राजकमलक विचार आ मान्यता अन्तर्विरोधसँ भरल अछि ।' (पृ. 45/ पं. 39)

ख) 'शराब आ स्त्री राजकमलक जीवनक कमजोरी रहलनि।' (पृ. 50/पं. 11-12)

13. समस्त आलेख के अध्ययन से यही निष्कर्ष निकलता है कि इस पुस्तक से उच्च जीवनादर्श की प्रेरणा और उदात्त विचारों के संदेश मिलने की कोई संभावना नहीं है, अपितु यह पुस्तक मानव-मन को विकृति की ओर, मानव-जीवन को अपसंस्कृति की ओर तथा मानव-चरित्र को अधःपतन की ओर तेजी से धकेलने का काम करेगी। यह पुस्तक साहित्य-अकादेमी की गरिमा और परम्परा के अनुकूल सिद्ध नहीं हो सकेगी ।

अतः मेरी राय में मैथिली में लिखित विनिबन्ध 'राजकमल चौधरी' का आलेख साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशन योग्य नहीं है । अग्राह्य है ।

चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

❑ हम राजकमल चौधरीक विरोधी छी आ रहब । व्यक्ति राजकमलसँ कोनो विरोध नहि .. वैचारिक विरोध । आधुनिकताक नाम पर उच्छृंखलता .. साहित्यक नाम पर फूहड़ सेक्स हमरा सह्य नहि .. एहि प्रसंग एकटा आर बात भेल रहैक । हमर एक गोट कविता अछि .. तथाकथित प्रयोगवादीक प्रति । एहि कविताक रचना हम 'स्वरगन्धा'क प्रकाशनसँ पूर्व कएने रही । .. मुदा कविता प्रकाशित भेल 'स्वरगन्धा'क प्रकाशनक बाद । पछाति ओ 'आशादिशा' मे संकलित भेल रहय ।

हम स्पष्ट रूपेँ राजकमल आ राजकमल-फूलक लेखकक विरोधी छी । राजकमलक विचारधारा आ उच्छृंखलताक विरोधी छी । निम्नगामिनी आ अधोमुखी प्रवृत्तिक विरोधी छी ।

ई हमर व्यक्तिगत रुचि थिक.. संस्कार थिक.. वातावरण थिक.. हम राजकमल चौधरीक साहित्यकेँ निम्नगामिनी मानैत छिऐन्हि ।

❑ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (युगान्तर/151-152)

राजकमल चौधरी

❑ १९५९ मे, 'चित्रा'क पूरे-पूर दस वर्षक उपरान्त राजकमल चौधरीक कविता-संकलन 'स्वरगन्धा' प्रकाशित भेल । एहि कविता-संकलन पर दरभंगाक एक यशस्वी कवि (नाम लेब उचित नहि) अपन मत प्रकट कयलनि- 'स्वरगन्धा' ठीके गन्ध करैत अछि, अर्थात् गन्हाइत अछि ।

एहि गन्हाइत कविताक कवि हम छी; 'राजकमल चौधरी ! 'स्वरगन्धा' लिखाबाक युगमे हम कलकत्ता-महानगरीमे रहैत छलहुँ । बड़ अल्पवयस छलहुँ, तखने गाम (महिसी : जिला-सहरसा) सँ सम्पर्क टूटि गेल ।... गाम आ परिवारकेँ एकमात्र सूत्र छलीह अठारह-बीस वर्षक एकटा मैथिल स्त्री, हमर विवाहिता । तकरा बाद छलाह कलकत्ता ट्राम-कम्पनीमे, कल-कारखानामे, स्कूलमे, दोकानमे काज करैत हजारक हजार मैथिलीभाषी, मैथिल ! हमरा बुझना गेल जेना कलकत्तामे अपन स्वाधीन द्वीप जकाँ एकटा छोट-छीन 'मिथिला' अछि, जकर विराट् स्वरूप प्रति वर्ष विद्यापति-जयन्तीक पर्व-अवसर पर देखबाक संयोग भेटैत अछि ।

ट्राममे जा रहल छी । एकटा अपरिचित 'कण्डक्टर' कहैत अछि, अपन भाखामे कहैत अछि- "की यौ कविजी, कत' जा रहल छी ?" काली-घाटक जाग्रत काली-मन्दिरमे लाल रंगक रेशम चोड़ा पहिरने, एक कोनमे बैसल, मन्त्र-पाठ क रहल छथि, बड़का गामक तान्त्रिक, पण्डित कैलासनाथ झा । पुछैत छथि- "सभ कुशल अछि ?" पार्क-स्ट्रीटमे पुपरी-कमतौलक हाथ-रिक्सावला भेटैत अछि, बड़ा बजारमे भेटैत अछि जरैलक जहुरनी-चूड़ीवाली । आ, एहन सभ व्यक्तिसँ भेँट क', ई नहि लगैत अछि जे गाम छूटि गेल अछि, हम परदेशमे छी, अपरिचित छी, हेरा गेल छी । स्वरगन्धा एही शान्त, सौम्य, स्थिर आ आश्वस्त मानसिक वातावरणमे लिखल गेल छल ।

❑ राजकमल चौधरी

सुभाषचन्द्र यादव

वाचक का प्रतिवेदन' के बारे में

अपने मैथिली विनिबंध राजकमल चौधरी पर वाचक द्वारा भेजा गया प्रतिवेदन पढ़ गया हूँ । प्रतिवेदन दुर्भावनाओं से प्रेरित, तथ्यहीन और मनगढंत है । प्रतिवेदन वस्तुपरकता से रहित और अंतर्विरोधी है । प्रतिवेदन में निहित दृष्टि और लहजा वस्तुनिष्ठ एवं तटस्थ होने के बदले विद्वेष जनित उच्छ्वास तथा आवेश से युक्त है । अगर थोड़ी गंभीरता और सतर्कता के साथ प्रतिवेदन का पाठ किया जाए तो विनिबंध लेखक के प्रति वाचक का नकारात्मक रवैया, कटूक्ति, व्यंग्य और उपहास को समझने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए । इसके अनेक उदाहरण प्रतिवेदन में मौजूद हैं ।

मेरी गलतियाँ ढूँढकर वाचक को कितनी प्रसन्नता हुई है, कितना संतोष मिला है; एक छोटा-सा उदाहरण देकर इसे मैं बताना चाहता हूँ। प्रतिवेदन में वाचक ने अशुद्धियों की लम्बी सूची दी है । बची हुई अशुद्धियों के लिये उनका कलम एक इत्यादि से नहीं चलता; वे इत्यादि इत्यादि कहकर अपनी विजय और खुशी का इजहार करते हैं ।

भाषा अपने प्रयोक्ता का सच्चा प्रतिबिंब होती है । उसमें उसके सरल और गूढ़, प्रकट तथा अप्रकट सभी प्रकार के मनोभाव, आशय, संकेत और रहस्य छिपे होते हैं । भाषा सभी प्रकार की संवेदनाओं और अनुभूतियों का ग्राफ तैयार करती रहती है । इत्यादि इत्यादि में वाचक का दूषित मनोभाव उनके अनजाने में प्रतिबिंबित हो गया है ।

वाचक ने अपने प्रतिवेदन नम्बर एक में लिखा है– 'कतिपय अंगरेजी कविता को छोड़कर शेष प्रकाशित ही है । वाचक का यह कथन सत्य नहीं है । राजकमल की मैथिली कहानी 'गाम मे राति, राति मे गाम' जो परिशिष्ट में सम्मिलित की गई है, अभी तक कहीं किसी पत्रिका में नहीं छपी है । मेरे ही प्रयास से इस कहानी का हिन्दी अनुवाद समकालीन भारतीय साहित्य के 62 वें अंक में छपा था । दूसरी बात यह कि प्रकाशित हो जाने मात्र से कोई रचना संकलन के अयोग्य नहीं हो जाती । परिशिष्ट में सम्मिलित 'साँझक गाछ' और 'महाबन' सिर्फ ये दो रचनाएँ ऐसी हैं जो अन्यत्र भी संकलित हैं । अन्य रचनाएँ या तो अप्रकाशित हैं या असंकलित । परिशिष्ट में रचनाओं को इसलिए शामिल किया गया है ताकि पाठकों को राजकमल के विविध साहित्य-रूपों का स्वाद मिल सके और वे स्थायी रूप से संकलित हो जाएँ । क्या राजकमल की रचनाओं का कलेवर वृद्धि के अतिरिक्त कोई मूल्य नहीं है ?

प्रतिवेदन के दूसरे नम्बर पर गलतियों की लंबी सूची है । वाचक ने जिस पहली गलती का उल्लेख किया है, वह है 'अखनो' । अब इसकी सही या गलत होने का निर्णय कर लेते हैं । सबसे पहले तो यह तय कर लेना चाहिए कि यह मैथिली का शब्द है या विदेशी । मैथिली से परिचित कोई भी व्यक्ति एक क्षण के लिये भी यह संदेह नहीं कर सकता कि यह शब्द मैथिली का नहीं है । यह शत-प्रतिशत मैथिली का शब्द है, जिसका अर्थ है– अभी भी । शायद वाचक के मन में इसका शुद्ध रूप 'अखनधरि' रहा होगा, जिसका अर्थ होता है– अभी तक । अब दोनों को एक साथ रखकर देखिए– अखनो = अभी भी, अखनधरि = अभी तक

दोनों में कोई फर्क नजर आया ? क्या 'अभी भी' और 'अभी तक' की व्यंजनाओं में कोई अंतर नहीं है ? जब हम 'अखनो' कहते हैं तो किसी वस्तु की वर्तमानता पर बल देते हैं और जब 'अखनधरि' कहते हैं तो हमारा आशय समय की सीमा-रेखा से होता है । 'अखनो में बलाघात है, जबकि 'अखनधरि' बलाघातरहित और भिन्न अर्थ का सूचक है । अब मेरी तो समझ में नहीं आ रहा कि यह शब्द गलत कैसे हो गया । हाँ, एक और बात हो सकती है । हो सकता है वाचक को 'अखनो' लिखने के ढंग पर एतराज हो । कुछ लोग इसे 'एखनो' लिखते हैं अर्थात् 'अ' की जगह 'ए' का इस्तेमाल करते हैं । 'अ' लिखनेवालों की तादाद बहुत है और इसका उच्चारण तो हर कोई एक जैसा करता है, जिसमें 'ए' की ध्वनि नहीं होती; हमेशा 'अ' की ध्वनि के साथ इसका उच्चारण शुरू होता है । लिपि का उद्देश्य सम्बन्धित भाषा की ध्वनियों को ठीक-ठीक और हूबहू रूपायित करना होता है । उच्चरित और लिखित रूप की समानता हरेक भाषा और लिपि के लिए आदर्श होती है । मैथिली में किसी समय इस बात के लिए आंदोलन भी हुआ था कि मैथिली जिस रूप में बोली जाती है, उसी रूप में लिखी जाए । यात्री और राजकमल चौधरी जैसे अनेक समर्थ रचनाकारों ने मैथिली के उच्चारित रूप को ही लिपिबिद्ध किया। अब मेरी गलती यही हो सकती है कि मैंने यात्री और राजकमल की वैज्ञानिक परम्परा का निर्वाह किया ।

'अखनो' के बाद अशुद्धियों की बानगी के रूप में उन्होंने जो दूसरा शब्द दिया है, वह है 'बचपन' । बचपन सुनते ही यह बात दिमाग में आती है कि अरे, यह तो हिन्दी का शब्द है । हाँ, सही है । यह हिन्दी का ही शब्द है । मैथिली में यह शब्द उसी तरह हिन्दी से आया है, जिस तरह अंगरेजी से इंजन । बचपन और इंजन जिस तरह हिन्दी के लिए अपरिहार्य हैं, उसी तरह मैथिली के लिए भी । मैथिली में हर कोई बचपन बोलता और लिखता है । वाचक के हिसाब से मुझे शायद 'नेनपन' का प्रयोग करना चाहिए, जो अप्रचलित हो चला है । 'नेनपन' 'नेना' शब्द से बना है । 'नेना' का अर्थ होता है बच्चा । अब हर कोई बच्चा बोलता है, नेना का प्रयोग बहुत विरल है । मैथिली में जब बच्चा चलन में आ गया तो बचपन को तो आना ही था । मैथिली में बचपन के आने का वैज्ञानिक कारण भी है । 'नेनपन' द्विअर्थी शब्द है । नेनपन का अर्थ बचपन भी है और लड़कपन भी । नेनपन के द्विअर्थी स्वरूप की छाया से बचने के लिए ही मैथिली में बचपन आ गया । बचपन कहने से किसी प्रकार की न्यूनता का बोध नहीं होता । जन्म से लेकर बारह वर्ष की उम्र तक की सामान्य अवस्था को बचपन कहा जाता है; जबकि मैथिली में 'नेनपन' का इस्तेमाल अब न्यूनता अथवा लड़कपन के अर्थ में रूढ़ हो गया है । बचपन को मैथिली से

निकालकर अशुद्धियों के खाते में डाल देना किस बुद्धिमत्ता का परिचायक है, यह मेरी समझ में नहीं आता।

वाचक द्वारा निर्दिष्ट इस तरह की अशुद्धियों की सूची लम्बी है। अगर मैं सभी अशुद्धियों का विवेचन करने लगूं तो एक पुस्तिका ही तैयार हो जाएगी। और, पुस्तिका तैयार करना इस पत्र का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। अशुद्धता संबंधी वाचक की आपत्तियों के खोखलेपन को जाहिर करने के लिए इतना ही काफी है।

प्रतिवेदन के तीसरे नम्बर पर उन्होंने लिखा है– 'सम्पूर्ण आलेख मैथिली भाषा में रहते हुए भी हिन्दी की शब्दावली, मुहाबरा, वाक्य-विन्यास एवं उक्ति भंगिमाओं से आक्रांत है।' गौरतलब बात यह है कि इस आरोप को पुष्ट और सिद्ध करने के लिए वाचक ने कोई उदाहरण नहीं दिया है। वाचक को हिन्दी की प्रकृति का ज्ञान कितना है, मैं यह तो नहीं बता सकता; हाँ उनका व्याकरण निस्संदेह बहुत कमजोर है। ऊपर के उद्धरण में वाचक द्वारा प्रयुक्त 'मुहाबरा' शब्द पर ध्यान दीजिए। वाचक ने ब की अगह ब लिखा है। प्रतिवेदन की आरंभिक पंक्तियों में ही वाचक ने अपना हिन्दी ज्ञान प्रदर्शित कर दिया है। 'वैयक्ति पत्र', 'कतिपय अंगरेजी कविता', 'चालिस'– ये वाचक द्वारा प्रयुक्त शब्द- समूह हैं।

इनमें से पहली गलती वाचक की असावधानता के कारण हुई है, दूसरी गलती वचन सम्बन्धी अज्ञानता के कारण और तीसरी गलती हिज्जे न जानने के कारण। यहाँ यह स्पष्ट कर देना प्रासंगिक होगा कि मैथिली मेरी मातृभाषा है और पिछले तीस वर्षों से मैं उसमें निरंतर लिख रहा हूँ।

लगता है हिन्दी से आक्रांत होने का संदेह वाचक को इसलिए हुआ, क्योंकि पांडुलिपि में अधिकांश उद्धरण हिन्दी के हैं। प्रतिवेदन के तीसरे नम्बर पर वे कहते हैं कि आलेख मैथिली में रहते हुए भी हिन्दी से आक्रांत है, मगर अगले ही क्षण प्रतिवेदन के चौथे नम्बर पर उन्हें यह भ्रम होने लगता है कि आलेख मैथिली में है या हिन्दी में। राजकमल की हिन्दी रचनाओं पर सोलह पृष्ठ खर्च करना भी उन्हें खलने लगता है और प्रतिवेदन के पाँचवे नम्बर पर वे यह सुझाव दे डालते हैं कि साहित्य अकादेमी को राजकमल पर विनिबंध हिन्दी में लिखवाना चाहिए।

उद्धरण देने से पांडुलिपि की भाषा उद्धरण की भाषा में नहीं बदल जाती। अगर कोई बंगला का उद्धरण देखकर पांडुलिपि की भाषा को बंगला मान ले, तो समझ लेना चाहिए कि उसकी मति मारी गई। पांडुलिपि की भाषा को कभी मैथिली तो कभी हिन्दी कहना वाचक की अस्थिर बुद्धि का परिचायक है या फिर यह समझ लेना चाहिए कि उनके विवेक की निर्णय-क्षमता दुर्बल और मंद पड़ गई है। ऐसा अगर व्यंग्य में कहा गया है तो यह व्यंग्य सिर्फ दुर्भावनाओं का ही नतीजा हो सकता है। राजकमल की हिन्दी रचनाओं पर सोलह पृष्ठ खर्च कर डालने पर वाचक को एतराज है। शायद उनकी मंशा यह रही हो कि विनिबंध अगर मैथिली में है तो राजकमल की मैथिली रचनाओं का ही विशद विवेचन हो; उनकी हिन्दी रचनाओं पर चलताऊ ढंग से विचार हो और किसी भी स्थिति में हिन्दी का कद मैथिली से बड़ा न होने पाए, चाहे राजकमल ने हिन्दी में बहुत ज्यादा क्यों न लिखा हो। विनिबंध की भाषा को लेखकीय अवदान का पैमाना बना देना या विनिबंध की भाषा को अनुचित महत्व देने के लिए लेखकीय कद में जोड़-घटाव करना कहाँ की बुद्धिमानी है?

प्रतिवेदन के छठे नम्बर पर वाचक ने लिखा है कि विनिबंध लेखक का दृष्टिकोण सर्वथा आत्मनिष्ठ रहा है। प्रतिवेदन के इस छठे नम्बर का मिलान अगर आप चौथे नम्बर से करें तो दोनों कथनों का अंतर्विरोध स्वतः स्पष्ट हो जाएगा। चौथे नम्बर पर उन्होंने लिखा है कि लेखक ने अपने मंतव्य, मान्यता और निष्कर्ष के समर्थन में अंगरेजी, बंगला और हिन्दी के विपुल उद्धरण दिए हैं। जिस दृष्टिकोण के समर्थन में इतनी भाषाओं के इतने उद्धरण दिए गए हों, वह दृष्टिकोण आत्मनिष्ठ कैसे हो सकता है? क्या तथ्यपरक होना आत्मनिष्ठता और तथ्य-विमुख होना वस्तुनिष्ठता है?

प्रतिवेदन के सातवें नम्बर पर वाचक ने लिखा है कि छोटी छोटी, नगण्य या महत्वहीन घटनाओं को अनावश्यक विस्तार दिया गया है। वाचक ने एक भी महत्वहीन घटना का उदाहरण नहीं दिया है। छोटी या बड़ी कोई घटना अपने आप में महत्वपूर्ण या महत्वहीन नहीं होती। घटना को देखने वाली दृष्टि ही उसे महत्वपूर्ण या महत्वहीन बनाती है। अब मजबूरी यही है कि घटनाओं को देखने की मेरी अपनी दृष्टि है, वाचक की नहीं।

आठवें नम्बर पर वाचक ने लिखा है कि लेखक ने राजकमल चौधरी को दंतकथाओं का अद्भुत और अविश्वसनीय पात्र बना दिया है। वाचक ने यह नहीं लिखा है कि ऐसा किस तरह बना दिया गया है। पांडुलिपि में एक उपशीर्षक है– दंतकथाक नायक। इस उपशीर्षक का हवाला देकर वाचक लिख सकते थे कि देखिए, लेखक ने विनिबंध के एक अध्याय का नाम ही रख दिया है– दंतकथा का नायक। राजकमल को दंतकथा का नायक बना देने का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है! लेकिन वाचक इस अध्याय का हवाला देने का नैतिक साहस शायद इसलिए नहीं जुटा सके, क्योंकि इस अध्याय में राजकमल को दंतकथाओं, अनुश्रुतियों एवं अतिरंजनाओं के वृत्त से निकालने की कोशिश की गई है ताकि उनके जीवन की निश्रांत समझ हासिल हो सके। पूरे विनिबंध में लेखक का प्रयत्न राजकमल के जीवन की वास्तविकता और सच्चाई को उजागर करने का रहा है उन्हें दंतकथा का नायक बनाने का नहीं।

प्रतिवेदन के नवें नम्बर पर वाचक ने तथ्यात्मक विसंगति, अव्यवस्था, पुनरुक्ति, अनावश्यक उद्धरण और विस्तृत विवरण का उल्लेख किया है। वाचक ने तथ्यात्मक विसंगति और अव्यवस्था का कोई उदाहरण नहीं दिया है, जो अपेक्षाकृत अधिक गंभीर आरोप हैं। अगर तथ्यात्मक विसंगति और अव्यवस्था होती तो राजकमल का जीवन वृत्त अटक कर उलझ जाता। वह इतना सुसंगत और व्यवस्थित है कि वाचक को अद्भुत और अविश्वसनीय लगने लगा है। पुनरुक्ति का उन्होंने एक उदाहरण दिया है। लगता है उदाहरण देते समय वाचक मानसिक रूप से निश्चेष्ट थे। यही कारण है कि उद्धरण को उन्होंने उक्ति मान लिया है। पुनरुक्ति के रूप में उन्होंने जिस अंश का उदाहरण दिया है, वह मेरी उक्ति नहीं; बल्कि राजकमल की कविता का आंशिक उद्धरण है। दोनों स्थलों पर इस उद्धरण के दो कार्य हैं। पहले स्थल पर उसका कार्य पाठकों को राजकमल की कविताओं के मिजाज और स्वाद से परिचित कराना है, तो दूसरे स्थल पर विवेचन के एक भिन्न पहलू को रेखांकित करने से संबंधित है। अनावश्यक उद्धरण और विस्तृत विवरण संबंधी जो आरोप वाचक ने लगाए हैं, वे भूखी पीढ़ी से संबद्ध हैं। हिन्दी में राजकमल को भूखी पीढ़ी से जोड़ा जाता रहा है। उन्हें भूखी पीढ़ी का प्रवक्ता और नकलची कहा

[illegible] है | [illegible]

जांच-पड़ताल की है; जो किसी तरह अनावश्यक और अप्रासंगिक नहीं कही जा सकतीं।

प्रतिवेदन के दसवें नम्बर पर वाचक ने राजकमल के दुर्व्यसनों को महिमामंडित करने का आरोप लगाया है। राजकमल शराब पीते थे और चार स्त्रियों के साथ उनके ऐसे महत्त्वपूर्ण संबंध थे, जिनके कारण राजकमल का जीवन गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। इनके साक्ष्य भी हैं। मैंने ऐसे परिणामकारी ही प्रसंगों को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की है, न उन्हें तूल दिया है। वे जैसे थे और उनकी भूमिका जैसी थी, मैंने उन्हें उसी रूप में रखा है। चटखारा लेने या उन्हें रंगीन बनाने की मैंने कोई कोशिश नहीं की है। इन प्रसंगों से बचकर निकल जाने का मतलब होता, राजकमल के जीवन की झूठी तस्वीर पेश करना और सच्चाई पर धोखधड़ी कर पर्दा डालना। मैंने ऐसा नहीं किया है और सच्चाई को सामने लाने का अर्थ उसे महिमामंडित करना नहीं होता।

प्रतिवेदन के ग्यारहवें नम्बर पर वाचक ने पांडुलिपि को जहां तहाँ से खोजकर उसे अतिरंजित, बीभत्स और विकृत सिद्ध करने की कोशिश की है। अगर किसी अग्नि सुंदरी के हाथ, पाँव, बाल और दांत काटकर दिखाए जाएँ, तो सुंदरता के बदले वे बीभत्सता का बोध ही कराएंगे। फूल डाल से तोड़ लिए जाने पर अपनी सहज प्राणवत्ता और दिव्यता खो देता है।

प्रतिवेदन के बारहवें नम्बर पर वाचक ने राजकमल के घरबार विरोधी विचार और शराब तथा स्त्री संबंधी उनकी कमजोरियों के बारे में एक-एक वाक्य वाली मेरी दो टिप्पणियों को सिर्फ उद्धृत कर दिया है। मेरी टिप्पणियों को आधार बनाकर वे कौन सी बात सिद्ध करना चाहते हैं, इसका खुलासा वे नहीं करते। हाँ, अगर बारहवें को तेरहवें नम्बर से जोड़कर देखा जाए तो बात कुछ बन सकती है। प्रतिवेदन के तेरहवें नम्बर पर जो प्रतिवेदन का अंतिम नम्बर भी है, वाचक फैसला सुनाते हैं कि पांडुलिपि का पाठ लोगों को अधःपतन की ओर ले जाएगा। औरत और शराब को तो पतनशीलता के साथ जोड़ा ही जा सकता है। भारतीय समाज की मूल्य-व्यवस्था में तो इसकी गुंजाइश है ही। अब औरत और शराब में गर्क रहें तो कोई बात नहीं, मगर दूसरों को यह बताना कि आप औरत और शराब में गर्क हैं, मर्यादाहीनता और पतनशीलता की निशानी बन जाता है। वाचक के अनुसार मुझे शायद राजकमल को राजकमल की तरह नहीं, मर्यादा पुरुषोत्तम राम के रूप में चित्रित करना चाहिए था, जिससे राजकमल उच्च जीवनादर्श के अक्षय स्रोत बन जाते। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया है, राजकमल को राजकमल ही रहने दिया है— अच्छाइयों और बुराइयों का समुच्चय। बुराइयों को छिपाकर सिर्फ अच्छाइयों को सामने लाना मेरी सत्यनिष्ठता को गँवारा नहीं रहा है। बुराइयों को मैंने बुराइयों के रूप में ही चित्रित किया है; राजकमल के जीवन पर पड़ने वाले उनके दुष्प्रभावों को दिखाया है; राजकमल के व्यक्तित्व और चरित्र को उजागर किया है। अब शराब और स्त्री का नाम सुनते ही अगर कोई आँख-कान बंद करके राम-राम कह उठे, तो ऐसी सज्जनशीलता के लिए मैं क्या कर सकता हूँ। वाचक के प्रतिवेदन के बारे में मुझे इतना ही कहना है।

सुरेशचन्द्र यादव
20.04.1997

আদিকথা

दंतकथाक नायक

राजकमल चौधरी अत्यन्त विवादास्पद व्यक्ति छलाह । ई विवाद हुनक जीवन आ साहित्य दुनूकेँ लऽकऽ छल । हुनका सन विवादास्पद लेखक मैथिली आ हिन्दीमे दोसर भरिसके भेटत । हुनका बारेमे अनेक तरहक खिस्सा हुनक जीवन कालहिमे पसरि गेल छल । ओ जीविते दंतकथाक नायक बनि गेल छलाह । अपना मादे पसरैत सब प्रकारक झूठ-साँच खिस्साक ने तँ ओ कहियो खंडन कयलनि, ने ओकर मंडन कयलनि, खिस्साकेँ पसरय देलनि । दंतकथाक सृजनमे हुनक अपनो हाथ छलनि । अधिकांश दंतकथाक निर्माण हुनक भिन्न जीवन शैली आ निर्भीकताक कारणेँ भेल । अफवाह आ अनुश्रुति द्वारा होइत लोकक मानसिक उद्वेलनमे हुनका मजा आबनि। ओ लोककेँ उत्तेजित आ आन्दोलित कऽ कए राखय चाहैत रहथि । एहि कारणेँ व्यावहारिक जीवनमे हुनका कतेको बेर कैक तरहक कठिनाइ भेलनि, मुदा एहिसँ ओ ने तँ कहियो विचलित भेलाह आ ने कहियो एकर परवाहि कयलनि ।

एहि तरहक झूठ-साँच खिस्साक कारणेँ लोकक लेल ओ रहस्यमय आ विस्मयकारी व्यक्ति बनि गेल छलाह । जीवनक गोपनीय आ वर्जित विषयकेँ उठयबाक कारणेँ हुनक साहित्यो कम चौंकाबय वला नहि छल । एकर फल ई भेल जे हुनक जीवन आ साहित्यकेँ लऽकऽ लोक दू धुवमे बाँटि गेल । किछु लोक हुनक वैयक्तिक आ साहित्यक चरित्रकेँ अनिष्टकारी मानैत हुनकासँ डरय आ घृणा करय लागल, तँ किछु लोक हुनक व्यक्तित्व आ साहित्यकेँ युगान्तरकारी बुझि हुनका मसीहा मानय लागल । जे हुनकासँ घृणा करैत रहय, ओ सभ हुनक व्यक्तिगत जीवनकेँ कलंकित आ मलिन करबाक चेष्टा कयलक आ हुनक साहित्यकेँ अश्लील एवं घटिया साबित करबाक प्रयास कयलक। जे सभ हुनका मसीहा मानय लागल छल, से सभ हुनक चारित्रिक भिन्नताकेँ अतिरंजित रूप दैत हुनका असाधारण एवं स्पृहणीय बनौलक आ हुनक साहित्यकेँ उछालि कऽ अनेक प्रकारक भ्रांति पसारलक । एहि दुनू तरहक लोकक रुचि आ दृष्टिक कुहेस राजकमलक जीवन आ साहित्यकेँ तेना कऽ तोपि देलक जे ओकर भीतर नुकायल वास्तविकताक निर्भांत समझदारी एक युग धरि कठिन भऽ गेल ।

हुनका बारेमे कखनो ई कहल गेल जे ओ मसूरीमे जनमलाह तँ कखनो हुनका पूर्वी बंगालक विस्थापित जमीन्दारक उत्तराधिकारी बूझल गेल। कखनो ई छपल जे ओ 1931मे जनमलाह तँ कखनो एहि सँ चारि साल पहिने । मनोरंजक गप्प ई छल जे ई सभ हुनक जीवन कालहिमे भऽ रहल छल, जखन ओ लेखनमे अत्यधिक सक्रिय छलाह । एहि प्रसंगमे दू टा घटना अत्यंत दिलचस्प अछि आ झूठ साञ्चक खेलक रहस्योद्घाटन करैत अछि ।

पहिल घटनाक उल्लेख कीर्त्तिनारायण मिश्र मैथिलीक साप्ताहिक पत्रिका मिथिला मिहिरक अगस्त 1988 वला अंकमे प्रकाशित अपन संस्मरण मे कयने छथि । ओ जे किछु लिखने छथि तकर सार-संक्षेप ई अछि जे एकबेर कलकत्तामे विद्यापति पर्वक अवसर पर काव्य गोष्ठी आयोजित कयल गेल । आयोजकगण राजकमल चौधरीकेँ बजयबाक पक्षमे नहि छलाह, किएक तँ ओ पाइ मँगैत छलथिन । जखन कीर्त्तिनारायण मिश्र ई कहलथिन जे जँ राजकमलकेँ नहि बजाओल जायत तँ हमहूँ नहि जायब, तखन आयोजकगण राजकमलकेँ आमंत्रित कयलनि । कीर्त्तिनारायण मिश्रक आग्रहकेँ देखैत राजकमल काव्य गोष्ठीमे आबि तँ गेलाह, मुदा गंजी पहीरि कए अ कनहा पर तौनी रखने । ओ ओत्तहि बस टिकट पर चारि पांतीक कविता लिखि कए सुना देलथिन । लोक बुझियो नहि सकल जे ओ कविता पढ़लनि कि कोनो आप बात बजलथिन । फेर ओ कीर्त्तिनारायणकेँ संग कए राजेन्द्र छात्रावास चल गेलाह, जतय ओहि समय डा० सूर्यदेव शास्त्री रहैत छलाह । हुनक बिछौन खाली छलनि । ओ कतहु निकलि गेल छलाह । टेबुल पर लोटामे पानि राखल छल । कीर्त्तिनारायण सुझाव देलथिन जे सूचना लेल एकटा पुरजी छोड़ि देल जाए । राजकमल कहलथिन– लोटाक पानि बिछौने पर ढारि दहुन । बिछौन तीतल देखि कए शास्त्री अपने बूझि जेताह । ओहि दिन दुपहरसँ रातिक नओ बजे धरि राजकमल आ कीर्त्तिनारायण संगहि छलाह । ओहि दिन ओ सभ ने तँ शराब पीने रहथि आ ने कोनो दोसर कारणेँ असामान्य छलाह । मुदा अगिला दिन ई सुनल गेल जे जँ राजकमल पीबि कए नहि अबितथि तँ समारोह आओर भव्य होइत । ओ ततेक पीने छलाह जे मंच पर बाजियो नहि भेलनि । श्रोताकेँ बसक टिकट देखा कए बैसि गेलाह । ओ ततेक अनसमहार रहथि जे कीर्त्तिनारायण पिताक डरसँ हुनका अपना ओतय नहि लऽ गेलाह । राजेन्द्र छात्रावास जा कए सूर्यदेव शास्त्रीक बिछौन पर रद्द कयलनि आ समूचा कोठलीकेँ घिनाय देलनि । तेसर दिन जखन कीर्त्तिनारायण आ राजकमलकेँ भेँट भेलनि तँ कीर्त्तिनारायण सभटा कथा सुनौलथिन । राजकमल हँसय लगलाह । कहलथिन· बैह तँ हम चाहैत रही । एहि बुद्धिहीन सभकेँ गप्प करबाक लेल किछु मसाला चाही । हम ई मसाला दैत रहैत छी । की ई हमर कम मैथिली सेवा थिक !

दोसर घटनाक उल्लेख अगस्त 1967क युग्मामे अजित कुमार कयलनि अछि । ओ निराला आ भुवनेश्वरक नियति सँ राजकमलक नियतिक तुलना कयलनि अछि । एकबेर राजकमल अपन दोस-महिमकेँ ई लिखलनि जे हुनक घरीक देहान्त भऽ गेल छनि आ नहि नहि टा बच्चा फकसियारी कटैत अछि । मित्र सभक सांत्वना आ ढाढ़स सँ भरल पत्र पहुँचलनि तँ राजकमल पत्रक

मार्वजनिक उपहास कथलनि। अजित कुमार लिखैत छथि– 'राजकमल लेल ई धरिसक एकटा गंभीर मजाक छल अथवा जँ हुनक दोस महिमक गप्पपर विश्वास कयल जाय तँ ई प्रकाशक लोकनि सँ पाइ तसीलबाक एकटा बढ़िया उपाय छल; मुदा हमरा लगैत अछि जे राजकमलक असामयिक मृत्यु हुनक एहने हँसी मजाकक कारणेँ भेल। अपना आ अपन साहित्यक विषयमे लोकक मानसमे एकटा अत्यन्त चौंकाबय बला चित्र उपस्थित करबाक लेल ओ अनेक प्रकारक करतब करैत रहैत छलाह। हुनक एकटा योजना इहो छलनि जे अपन मृत्युक असत्य कथा पसारि दी आ ई देखि कऽ आनन्द ली जे हिन्दी बला सभ हमरा खातिर कोना कनैत अछि। एहि सभक फल वैह होइत जे भेल। ओ मरि गेलाह। जँ नहि मरितथि तँ बताह भऽ जाइतथि।

ई दुनू घटना सिद्ध करैत अछि जे लोकक संग-संग राजकमलो अपना विषयमे असत्य कथा पसारलनि। लोक जे केलक, से केलक, राजकमल द्वारा एहन करब अनर्थकारी बनि गेल। हुनक आत्मवक्तव्यकेँ संदेह आ अविश्वासक दृष्टिएँ देखल जाय लागल। तथापि हुनक सभ वक्तव्य असत्य आ झूठ अछि, एहन कहब ठीक नहि होयत। किछु वक्तव्य अवश्य सत्य होयत, मुदा ओकर सत्यताक दावा नहि कयल जा सकैत अछि। किछु वक्तव्य सत्य होइतो अतिरंजित भऽ सकैत अछि। हुनक जीवन-परिस्थिति आ घटनाक बीच तर्क संगत पूर्वापर संबंध स्थापित करबाक क्रममे किछु सीमा धरि मिथ्या एवं अति रंजनाकेँ चीन्हल जा सकैत अछि। मुदा ई चीन्हब तर्क आ अनुमान पर आधारित होयत आ तर्क एवं अनुमान पर आधारित व्याख्या घटनाक प्रामाणिकता सिद्ध नहि कऽ सकैत अछि। ओकर एकटा संभव आ मान्य व्याख्या मात्र भऽ सकैत अछि। राजकमलक जीवन संबंधी अनेक घटना या तऽ आन-आन स्रोत सँ पुष्ट होइत अछि वा सर्वमान्य भऽ चुकल अछि। जतय कतहु एहन नहि अछि, ततय राजकमलेकेँ प्रमाण मानि लेल गेल अछि। एकर बिना राजकमलक जीवन-विकासकेँ रूपायित करब असंभव छल।

भूकंप, बंगाली संन्यासिन आ रासलीलाक चित्र संबंधी तीनटा घटना एहन अछि जे प्रामाणिकताक दृष्टिएँ अत्यंत विवादास्पद मानल जाइत अछि। राजकमलक आत्मवक्तव्य पर आधारित होइतो अनेक कारणेँ एहि तीनू पर गंभीर आपत्ति कयल जाइत रहल अछि। व्यक्तित्व निर्माणक दृष्टिएँ अत्यंत महत्वपूर्ण आ प्रभावशाली भऽ सकबाक कारणेँ एकर उल्लेख अनुपेक्षणीय अछि। मुदा एकर सत्यता अथवा मिथ्यात्वक कोनो दावा नहि कयल जा सकैत अछि। घटना पर कयल गेल टिप्पणी हमर अपन विवेकक फल थिक, जकरा मात्र संभावना आ प्रस्ताव रूपमे लेबाक चाही, कोनो आग्रह अथवा दुराग्रहरूपमे नहि।

एहि तीनूमे पहिल घटना तखन घटित भेल कहल गेल अछि, जखन राजकमल छह बरखक छलाह। 1934मे बिहारमे विनाशकारी भूकंप आयल। राजकमलक कोमल मन पर एकर गंभीर प्रभाव पड़ल आ ई घटना हुनक जीवनक अविस्मरणीय घटना बनि गेल। हुनक माय सोमवारी व्रत कऽ रहल छलीह। एहि व्रतमे स्त्रीगण हाथमे पान सुपारी लऽकऽ शोण देवताक एक सय आठ बेर प्रदक्षिणा करैत अछि। किछुए प्रदक्षिणा बाकी छल कि धरती काँपय लागल। आंगनक एक दिसका देबाल ढहि गेल। हुनक माय क्षण भरि बिलमि अपन पुत्र आ पति दिस तकलनि आ परिक्रमा करय लगलीह। परिक्रमा पूरा कयलाक बाद जखन ओ अल्पनाक घेरासँ बाहर होइत छलीह कि धरती कड़कड़ायल। गोंगिआइत-कड़कराइत धरती दहिना बामा डोलऽ लागल। आंगनमे दरारि फाटि गेल आ पानिक फमारा फूटय लागल। राजकमलक पिता घिचिआइत पत्नी दिस दौड़लाह आ माय डरसँ अपन पतिकेँ भरि पाँज कऽ पकड़ि लेलथिन। अपन-अपन अस्तित्वरक्षाक चिंतामे हुनका दुनूकेँ नेना फूल बाबूक सोह नहि रहलनि। लगेमे ठाढ़ फूल बाबू मूक भेल एहि दृश्यकेँ देखैत रहलाह। जीवनक क्षणभंगुरता आ लोकक स्वार्थसँ एहन उत्कट साक्षात्कार हुनका पहिल बेर भऽ रहल छलनि। एहि घटनाक बाद ओ अपनाकेँ बहुत एकाकी आ निस्संग अनुभव करऽ लगलाह। ई घटना प्रामाणिक नहि मानल जाइत अछि; कारण जे छह बरखक बालक द्वारा प्राकृतिक विपदाक एहन उत्कट बोध, निरीक्षण आ विश्लेषण स्वाभाविक नहि जानि पड़ैत अछि। भयंकर विनाशकारी भूकंप सर्वविदित अछि। विपत्तिक एहन बिन्दु पर माता-पिता आ राजकमलक व्यवहार अवसरानुकूल आ उपयुक्त कहल जा सकैत अछि। तखन ई बात अवश्य जे एहि घटनाकेँ राजकमल अपन जीवनक उत्तरार्द्धमे लिपिबद्ध कयलनि आ ओहि समयक हुनक परिपक्व दृष्टि आ सोच एहि घटनाक भाष्यमे व्यंजित भेल, मुदा ताहिसँ घटनाकेँ असत्य नहि कहल जा सकैत अछि। एहि घटनाकेँ प्रौढ़ावस्थामे कयल गेल अनुचिंतन एवं अनुस्मरण कहल जा सकैत अछि। ई घटना सुनियोजित आ सुविचारित अछि कि नहि, ताहि संबंधमे किछु कहल नहि जा सकैत अछि।

भूकम्पक थोड़बे दिनक बाद एकटा और अविस्मरणीय घटना घटल। एकटा बंगाली संन्यासिन हुनक घर अयलीह। एक-दू साल पहिने कोनो तीर्थमे राजकमलक माँसँ हुनक भेँट भेल छलनि। ओ राजकमलक माँकेँ रुद्राक्षक माला आ दक्षिणेश्वरी कालीक एकटा छोट सन चित्र देलथिन। फेर राजकमलसँ गप्प करऽ लगलीह। राजकमलक दुनू हाथ पकड़ने ओ हँसैत पुछलथिन– 'हमरा संग चलब ?' राजकमलक माँ भयभीत भऽ गेलीह आ आशंकित होइत पुछलथिन– 'कतय लऽ जेबनि हिनका ? लऽ जेबाक हो तऽ हमरो लऽ चलू।'

तकर बाद संन्यासिन राजकमलक पिताक संग तांत्रिक साधनाक बारे मे गप्प करैत रहलीह। जखन ओ जाय लगलीह तऽ राजकमल हुनक पछोड़ भऽ लेलथिन। माँ राजकमलकेँ पकड़ि लेलथिन। हुनक पाँजसँ छूटक लेल राजकमल हाथ-पएर पटकय लगलाह। संन्यासिन पलटिकऽ राजकमल दिस तकलथिन आ मुस्काइत बरंडा टपि सड़क पर निकलि गेलीह। पिता राजकमलकेँ बुझबैत कहलथिन– 'ओ तँ आब दूर चल गेलीह। आब कतऽ भेटतीह ? कहियो फेर अओतीह तऽ चल जायब।'

मुदा राजकमल जिद पकड़ि लेलथिन। माय हुनका कोठलीमे बन्न कऽ देलथिन। बन्न कोठलीमे कनैत-कनैत ओ सूति गेलाह। राति दस बजे जखन भोजन बनि गेल तँ कोठली खुजल। थारी पर बैसल पिता खाय लेल हुनका बजौलथिन। मुदा ओ चुपचाप बाहर निकलि गेलाह– पिता हाक देलथिन। माय बजलीह– 'जाय

दिथनु । जेताह कतय ? डरसँ घूरि अओताह ।'

मुदा मायक एही विश्वासकेँ खंडित करबाक लेल राजकमल निरुद्देश्य बढ़ैत गेलाह । बड़ी काल धरि घूरि कऽ नहि अयलाह तँ मायकेँ चिंता भेलनि । तकका हेरी शुरू भेल । अंततः ओ स्टेशन रोडक सुनसान चौराहा लग बन्न दोकानक आगाँ राखल बेंच पर पड़ल भेटलथिन । एकरा राजकमल बचपनक घटनाक रूपमे वर्णित कयने छथि । छह-सात बरखक अल्पवयसीक संदर्भमे ई विश्वसनीय नहि लगैत अछि । बेसी संभव जे ई घटना राजकमलक किशोरावस्थामे घटल हो। बंगाली संन्यासिन 'देहगाथा'क मदर तीर्थमयी सेहो भऽ सकैत अछि ।

राजकमलक व्यक्तित्व निर्माणमे रासलीलाक निर्णायक भूमिका भऽ सकैत अछि । ओ स्वयं लिखने छथि जे एक बेर नेपहिमे ककरो घरमे ओ रासलीलाक एकटा विशाल चित्र देखलथिन। चित्र हुनका बान्हि लेलकनि । ओ जहिया-जहिया ओत' जाथि, ओहि चित्रकेँ बड़ी काल धरि देखैत रहि जाथि । राधा आ चौरासी टा गोपीक संग विभिन्न मुद्रामे चित्रित कृष्ण हुनका मोहि लेने छलनि । कृष्णक एके समयमे कोनो गोपीकेँ बाँसब, कोनो गोपीसँ रूसब आ ककरो संग प्रेम करब हुनका मुग्ध कऽ दैत छलनि । ओ कृष्ण बनि जेबाक कल्पना करय लगैत छलाह । एक बेर अपन एकतुरिया पित्ती उपेन्द्र चौधरीसँ ओ पुछनहु छलाह– 'की हम एक्के समय पाँच या दस अलग-अलग आदमी बनि सकैत छी ? की ई संभव अछि ?'

पित्ती जवाब देलथिन– 'आदमीसँ कोन चीज असंभव अछि । मुदा अहाँ एकटा फूल बाबू नहि रहि कऽ दसटा फूल बाबू किएक बनय चाहैत छी ?'

फूल बाबू एकर कोनो जवाब नहि देलथिन । आगाँ चलि कऽ रासलीलाक चित्र देखबाक अनेक अवसर हुनका जीवनमे अयलनि आ हुनक मनोरचनाक अंग बनि गेलनि ।

अपन व्यक्तित्व पर रासलीलाक पड़ल प्रभावकेँ अंकित करैत ओ लिखैत छथि– 'कलकत्ताक ग्रैंड होटल आर्केडमे ठाढ़ भेल वा बम्बइक कमला नेहरू पार्कक सामने नाज रेस्त्रांमे कॉफी पिबैत या मसूरी हिलक माल रोड पर कोनो रेलिंग पर टिकल अमकरे सिगरेट पिबैत, बालिंग आ बूढ़ भेलाक बादो, हम रासलीलाक ओहि चित्रक स्मरण कयने छी । हमरा इच्छा भेल अछि जे पैघ पैघ दोकानसँ कीमती चीज किनैत प्रत्येक स्त्रीक बाँहि आ डाँड़पर हाथ धयने अलग-अलग शरीर धारण कऽ घुमैत रही । एक्के समय अनेक व्यक्ति बनि जेबाक हुनक अतिप्राकृतिक इच्छा तँ उपेन्द्र चौधरीक साक्ष्य द्वारा पुष्ट होइत अछि, मुदा रासलीलाक चित्र देखबाक बात राजकमले द्वारा कथित अछि । ओकर बाह्य प्रमाण ताकब निरर्थक अछि । रासलीलाक चित्र देखब ने असगुन अछि, ने असंभाव्य । ओकर प्रभाव हुनक जीवन पर कतेक पड़लनि आ अपन अनुभवक लेल एकटा धार्मिक मिथक गढ़िकेँ ओकरा गौरव आ महिमा प्रदान करबाक इच्छा राजकमलक मोनमे रहनि कि नहि, ई निर्णय करब कठिन अछि । 'रासलीला' शीर्षकसँ हुनक एकटा कथा हिन्दीमे प्रकाशित अछि । राजकमलक जीवनसँ संबंधित छोट पैघ अनेक घटना अछि जकर सत्यासत्यक निर्णय करबाक लेल गहन छानबीन आ अनुसंधानक बेगरता अछि।

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'

❑ –'राजकमलजीक प्रतिभा अद्भुत.. हुनक कविता-यात्रा 'स्वरगंधा' सँ शुरू भेल छल जकरा ओ 'प्रतिपदा' एवं 'चित्रा' केँ अर्पित कयने छलाह । हम तहियेसँ दूरहुँ रहि हुनक गतिशीलता देखैत अयलहुँ, तृप्त होइत रहलहुँ । हुनका परम्परावादसँ फराक लोक भलेँ कहओ किन्तु देशक माटि पानिक सुरभि संस्कार हुनक रचनामे गमकैत भेटत । जीवनक अन्तिम पटाक्षेपक समय उग्रताराक प्रति भक्ति ओ तांत्रिक साधनाक प्रति आकर्षण, हुनक हताश मनोवृत्तिक नहि, अन्तः संस्कारक प्रवृत्तिक साक्ष्य अछि । अल्पजीवनोमे ओ साहित्य-जीवनमे चिरायु भेल छथि ।'

❑ *आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' (अक्षर-अक्षर अमृत/71)*

❑ आ, तँ उक्त कविता-संकलन (स्वरगन्धा) समर्पित कयल गेल छल 'सुमन'केँ आ 'यात्री'केँ । जेना गामक मन्दिरक देहरिपर प्रणाम क', फूल-पात चढ़ाक' परदेश चल जाइत अछि ।

हम फूल-पात चढ़ाक' सुमन, यात्री, किरण, अमर आदि उपनामी कवि-समुदायक ओहि मध्य युगसँ विदा भ' गेलहुँ । 'घसल अठन्नी'सँ, 'गामक चिट्ठी'सँ, 'अगहन'सँ, 'वन्दना'सँ हमरा बेसी नीक लागल दूमक भीड़, चौबटियापर मोटरसँ पिचायल कुकूर, धनसाधरक धूआँ, फूटल सीसावला लालटेन, हरदि आ लाल मेरिचाइसँ भकभक करैत अपन स्वीक हाथ । हमरे टा नहि, हमरा सभकेँ बीच आइनक सुखायल तुलसी-गाछसँ बेसी नीक लागत बाड़ीमे रोपल गेल साग तरकारीक लत्ती । हमरासभकेँ ओ सभटा वस्तु आ ओ सभटा विषय नीक लागत, जे जीवनक लेल अनिवार्य, आवश्यक, उपयोगी, सुविधामय आ सुखदायक अछि । जे पुरान अछि, सड़ल अछि, सुखा गेल अछि, से कोनो वस्तु, ने मैल सँ कारी भ' गेल जनौ आ ने विद्यापति अथवा 'बारहमासा'क अनुकरणमे लिखल गेल मायानन्द मिश्रक गीत 'नभ आइनमे..' हमरा सभकेँ नीक नहि लागत ।

❑ देशमे स्वाधीनता आयल १९४७ मे, किन्तु आब १९६० मे आबिक' हम सभ बुझैत छी, आ निर्णय करैत छी जे स्वाधीनता हमरासभक लेल नहि, सत्ताधारी वर्णिक सम्प्रदाय आ राजनीतिज्ञक लेल आयल अछि । सभ किछु रहितो, किछुओ टा नहि अछि हमरासभक अपन । कोसिकाक बान्ह बन्हायल, मुदा हमर गामक धरती एखनो मलेरिया आ भाङक अतिरिक्त आर किछु नहि जन्म दैत अछि । अर्थ-संकट बनि गेल अछि समाज-जीवनक एकमात्र 'धर्म संकट' आ हमरासभक प्राण जा रहल अछि । धरौनी-कारखानासँ ककरा लाभ होयत ? जे जनसमुदाय पेटक शोक करबामे प्राण द' रहल अछि, से किरासन तेलक शोक की करत ? लोक गामसँ पड़ाक शहर बजार अबैत अछि, पुदा, आब बजार सँ पड़ाक' ओ कत' जायत ? चारू कात प्रपंच आ यंत्र पसरल अछि । लोकनाथ मरि गेलाह, तँ गामक लोक आब हुनकर युवती विधवाकेँ फूटल हाँड़ी बना देत, मुड़ल बिलाड़ि बना देत । मानव-जीवनक सभसँ पैघ सफलता थिक, मिनिस्टरी दलक एम. एल. ए. बनि जायब ! कविता आ साहित्य थिक जीवनक सभसँ पैघ असफलता आ मृत्यु !

❑ *राजकमल चौधरी*

जीवन

जाहा चाइ ताहा भूल कोरे चाइ
जाहा पाइ ताहा चाइ ना

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

जकरा प्राप्त करबाक इच्छा कयलहुँ से एकटा भ्रांत इच्छा छल, ओ
जकरा प्राप्त कयलहुँ तकरा पबबाक कोनो इच्छा मोनमे नहि छल ।

राजकमल चौधरी

राजकमल चौधरीक जन्म 13 दिसम्बर 1929 ई.कें भेलनि। किछु व्यक्तिक कहब छनि जे ई राजकमलक असली जन्म तिथि नहि अछि; ओ एहि तिथिसँ दू साल पहिनहि जनमल छलाह। हुनक जन्म रामपुर हवेली नामक गाममे भेलनि। रामपुर हवेली हुनक मातृक छलनि। ई गाम मुरलीगंज लग अछि आ आब मधेपुरा जिला (बिहार)मे पड़ैत अछि।

हुनक पैतृक गाम महिसी छलनि। ई बिहारक सहरसा जिलामे पड़ैत अछि। महिसी सहरसा रेलवे स्टेशनसँ 17 किलोमीटर पच्छिम अछि आ कोसी बांधसँ सटले पूब बसल अछि। एहिठामक जन जीवन पर कोसी नदीक गंभीर प्रभाव रहल अछि। प्रख्यात दार्शनिक मंडन मिश्र एही गामक छलाह।

कहल जाइत अछि जे मंडन मिश्र आ शंकराचार्यक मध्य शास्त्रार्थ महिसिएमे भेल छल। उग्रताराक शक्तिपीठ हेबाक कारणें धर्मस्थानक रूपमे सेहो महिसी बहुत प्रसिद्ध रहल अछि।

राजकमल नैष्ठिक ब्राह्मण कुलमे उत्पन्न भेल छलाह। हुनक पूर्वज उग्रताराक उपासक रहथि। राजकमल चौधरीक दादा खुदन चौधरी संस्कृतक ज्ञाता छलाह आ समाजमे हुनक खूब प्रतिष्ठा छलनि। ओ दू टा विवाह कयने छलाह। मिथिलाक ब्राह्मण समाजमे बहुविवाह प्रचलित छल। बहुविवाहक हाल ई छल जे वर कें एहो मोन नहि रहैत छलनि जे हुनक सासुर कोन कोन गाममे छनि।

राजकमलक पिता पंडित मधुसूदन चौधरी तीन टा विवाह कयलनि। कहल जाइत अछि जे मधुसूदन चौधरी ओहि परीक्षट्टाक पहिल ग्रैजुएट छलाह। हुनका 30-40 बीघा जमीन आ पक्काक घर रहनि। ओ गणित, साहित्य तथा संस्कृतक पंडित छलाह। ओ किछु कविता लिखने छलाह, जे गंगा, सुधा आदि हिन्दीक तत्कालीन पत्रिकामे छपल छल। असहयोग आन्दोलनमे ओ किछु दिनक लेल जेलो गेल छलाह। पंडित मधुसूदन चौधरी हाइस्कूलक अध्यापक छलाह आ मधेपुरा, जयनगर, बाढ़, नवादा आदि अनेक स्थानमे रहलाह। हुनक जीवनक उत्तरार्द्ध नवादामे बितलनि। ओ नवादा हाइस्कूलक प्रधान अध्यापक छलाह। सेवा निवृत्त भेलाक बाद ओ गाम अस अथलाह आ अन्ततः 10 जनवरी 1967कें हुनक मृत्यु भऽ गेलनि।

मधुसूदन चौधरीक पहिल पत्नी, परसरमावाली, निःसन्तान छलथिन। तें मधुसूदन चौधरी दोसर विवाह रामपुर हवेलीमे कयलनि। दोसर पत्नीक नाम छलनि त्रिवेणी देवी। पुनर्विवाहक थोड़बे दिनक पश्चात पहिल पत्नीक देहान्त भऽ गेलनि। मधुसूदन चौधरीकें त्रिवेणी देवीसँ चारि टा सन्तान भेलनि। पहिल सन्तान राजकमल चौधरी छलनि, दोसर कन्या छलथिन, जे अल्पवयसमे मरि गेलथिन, तेसर धीर आ चारिम सुधीर।

राजकमल जखन दस बारह बरखक छलाह, तखने (साकेतानन्दक कथनानुसार) 1939मे हरभंगा अस्पतालमे हुनक माताक देहान्त भऽ गेलनि। राजकमलक पित्ती श्री उपेन्द्र चौधरीक कहब छनि जे त्रिवेणी देवीक मृत्यु 1940मे भेलनि। दोसर पत्नीक मृत्युक छबे मासक बाद मधुसूदन चौधरी तेसर विवाह जमुना देवीसँ कयलनि। विवाहक समय जमुना देवी चौदह पन्द्रह बरखक रहल हेतीह। जमुना देवी आ राजकमलक वयसमे दुइए-तीन बरखक अंतर छल। जमुना देवीसँ मधुसूदन चौधरीकें चारि टा पुत्र आ तीन टा पुत्री भेलनि। एकटा पुत्री जीवित रहलनि, जकर नाम मदालसा अछि। राजकमलकें मदालसासँ बड़ स्नेह छलनि। राजकमलक साहित्यमे बेर बेर मदालसा नाम अबैत अछि। जमुना देवी एखनो जीवित छथि।

राजकमल चौधरीक असली नाम मणीन्द्र नारायण चौधरी छलनि। घरक लोक दुलारसँ हुनका फूल बाबू कहनि। हुनक बेनपन अपन गाम महिसीमे बितलनि। उपनयन संस्कार धरि ओ महिसिएमे रहलाह। तकर बाद मैट्रिक धरि पिताक संग-संग जयनगर, बाढ़ आ नवादामे रहलाह। कहियो काल कोनो छुट्टीमे माता-पिता संगे गाम अबैत छलाह। हुनक माता पिता सालमे एक आध बेर खेत पथार देखबा लेल आ अन्न-पानि समेटबा लेल गाम अबैत छलाह। राजकमल अपन पिताकें स्नान करा कहल करथि। राजकमल बेनेसँ तेजस्वी आ चंचल स्वभावक रहथि। हुनका पढ़यमे मन नहि लगनि आ बेसी काल खेलाइत धुपाइत रहथि। ई देखि हुनक पिताकें चिन्ता भेलनि। ओ एकटा उपाय सोचलनि। ओ सभटा पाठ्य सामग्रीकें खिस्सा बना बना राजकमलकें सुनाबय लगलाह। राजकमलकें खिस्सा सुनबाक तेहन हिस्सक पड़ि गेलनि जे ओ बड़ी-बड़ी राति धरि जागल रहि जाथि। एक राति हुनक पिता सूतल रहथिन। राजकमलक निन्न दूटि गेलनि आ ओ खिस्सा सुनाबऽ लेल पिताकें जगाबऽ लगलाह। पिता टारय चाहलनि— एखन सुतू, भोर सुनायब। राजकमलकें भेलनि जे पिता रूसल छथि। डिब्बासँ बिस्कुट निकालि कऽ अनलथि आ पिताकें दैत कहलथिन— लाल कका, रूसू नहि। बिस्कुट खा लिअऽ आ खिस्सा सुनाउ।

राजकमलक एहि बाल सुलभ आचरणसँ पिता विह्वल भऽ गेलाह और हुनका छातीसँ सटा लेलथिन। अपन माँक स्नेह राजकमलकें बेसी दिन नहि भेटि सकलनि। वयसक दृष्टिएँ छोटकी सतमाय आ हुनका मे कोनो बेसी अन्तर नहि छल। तें राजकमलक मनमे हुनक ओ स्थान नहि बनि सकल, जे जेठकी सतमाय वा अपन मायक छल। अपनासँ कनेके छोट बालकक लेल मायक भूमिका निबाहब जमुना देवीक लेल निश्चय बहुत उकड़ू आ कठिन रहल हेतनि। छोटकी सतमायक प्रति राजकमलक मनमे पूर्ण श्रद्धा नहि भऽ सकलनि। सदैव एकटा

विरोध भाव रहलनि । एहि विवाहक लेल ओ अपन पिताकेँ कहियो क्षमा नहि कऽ सकलाह ।

तेसर विवाहक बाद पिताक बदलल दृष्टिक बारेमे राजकमल लिखैत छथि– सतमायक आगमनसँ पहिने पिताजी हमर परिचय एकटा प्रतिभाशाली बालकक रूपमे करबैत छलाह, मुदा सतमायक आगमनक बाद हुनका नजरिमे हम सभसँ कम प्रतिभाशाली आ निरीह बनि गेलहुँ। बहुत बादमे एकटा पत्रमे अपन छोट भाइकेँ ओ जे किछु लिखलनि ताहूसँ संकेत भेटैत अछि जे सतमायक आगमनक बाद हुनक जीवन आओर अधिक दुखमय भऽ गेल हेतनि । अपन अनुज सुधीरकेँ ओ लिखलनि– ई कलकत्ता शहर अजीब जगह अछि । पिताजी आ सतमायक घृणा बरदाश्त कऽ सकी तँ ओतहि रहू । जीवनसँ लड़बाक सामर्थ्य हो तँ एनय चल आउ ।

मायक मृत्यु आ सतमायक आगमनक बाद राजकमल घरसँ आ पितासँ दूर होइत गेलाह । ओ पहिनहुँ सँ पिता द्वारा उपेक्षित अनुभव करैत रहल छलाह । ओ लिखैत छथि जे पिताक ट्रांसफरक संग संग ओ एकटा फालतू सामान जकाँ एक शहरसँ दोसर शहर ढोआइत रहल छलाह ।

पुनर्विवाहक बाद हुनक पिता ट्यूशनमे आ नव पत्नीक तुष्टि आ प्रसन्नतामे लागल रहैत छलाह । राजकमल लिखैत छथि जे ओहि समयमे पिता हुनका प्रतिद्वंद्वी जकाँ बुझऽ लागल छलथिन आ हुनकर रवैया आक्रामक रहैत छलनि । एहि प्रतिद्वंद्विताक आभास हुनक 'सीताक मृत्यु: अहिल्याक जन्म' कवितामे भेटैत अछि । कविताक किछु आरंभिक पाँती अछि--

बिना कयने धरम समाजक लोक लाजक कोनो परवाहि
वृद्ध पितामह अनने छथि खोजबी के बिआहि...
पंडित सुधाकर जीक धर्मपत्नी द्वितीया, स्वकीया
आ हमर नवजात वासना परकीया
दुन्नू अछि बान्हल कुल-शील ससरफानीमेँ
वैवस्वत मनुक महावाणीसँ

उपेन्द्र चौधरी कहैत छथि जे मैट्रिक पास करऽसँ पहिने राजकमल अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्तिक छलाह । हुनका गीता आ दुर्गासप्तशतीक सभटा श्लोक कंठस्थ छलनि । पिता हुनका नैष्ठिक ब्राह्मण आ आज्ञाकारी बालक बनबय चाहैत छलथिन । हुनका भिनसरबेमे उठय पड़नि । उठि कऽ भारतक इतिहास पढ़य पड़नि । नीरस आ निष्प्राण तिथि सभ रटय पड़नि । हुनकर पिताक विश्वास छलनि जे इतिहास आओर सभ विषयसँ बेसी जरूरी विषय अछि । जे व्यक्ति अपन परिवार, अपन गाम, अपन देशक इतिहास नहि जनैत अछि; ओहि महापुरुष सभकेँ नहि जनैत अछि जे ओकर खानदान आ ओकर देशमे जनमल, ओ अपन जीवनमे किछु नहि कऽ सकैत अछि। मुदा इतिहासक मुरदा तारीख रटबामे राजकमलक रुचि नहि रहनि ।

राजकमल लिखने छथि जे पारम्परिक ब्राह्मण संस्कारमे दीक्षित करबाक लेल हुनकर पिता लग कुल तीन टा उपाय छलनि– आज्ञा, उपदेश आ मारि पीट । आठसँ लऽ कऽ सोलह सालक उमेर धरि हुनका पिटाइ लगैत रहलनि आ ब्रह्मचर्य, ब्राह्मणत्व, अपरिग्रह, आज्ञाकारिता आदिक विषयमे उपदेश सुनय पड़लनि । उपदेश दैत काल पिता एकटा एहन बालकक दृष्टांत दैत छलथिन जे अपन पिताक आज्ञाक कारणेँ जहाजक डेक पर अचल ठाढ़ रहि गेल आ आगि लगला पर जरिकेँ सुड्डाह भऽ गेल रहय । पिताक इच्छा रहनि जे राजकमल ओहने आज्ञाकारी बालक बनय । मुदा राजकमल ओहि बालककेँ मूर्ख आ घृणास्पद मानैत रहथि । ओहि पितृभक्त आज्ञाकारी बालकक आदर्श आ प्रतिमानक प्रति हुनक मनमे उपेक्षा आ अवज्ञाक भाव उत्पन्न भेल।

सतमायक आगमनक बाद पिताक उपेक्षा सहैत मातृहीन राजकमल एकाकी, दुखी आ दिशाहारा बनि गेलाह । तेसर विवाहसँ मधुसूदन चौधरीकेँ जे भौतिक सुख भेटल होनि, मानसिक रूपेँ ओ अशान्त भऽ गेलाह । हुनका मनमे कतहु ई बात अवश्य रहनि जे विवाह कऽकऽ ओ नीक नहि कयलनि। विवाहक प्रति राजकमलक विरोधी मनोभावक ज्ञान सेहो हुनका छलनि । एकर अतिरिक्त ओ एहन कन्यासँ विवाह कयने छलाह जे अवस्थामे हुनकासँ बहुत छोट आ राजकमलक उमेरक रहनि । समवयस्कताक कारणेँ जमुना देवी आ राजकमलक पारस्परिक आकर्षणक संभावना हुनका निरन्तर आशंकित कयने रहैत हेतनि । मधुसूदन चौधरीक एहि जटिल आ विचित्र मन:स्थितिक प्रभाव पिता पुत्रक सहज सामान्य सम्बन्ध पर पड़ल । दुनूक बीच जे निजता आ अपनत्व हेबाक चाही से दूरी आ कटुतामे बदलैत गेल। सखा भाव आ मातृ भावक द्वन्द्वमेँ गुजरैत जमुना देवीक आचरण राजकमलक प्रति सहज नहि रहल हेतनि । फलत: ओ परिवारसँ कटय लगलाह । घरसँ अलग बाहरक संसारमे स्नेह आ सहानुभूति हुनका एहन लड़का सभसँ भेटलनि, जे दिन भरि आवारागर्दी कयने फिरैत छल । राजकमल जखन कोनो कारणेँ घरमेँ दुखी भऽ जाथि तँ पड़ा कऽ ओकरा सभक संगतिमे चल जाथि । ओतय हुनका उन्मुक्तता आ आनन्द भेटनि । ओकरा सभक संगे ओ कहियो ताश खेलथि, कहियो ताड़ी पीबथि, कहियो नौटंकी देखैत 'रात भर रड़यो, सुबेरे चले जइयो जी'क हुल्लड़मे संग दैत रहथि । एकबेर नौटंकीक लौंडा जकाँ ओ पैघ पैघ जुल्फी बढ़ा लेलनि । पिताकेँ जखन असहज भऽ गेलनि तँ नौआकेँ बजबा कऽ हुनक मूड़न करा देलथिन । घरमे अपमानित आ प्रताड़ित भेला पर जखन ओ क्रुद्ध भऽ जाइत छलाह तँ सामानकेँ तोड़य-फोड़य लगैत छलाह वा कोनो वस्तु चोराकऽ ककरो दऽ अबैत छलाह । एक बेर ट्रंक सँ सतमायक साड़ी चोरा कऽ शकुनकेँ दऽ आयल रहथिन । शकुन हुनका ओतय नौड़ीक काज करैत छलि ।

राजकमल 15-16 वर्षक वयसमे कविता लिखब शुरू कयलनि। नवादा हाइस्कूलमे कोनो शिक्षक कविता करैत छलाह । एक दिन हुनक कोनो कविता सुनैत काल हुनका लगलनि जे ओहो कविता लिखि सकैत छथि आ ओ कविता लिखब शुरू कऽ देलनि ।

राजकमल 1947 ई.मे नवादा हाइ स्कूलसँ मैट्रिकुलेशनक परीक्षा पास कयलनि । राजकमलक अनुज सुधीर लिखैत छथि जे नवादा हाइ स्कूलमे 23 जनवरी 1946 केँ नेताजीक जन्म दिवसक अवसर पर एकटा घटना घटल । स्कूलक छत पर चढ़ि कऽ राजकमल तिरंगा झंडा फहरौलनि आ नारा लगौलनि– इंकलाब जिन्दाबाद । नीचाँ मैदानमे चलैत क्लासमेँ जबावी नारा लागल– तिरंगा झंडा जिन्दाबाद, फूल राजा जिन्दाबाद । स्कूलक लगे थाना छल । सिपाही सभ स्कूलकेँ घेरि लेलक । मुदा राजकमल छतसँ कूदि कऽ पड़ा गेलाह ।

मैट्रिक पास कयलाक बाद राजकमल नवादासँ पटना चल अयलाह आ बी.एन. कॉलेजमे आइ.ए.मे नाम लिखौलनि । उपेन्द्र चौधरीक कहब छनि जे जखन ओ नवादासँ पटना अबैत छलाह तँ पिता अध्यात्मवश चारि सय बेयालिस टा निषेध-मंत्र देलथिन– बाउ, एना नहि करिहह । बाउ, ई नहि खइहह । बाउ, ओतय नहि जइहह ।

राजकमलपर एहि निषेध-मंत्रक कोनो प्रभाव नहि पड़ल। पटना आबि कऽ ओ पूर्ण स्वतंत्रताक अनुभव कयलनि।

ओ बी.एन. कॉलेजक हॉस्टलमे रहैत छलाह। जहियासँ काव्य रचना दिस प्रवृत्त भेल छलाह, तहियासँ अध्ययन बढ़ि गेल रहनि। पटना अबला पर साहित्यक विशेष अध्ययन कायम रहलनि। एही कालमे हुनक झुकाव चित्रकला दिस भेलनि। ओ चित्रकलासँ सम्बन्धित पोथी पढ़लनि आ रेखांकन करब शुरू कयलनि। राजकमलमे किछु एहन गुण रहनि जे हुनका ककरो संग परिचय करयमे देर नहि लगनि। लड़की सभ हुनका प्रति सहजहि आकृष्ट भऽ जाइत छलि। हुनकर हॉस्टलक बगलेमे शोभना झा नामक एकटा लड़की छलीह। हुनक पिता पुरातत्व विभागमे इंजीनियर रहथि। शोभनासँ राजकमलक परिचय भेलनि आ ओ ओहि परिवारमे घुलि-मिलि गेलाह। एक बेर पिताक अनुपस्थितिमे शोभनाक छोट भाइ दुखित पड़ि गेलथिन। राजकमल बहुत तत्परतासँ हुनक चिकित्सा करबौलथिन आ सेवा कयलथिन। शोभना आ राजकमलमे प्रगाढ़ रागात्मक सम्बन्ध भऽ गेल। राजकमल शोभनाकेँ कहलथि जे हम अहींसँ विवाह करब।

मुदा शोभनाक पिताक ट्रांसफर भऽ गेलनि। ओ भागलपुर चल गेलाह। शोभनाक भागलपुर चल गेलाक बाद राजकमल आइ.ए.क पढ़ाइ बीचहिमे छोड़ि देलनि। ओ लगभग एक वर्ष पटनामे रहल हेताह। पिताकेँ कहलथिन हम आर्ट्स नहि पढ़ब, कॉमर्स पढ़ब आ उपेन काका संगे भागलपुरमे रहब। एकसर रहय मे मन नहि लगैत अछि। पिताकेँ शोभना प्रसंग बूझल नहि छलनि। ओ राजी भऽ गेलथिन। फलतः 1948 मे ओ भागलपुर चल गेलाह आ मारवाड़ी कॉलेजमे आइ.कॉम मे नाम लिखौलनि। राजकमल आ उपेन्द्र चौधरी दुनू एकके संग अदमपुर मोहल्लामे रहैत छलाह। शोभना भागलपुर नया टोलामे रहैत छलीह। राजकमल आ शोभनाक बीच फेरसँ सम्पर्क भेल, मुदा एहि सम्पर्कमे पहिलुका ताप आ व्याकुलता नहि छल। आर्थिक-सामाजिक स्तर भेद आ जीवनक व्यावहारिकताक कारणेँ दुनूक सम्बन्ध धीरे धीरे समाप्त भऽ गेलनि।

भागलपुरमे उपेन्द्र चौधरीक संग रहितो राजकमलक अपन किछु भिन्न आ स्वतंत्र जीवन रहनि, जे अज्ञात अछि। उपेन्द्र चौधरी कहैत छथि जे ओ हुनका सँ चोरा कऽ सुन्दरवन आ आओर पता नहि कतय-कतय चल जाथि आ राम, हिसकी, पोर्ट हुनकर संगी होनि। साहित्य सृजन सेहो हुनका उपेन्द्र चौधरीसँ अलग करनि। एक राति ओ उपेन्द्र चौधरीसँ एक टाका मंगलथिन। उपेन्द्र चौधरीकेँ आश्चर्य भेलनि जे एतेक रातिकऽ हुनका कोन बेगरता भऽ गेलनि आ सेहो एक टाका केर! ओ पुछलथिन-- की करब ? तँ राजकमल जवाब देलथिन-- मन होइए जे एगो टाका दऽ कऽ कोनो रिक्सा पर बैसि जाइ आ एहि इजोरिया रातिमे रिक्साबला हमरा आदमपुर चौराहा सँ माणिक सरकार चौराहा धरि घड़कौने लऽ जाय।

शोभना संगे प्रेम सम्बन्धक विफलता, साहित्यिक वृत्ति आ अन्यान्य व्यसनक कारणेँ राजकमल कॉमर्सक पढ़ाइ पर ध्यान नहि दऽ सकलाह। आइ.कॉम.मे फेल भेलाक बाद ओ भागलपुर छोड़ि कऽ गया चल गेलाह आ गया कॉलेजमे नाम लिखौलनि। साकेतानन्द लिखने छथि जे ओ बी.कॉम. मे सेहो एक बेर फेल भेलाह। प्रमाणपत्रक अनुसार बी.कॉम. कयलाक बाद 6.7.'54केँ ओ कॉलेज छोड़ि देलनि।

जखन ओ बी.कॉम.मे प्रवेश कयने छलाह, तखने 13.7.51केँ हुनक विवाह चानपुरा (दरभंगा)क शशिकान्ता चौधरीसँ भऽ गेलनि। विवाहक समय ओ बाइस-तेइस बरखक रहल हेताह। ई सोचि कऽ जे आब ओ विवाहक सर्वथा योग्य भऽ गेल छथि; पिता जल्दी-सँ जल्दी हुनक विवाह करा देबऽ चाहैत छलथिन। मुदा राजकमल एखन विवाह लेल तैयार नहि छलाह। पिताकेँ होनि जे विवाहक वयस बीतल जाइत छनि। अन्ततः राजकमलकेँ मनयबाक लेल तार द्वारा महिसीसँ उपेन्द्र चौधरीकेँ नवादा बजाओल गेल। चारू दिससँ घेरलापर आ अत्याधिक दबाव देलापर विवाहक लेल ओ राजी भेलाह। हुनका सौराठ लऽ जायल गेल आ ई विवाह ओतुक्के सभामे तय भेल। हुनक पत्नी शशिकान्ता अत्यल्प शिक्षा प्राप्त, धार्मिक संस्कारवाली, परदा करयनिहारि आ अत्यन्त व्यावहारिक महिला छलीह। बी०कॉम० कयलाक बाद चारू दिससँ हुनका पर दबाव पड़य लगलनि जे अर्थोपार्जन लेल ओ कोनो काज-धंधा शुरू करथि। फलतः रोजगारक खोजमे ओ पटना चल अयलाह। शुरूमे किछु दिन धरि ओ कोनो दैनिक अखबारमे प्रूफ रीडरक काज करैत रहलाह। फेर पटना सचिवालयमे लोअर डिवीजन क्लर्कक नोकरी पकड़ि लेलनि। एहि परिस्थितिक विडम्बनाकेँ ओ हितोपदेश शीर्षक कवितामे व्यक्त करैत छथि—

राति खन भोजन काल कहलनि मातमाय
जाउ, बहराउ कविताक कोहबरसँ
नौकरी-चाकरीक करू उपाय
अहाँ असकरे नइँ छी
एकटा कन्याक हाथ छिअइ धएने
नइँ चलत काज
कालिदास बाणभट्ट विद्यापति कएने
विक्रमादित्य, श्रीहर्ष, लखिमा ठकुराइन सभ
भऽ जाथु स्वाहा
जाइ छी, फोलब पान-बीड़ीक दोकान दरभंगा
टावर-चौराहा

ई ठीक-ठीक ज्ञात नहि अछि जे पटना सचिवालयक शिक्षा विभागमे नोकरी करब ओ कहिया शुरू कयलनि। बेसी संभव ई लगैत अछि जे ओ 1955क आरंभमे ई नोकरी धयलनि आ रामकृष्ण मिशन लेनमे किराया पर घर लऽकऽ रहय लगलाह।

ओहि समयकेँ स्मरण करैत सारिकामे प्रकाशित भैरवी तंत्रमे ओ लिखैत छथि— 54-55मे पत्नी-ए क चलते हमरा सचिवालयमे नोकरी करय पड़ल, रामकृष्ण मिशन लेनमे दू कोठलीवला सस्ता फ्लैट लेबऽ पड़ल आ मनमे अवधारि लेबऽ पड़ल जे जे हाल सभक होइत छैक— किरानीक, मास्टरक आ छोट-छोट बाबू सभक, सएह हाल हमरो हएतः बी.ए. किया, नौकर हुए, पेंशन मिली और मर गए— अकबर इलाहाबादीक ई शेर हमरे पर लागू होमय लागल। हम ई गप्प कहियो नहि बाजल, मुदा दरभंगा जिलाक एकटा अमभोआर गामक ई अपरिचित औरत, जे कम उमेरक होइतहु लड़की नहि छलि, औरते छलि, हमरा भीतर अपना लेल घृणे-घृणा उपजौलक— शशि बहुत कनैत छलीह। हम जखन करौट फेरि कऽ सूति रही, दोस महिममे बैसिकऽ शतरंज खेलाइ, किछु पाइ जमा कऽकऽ रूस वा फ्रांस भागि जेबाक योजना बनाबी तँ शशि बहुत कनैत छलीह।

1954मे मैथिली जगतमे प्रकाशमे अयलाक बाद हुनक साहित्यिक सम्पर्क बढ़ि गेलनि। ललितसँ हुनक सम्पर्क विवाहक बादे भऽ गेल रहनि। हुनक सासुर ललितेक गाममे रहनि। जखन राजकमल

सचिवालयमे नोकरी करैत रहथि तँ ललित प्रतियोगिता परीक्षाक चक्करमे पटना गेला पर राजकमलेक डेरा पर टिकैत छलाह । ललित लिखैत छथि जे राजकमल अद्भुत मित्र आ आवेशी लोक रहथि । पटना प्रवासमे अधिक काल ललितकेँ पाइ घटि जाइत । ललितक एहि अवस्थाकेँ कोनो अन्तर्यामी जकाँ राजकमल बूझि जाथि आ टिकट, रिक्सा आ खाना सभक खर्च हुनका दऽ देल करथि ।

राजकमल सचिवालयमे नौकरी करिते रहथि तखने मसूरीक सावित्री शर्मा संग हुनक पत्राचार शुरू भेल । सावित्रीक पत्र ओ पटनाक अपन पता पर नहि मंगा कऽ ललितक दरभंगावला पता पर मंगबथि । ललित एहि प्रकारक सम्बन्धक विरोधी रहथि । तथापि सावित्री संगे राजकमलक पत्राचार बढ़ैत गेलनि आ 22 जुलाइ 1956केँ ओ हुनू विवाहकऽ लेलनि । (राजकमलक जीवनसँ संबंधित समस्त तिथि कारखानाक राजकमल पर केन्द्रित विशेषांकसँ लेल गेल अछि ।)

सावित्रीसँ राजकमलक परिचय कोना भेलनि आ ई परिणयमे कोना परिणत भऽ गेल– तकर कोनो प्रामाणिक जानकारी नहि अछि।

देहगाथामे एहि प्रेम प्रसगक विशद् चित्रण भेल अछि । सावित्री शर्मा अत्यन्त धनाढ्य परिवारक छलीह । राजकमलक सम्पर्कमे अयबासँ मरिसक दू तीन बर्ख पहिने ओ विधवा भऽ गेल छलीह । हुनका कोनो संतान नहि छलनि ।

सावित्री संग विवाह कयलाक बाद जखन छओ अगस्तकेँ राजकमल पटना घुरल छलाह तँ हंसराजकेँ ओ एकटा पत्र लिखलनि– हम आइए बीस-पच्चीस दिनक महायात्रा (हरिद्वार, ऋषिकेश, बदरीनारायण)सँ घुरल छी । एगारह दिनक बाद ओ फेर लिखैत छथि– 'आ हंसराज, एहि जीवनक उद्देश्य थिक मात्र ज्ञान-प्राप्ति आ ज्ञान-वितरण । से प्राप्तिक जे माध्यम हो, विष वा विषया पथ्यामे कोनो कोताही जुनि करब ।'

दस नवम्बरकेँ ओ फेर चिट्ठी लिखैत छथि 'प्रिय हंसराज, गत डेढ़ मासमे हम घटनाये नइँ छी । पुनः हिमालय-यात्रापर गेल छलहुँ।'

ई महायात्रा आ हिमालय यात्रा निश्चय मसूरी यात्रा अछि । 18-19 नवम्बरकेँ जखन ओ दरभंगा गेल छलाह तँ हुनका संग विदाइवला अनेक वस्तु-जात रहनि । ललित लिखैत छथि– 56मे राजकमल जखन दरभंगा आयल तँ संगमे चर वस्तु जात रहैक, विशेष कऽ आँगुरमे प्लेटिनम केर अंगूठी । विदाइक वस्तु-जात । कोडक केर फोल्डिंग कैमरा

56क दिसम्बरमे ओ फेर मसूरी चलि गेलाह । ओ ने ऑफिसमे कोनो सूचना देलथिन, ने कोनो दोस महिमकेँ कहलथिन आ सभ किछु छोड़ि कऽ अकस्मात चल गेलाह । एहि बेर ओ स्थायी रूपसँ ओतय रहबाक लेल गेल छलाह । मसूरीमे ओ 2 जुलाइ 57 धरि रहलाह । धर्मयुगमे प्रकाशित आत्म कथ्यमे ओ अपन मसूरी जीवनक बारेमे लिखैत छथि– 'असलमे ओ प्रेम नहि छल, मात्र शारीरिक सौन्दर्य, सुख आ ऐश्वर्य छल ।'

सावित्रीक शारीरिक आकर्षणसँ राजकमल अल्पिए उबिया गेलाह । मसूरीमे सात मासक निकटता एहि सम्बन्धक नवीनताकेँ खतम कऽ देलक । ओ संतोष नामक एकटा दोसर लड़कीक प्रति आकृष्ट भऽ गेलाह । बुझाइत अछि संतोष सावित्रीक भतीजी छलीह जे देहगाथामे मिनियाक रूपमे चित्रित भेल छथि । संतोषसँ हुनका प्रगाढ़ आत्मिक लगाव भऽ गेल छलनि । ई लगाव विरह वेदनाक रूपमे हुनक मैथिली हिन्दीक अनेक कवितामे व्यक्त भेल अछि । मैथिलीमे 'वसंतक प्रतीक्षा' एवं 'असमाप्त कथा : असमाप्त पत्र' एहि दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि । एहि प्रेम सम्बन्धक कारणेँ सावित्रीक परिवारमे राजकमलक स्थिति प्रतिकूल आ विकट भऽ गेलनि । मसूरीमे हुनका पर नौकरी वा व्यवसाय करबाक दबाब पड़ैत रहल, मुदा ओ तँ एहि सभक लेल बनले नहि छलाह । व्यवसाय तँ हुनकासँ भइए ने सकैत रहय । नौकरियो जहिया जे कयलनि, से मजबूरिएमे कयलनि । ताबेदारी करब हुनक स्वाभिमानकेँ सह्य नहि छलनि । फेर सावित्री परिवारकेँ कथूक कमी नहि छल, तखन ओ कथी लए किछु करितथि । ओ सावित्री-परिवारक वैभवक उपभोग करैत रहलाह । मुदा एहि भोग विलासमे हुनका सदैव पराधीनताक बोध होइत रहलनि।

संतोष संगे हुनक सम्बन्ध बहुत गंभीर स्थितिमे पहुँचि गेल छलनि । संतोष हुनका संग ठढ़रि जाय चाहैत छलीह । मसूरीमे राजकमलकेँ शशिकांताक पत्र एकटा मित्रक पता पर अबैत रहैत छलनि । सावित्री-परिवारकेँ एहि गुप्त पत्राचार आ शशिकांता संग राजकमलक सम्बन्धक आभास भऽ गेल । एहि सभ कारणेँ मसूरीक स्थिति विस्फोटक आ तनावपूर्ण भऽ गेल । राजकमल घरक दमघोंटू वातावरणसँ पड़ायल फिरथि आ निशामे मातल बहुत रातिकेँ घुरथि । एक दिन निशाभाग रातिमे घुरलाह । ततेक पीबि लेने छलाह जे कोनो चीजक सोह नहि रहलनि । सीढ़िए लग पड़ि रहलाह । बड़ी काल बाद सावित्री देखलकनि। उतरि कऽ नीचाँ अयलीह अ उठा कऽ ऊपर लए जेबाक प्रयास कयलथिन । नहि लऽ जा भेलनि तँ ओत्तहि छोड़ि देलथिन, मुदा आंगुरसँ प्लेटिनमक औंठी निकालि लेलथिन ।

भोरमे जलखै करैत काल राजकमल कहलथिन-- ओ औंठी दऽ दिअऽ।

सावित्री कहलकनि-- नहि, ओहि औंठीक खातिर कहियो अहाँक जान चलि जायत ।

कनी काल चुप रहलाक बाद राजकमल बजलाह– आइ हम चल जायब ।

केयो किछु नहि बाजल । एकटा औनाइत चुप्पी पसरल रहल। आ गर्भवती सावित्रीकेँ छोड़ि राजकमल विदा भऽ गेलाह । हुनका लग ओतबे पाइ रहनि, जाहिसँ ओ पटना पहुँचि सकितथि ।

3 जुलाइ 57केँ ओ सभ दिनक लेल मसूरी छोड़ि देलनि । वैभव आ ऐश्वर्यपूर्ण जीवन छूटि गेलनि । बचि गेलनि संतोषक स्मृति, जे रहि रहि कऽ पीड़ित करैत रहलनि–

कोहन छल ओ भूख कोहन छल ओ पियास
एक जुग धरि करइत रहलहुँ स्वप्न के हम आस
खाइत रहलहुँ आत्मा के दाह
पिजइत रहलउँ नयन-जल नोनछाह
मग्न रहलउँ प्रणयदीक्षामे
अज्ञातिनी विदेशिनी अनागता अनामा प्रियाक मिलन प्रतीक्षामे
ओना तऽ गप्प ई बुझल छनन--
जे ई सभ थिक छलना, ओ सभ थिक छल
जे स्नेह थिक मिथ्या, प्रेम थिक प्रताड़ना, मिलन थिक अनर्थ
जे चारि पड़लाक आगाँ नइँ एहि सभक किछुओ अर्थ
(वसंतक प्रतीक्षा)

कलकत्ता-प्रवास के हे संगी योगिराज

भय गेल समाप्त जे कथा पुनः कहबा के कोन काज ?
केवल संतोष (की भेंटि सकत पुनि हमरा ?)
नइँ परोक्षमे सभटा वसंतसुख सिसोहि लेत कोनो नव भमरा ?
(असमाप्त कथा : असमाप्त पत्र)

जुलाइ 57मे मसूरी छोड़लाक बाद राजकमल तीन चारि मास धरि पटना, दरभंगा आ नवादा करैत रहलाह । मसूरीक निश्चिन्त आ विलासमय जीवन आब कोनो बीतल सपना भऽ गेलनि । सोझाँमे आबि गेलनि अभाव, विपन्नता आ भविष्यक अनिश्चितता । नोकरी छुटिए गेल छलनि । आब कतय रहताह, की करताह ई दुश्चिन्ता परेशान करय लगलनि । जीवनक जाहि दुरवस्थामे ओ प्रवेश कऽ गेल छलाह, से हुनक अपने सिरजल छलनि । तेँ घर परिवार, सर-सम्बन्धी जकर लग जाइत छलाह, तकरे लग विरोध आ आलोचना सुनय सहय पड़नि । राजकमलकेँ अपन पछिला जीवन लेल कहियो कोनो अपराधबोध आ पछतावा नहि भेलनि । भेलनि मात्र दुख । पटना, दरभंगा आ नवादाक चकभाउर दैत ओ निश्चय करैत रहलाह आ निर्णय कयलनि जे हुनका कलकत्ता चल जेबाक चाही । मिथिलाक लोक बहुत प्राचीन कालसँ रोजगारक खोजमे आसाम आ बंगाल जाइत रहय । हजारो-हजार मैथिलक रोजी-रोटी कलकत्तासँ चलैत रहैक । कलकत्तामे रोजगारक अनेक अवसर आ महानगरीय आकर्षण रहैक । कलकत्तामे ओ विरोध आ आलोचनासँ दूर मनोनुकूल जीवन बिता सकैत रहथि । फलतः ओ कलकत्ता चल गेलाह । कहिया गेलाह से ठीक-ठीक ज्ञात नहि अछि मुदा अनुमान अछि जे ओ 57क नवम्बरमे कहियो गेल हेताह ।

कलकत्तामे हुनकर अप्पन क्यो नहि छलनि । हुनक लेखनसँ परिचित अनेक मैथिल छल । कलकत्तामे हुनक एकमात्र संबल छलनि यात्री जीक चिट्ठी, जे ओ हिन्दी लेखक छेदीलाल गुप्तक नामे लिखने छलथिन— ई राजकमल अछि । कलकत्ता जा रहल अछि तोरा लग । छेदीलाल गुप्त कलकत्ताक पत्रकारिता जगतसँ जुड़ल लोक सभसँ हुनकर परिचय करबौलथिन, जाहिसँ राजकमल अपन जीविका चला सकथि । एकटा दैनिक पत्रमे हुनक काजक व्यवस्थो भऽ गेलनि मुदा ओ ओतय नहि गेलाह । पुछला पर जवाब देलथिन जे हम ओतय खपि नहि सकब । मैथिलीक प्रसिद्ध सेवक आ उन्नायक श्री बाबूसाहेब चौधरी ओहि समयमे मिथिला दर्शन नामक एकटा मासिक पत्रिकाक प्रकाशन करैत रहथि । राजकमल मिथिला दर्शनसँ जुड़ि गेलाह । मुदा मात्र एहि पत्रिकासँ हुनक जीविका नहि चलि सकैत छलनि । एहि पत्रिकाक व्यावसायिक आधार बहुत सुदृढ़ नहि छल, तेँ राजकमलकेँ आरंभमे थोड़ेक ट्यूशन करए पड़लनि । हुनका पर आर्थिक दबाब निरन्तर बनल रहलनि । 12 अप्रैल 58केँ हंसराजक नामे लिखल एकटा चिट्ठीमे ओ लिखैत छथि— 'पहिली धड़केँ दरभंगा पहुँचब असंभव अछि... जीवनमे आर्थिक व्यवस्थाक अनबाक सरंजाममे व्यस्त, अतिव्यस्त छी ।' पत्र सभसँ ज्ञात होइत अछि जे ओहि कालमे ओ स्थिर रूपेँ कलकत्तामे रहय चाहैत छलाह आ ताहि लेल एकटा सुदृढ़ आधारक खोजमे छलाह ।

मिथिला दर्शन आर्थिक तंगीक कारणेँ अप्रैलमे बंद भऽ गेल । एहि पत्रिकासँ हुनका जे थोड़ बहुत आर्थिक सहायता भेटैत छलनि, तकरो रास्ता नहि रहल । अप्रैलसँ सितम्बर धरि राजकमल अपन आर्थिक भविष्यक अन्वेषण हिन्दी पत्रकारिताक क्षेत्रमे करैत रहलाह । रूपलेखा, नया संसार, स्वाधीनता, विनोद, शनीचर आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे ओ एक संग अनेक नामसँ धुरझार लिखय लगलाह, जाहिसँ हुनका पाइ भेटनि ।

अक्तूबर 58मे ओ भारतीय ज्ञानपीठमे नोकरी कऽ लेलनि । हंसराजकेँ एकटा पत्रमे ओ लिखैत छथि— 8.10.58क पत्र कालिह सायंकाल भेटल अछि । स्वरगंधा सम्बन्धित अहाँक लेख मिथिला दर्शनक नवम्बर अंकमे जा रहल अछि । पत्र गत सात मासँ बंद छल। अक्तूबर अंक बहरायल अछि । आब बराबरि बहरायत । हम मिथिला दर्शनसँ आब कोनो तरहेँ सम्बन्धित-सम्पर्कित नहि छी । कारण, समय नहि अछि । हम भारतीय ज्ञानपीठमे पुस्तकादि-संपादन कार्य कए रहल छी ।

भारतीय ज्ञानपीठक नोकरीसँ हुनका एकटा निश्चित आमदनीक ठहार भऽ गेलनि । ओ एकटा मकान किराया पर लऽकऽ रहय लगलाह । पत्नी शशिकान्ताकेँ सेहो कलकत्ता बजाय लेलथिन । फेर डेरा बदलि लेलनि । चल गेलाह पियारा बगान । पुतियारी पूर्वमे एकटा घर ठीक केलनि । भारतीय ज्ञानपीठक नोकरीसँ ओ बहुत संतुष्ट नहि छलाह । 19.11.59कें, जखन ज्ञानपीठमे नोकरी करैत हुनका एक सालसँ बेसी भऽ गेल छलनि, ओ हंसराजकेँ एकटा पत्रमे लिखलनि— 'अहाँ अनायासे ठगइत छी, अनायासे डूबि जाइ छी । ई छंदहीनता कखनउँ हमरा नीक लगइए, कखनउँ अधलाह । एखनधरिक हमरो जीवन एहने रहल अछि। दरभंगा पटना दिल्ली-मसूरी । तकरा बाद ई कलकत्ता । पारिवारिक जीव हम-अहाँ नइ छी । मुदा बताह-विक्षिप्तो नहि छी जे अकारण बौआइत रही— जनसागरमे भसिआइत रही । ई सत्त जे हम सभ असाधारण लोक छी । साधारण लोकक दिनचर्या जीवनचर्या हमरा सभक लेल नइ । तखन एकटा गप आर अछि— हमर पत्नी, अहाँक पत्नी, आ आर्थिक समस्या । स्वेच्छासँ बिआह कयने छी, तेँ पत्नीकेँ संगे राखि, अपना संगे बौआइत रहबाक उपयुक्त बनाउ । से नइ हो, आ बौआयब अधिक जरूरी बुझना जाए तँ पत्नीक परित्याग कए भगवान बुद्ध बनि जाउ । इति उपदेशः । हम आ शशिकांता कलकत्ते छी । आब कतेक जर्ख धरि अहीठाम रहब । जीविकाक कोनो उपयुक्त साधन नहि अछि, मुदा एतबा उपार्जन अवश्य अछि जे भोजन वस्त्र, गृह व्यवस्था होइए आ पढ़बाक लिखबाक समय भेटइए । पढ़ब-लिखब जीवनक उद्देश्य अछि । सभ दिन छल । सभ दिन रहत ।'

ज्ञानपीठक नोकरीसँ आर जे किछु भेल हो वा नहि, हुनक जीवनमे एकटा व्यवस्था आबि गेलनि । एहि व्यवस्थाक बेगरता ओ बहुत दिनसँ अनुभव करैत आबि रहल छलाह । व्यवस्था नहि रहलासँ हुनक जीवन विभिन्न प्रकारक ऊहापोहमे ओझरा गेल रहनि आ ओ अपन योग्यताक पूर्ण उपयोग नहि कऽ पबैत छलाह । मुदा ई व्यवस्था बेसी दिन नहि चलि सकल । सेठ-साहूकारक नोकरीसँ हुनक स्वाभिमानकेँ ठेस लगैत छलनि । ज्ञानपीठक नोकरी ओ दुइयो बर्ख नहि कऽ सकलाह।

मैथिली-हिन्दीक रचनाकार कीर्तिनारायण मिश्र 1960क आरंभमे किछु दिनक लेल अपन पिता लग कलकत्ता गेल छलाह । एक दिन राजकमलसँ भेंट करय ओ पूर्व पुतियारी गेलाह । दुपहरक समय छल। राजकमल सूतल छलाह । शशिकान्ता हुनका जगौलकनि । ओ कीर्तिनारायणकेँ देखि प्रसन्न भेलाह । बजलाह— बड्ड नीक भेल जे तोँ आबि गेलह । एकटा महत्त्वपूर्ण निर्णय लेबाक अछि आ ओहि लेल तोहर परामर्श

आ सहयोग अपेक्षित । हम पिता बनयसँ पहिनहि नौकरी छोड़य चाहैत छी । हम नहि चाहैत छी जे जन्मक बाद हमर बच्चाक मजरि गुलाम बाप पर पड़य । ओहि समय शशिकान्ता गर्भवती छलीह । आ ठीक 60क सितम्बरमे दिव्याक जन्मसँ पहिनहि ओ ज्ञानपीठक नौकरी छोड़ि देलनि । शशिकान्ताकेँ नैहर पठा देलथिन आ रागरंग बहार करय लगलाह । मुदा रागरंगसँ हुनक जीविका नहि चलि सकैत छलनि, ने चललनि । फलत: रागरंग-बंद भऽ गेल ।

ज्ञानपीठ आ रागरंग छोड़लाक बाद एकाएक हुनका पाइ कमयबाक इसोंक अयलनि । शशि कलकत्तासँ नैहर चल गेल छलीह । राजकमल पाइक पाछाँ बताह भऽ गेलाह । ओ कतेको सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कयलनि आ खूब पाइ कमौलनि । किछु दिन धरि एही कारणेँ ओ साहित्य-जगतसँ फराक रहलाह । बादमे शशिक अयला पर स्थिति सम्हरल आ ओ फेरसँ लिखब-पढ़ब शुरू कयलनि।

असलमे ओ सोचने रहथि जे रागरंग जीवन आ साहित्य दुनूमे हुनका लेल एकटा सम्मानजनक सहारा सिद्ध हेतनि, मुदा ताहि लेल जे वणिक बुद्धि आ आचरण चाही, से हुनकासँ नहि भेलनि । रागरंग हुनक सर्वाधिक प्रिय कल्पना छलनि । ओकर असफलताक कारणेँ ओ भीतर सँ टूटि गेलाह । सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन आ चंदा एकटा हताश व्यक्तिक तात्कालिक आवेश छल, जे ज्वार जकाँ आयल आ भाटा जकाँ निकलि गेल । ओ फेर सँ लेखनमे सक्रिय भेलाह । स्वतंत्र लेखनकेँ जीविकाक आधार बनौलनि । पाइ लेल बंगलासँ हिन्दीमे अनुवाद करय लगलाह । 60क अक्तूबरमे अजमेरक प्रकाशवतीकेँ ओ पत्रमे लिखलनि चाहलो पर लिखि नहि पबैत छी । पढ़बा लेल बहुत रास पोथी अछि, मुदा समय नहि भेटैत अछि । हँ, अनुवाद अवश्य करैत रहब, जाहिसँ किछु पाइ अबैत रहय आ साहित्यसँ सम्पर्क बनल रहय ।

अपन छओ बर्षक कलकत्ता-प्रवासमे राजकमल बहुत तीव्र गतिएँ साहित्य-सृजन कयलनि आ ओतबे तीव्र गतिएँ अपन व्यक्तिगत जीवन बितौलनि । कलकत्ताक प्राय: प्रत्येक साँझ ओ चौरंगीमे बितबैत छलाह । एकसर रहला पर पेट्टो लग कैफे दे मोनिकोमे बैसि चाय-कॉफी पिबैत नीचाक जन प्रवाह देखैत रहैत छलाह । फेर ककरो आबि गेलाह पर शॉ चलि जाइत छलाह । शॉ चौरंगीक प्रसिद्ध बार अछि, जतय कलकत्ताक बुद्धिजीवी शराब पिबैत विभिन्न समस्या पर बहस करैत रहैत छथि । शॉमे मैथिली हिन्दी बंगलाक अनेक लेखकक जुटान होइत छल । कहियो काल शॉक बाद ओ सभ फ्री स्कूल स्ट्रीट लग देशी शराबखाना चल जाइत छलाह । एहि भट्ठीकेँ राजकमल ग्रेवयार्ड कहैत छलाह । एहिठाम आबि कऽ दिन भरि जाइत छल । कहियोकाल एहनो होइत रहैक जे ग्रेवयार्डसँ निकलैत-निकलैत बहुत देरी भऽ जाइन । ट्राम आ बस किछु नहि भेटनि । एहन स्थितिमे जँ पाइ नहि रहनि वा कम रहनि, तखन दस बारह किलोमीटर पयरे चलऽ पड़नि । पूर्व पुतियारी पहुँचैत पहुँचैत रातिक एक दू बाजि जानि । कलकत्तामे हुनक पारिवारिक जीवनकेँ स्मरण करैत सुधीर लिखैत छथि– ओ भौजीसँ बहुत प्रेम करैत छलाह । रातिकेँ दुइए बजे सही, मुदा ओ घर अवश्य घूरि अबैत छलाह; चाहे हुनका औरंगीसँ बारह मील दूर पूर्व पुतियारी पयरे किए नहि चलऽ पड़नि । बाहरसँ खा कऽ किएक ने आबि गेल होथि, आ धरि भौजीक हाथक बनायल भोजन नहि करथि, ता धरि हुनका संतोष नहि होनि । खाना हम सभ संगे खाइ । आ खाइत काल खाली पारिवारिक गप्प हुअय । तय कयल जाइ जे कलकत्ताक इलिस माछ आ मिथिलाक हिलसा क स्वादमे की अन्तर अछि । निश्चय करथि जे काल्हि ऑफिससँ घुरैत काल न्यू मार्केटसँ शशिक लेल जनाचूर जरूर आनब । निर्णय करथि जे दोकानदार तेल गड़बड़ कऽ देने अछि आ काल्हि ऑफिस जाइत काल घुरेबाक अछि । तय कयल जाइ जे रवि दिन हमसभ बोटेनिकल गार्डेन घूमऽ जायब आ घुरतीमे मोकाम्बो मे खाना खायब । लेकिन भोर होइते ओ सभ किछु बिसरि जाथि । ने जनाचूर अबैक, ने हम सभ गार्डेन घूमी । हुनका कानो ने कोनो जरूरी काज पड़ि जाइन आ ओ कोनो दोस्त संगे निकलि जाथि । रातिमे देरसँ घर घुरला पर ओ रोज नव बहाना बनाबथि, नव खिस्सा गढ़थि । भौजीकेँ आ हमरा खिस्सा नीक लागय। भौजीक तामस बिला जाइन आ ठोर पर मुस्की आबि जानि ।

स्वतंत्र लेखनक बलपर कलकत्तामे जीवन यापन करब राजकमल लेल कठिन होइत गेलनि । अनुवादक प्रकाशन आ पारिश्रमिक लेल ओ कैक बेर दिल्ली गेलाह । कलकत्ताक प्रवासी मैथिल आ मैथिल संस्थासँ हुनका स्नेह सहयोग तँ भेटैत छलनि, मुदा एकटा वर्ग एहन छल जे दारू आ सेक्स सम्बन्धी हुनक कमजोरीक कारणेँ हुनकासँ घृणा करैत छल । विभिन्न प्रकारक व्यसन आ आर्थिक संघर्षक कारणेँ हुनकर शरीर दुर्बल भऽ गेलनि आ ओ दुखित पड़य लगलाह। हुनक पेट पर जे डेकरी (लम्प) छलनि से कलकत्तेमे शुरू भेल रहनि। विकट जीवन संघर्षसँ थाकि कऽ ओ कलकत्ता छोड़ि देबाक निर्णय कयलनि । ओहि कालक स्थितिक बारेमे धर्मयुगमे प्रकाशित अपन आत्मकथ्यमे ओ लिखैत छथि– 1963क पहली जनवरीकेँ राजकमल एकटा अत्यधिक सुन्दर डायरी किनने छल । ओहि समयमे ओ कलकत्तामे कलकत्ता मूवीटोन फिल्म स्टूडियो लग रहैत छल । नोकरी नहि छलै, काज-धंधा नहि छलै; दोस्ती, दुश्मनी, साहित्य, राजनीति किछु नहि छलै । ओ अपन डायरीमे सालक पहिल रातिमे किछु प्रतिज्ञा आ किछु यथार्थ नोट कयने रहय, जकरा ओही क्रमसँ लीखि देब बेसी ठीक रहत–

(क) समाजक वर्तमान परिस्थितिमे पढ़बाक-लिखबाक कोनो अर्थ नहि रहि गेल अछि । आदमी मशीन बनि जाए वा पागल भऽ जाय, तेसर कोनो रस्ता नहि छैक ।

(ख) सुख शांतिसँ जीबाक लेल हमरा लग आब यैह रस्ता बचि गेल अछि जे हम हिन्दीमे (वा भोजपुरीमे ?) फिल्म बनाबी अथवा युद्धनिरोधक झंडा उठाबऽ विदेशी पूंजीपतिक कृपा-सहायतासँ संसार-यात्रा पर निकलि पड़ी अथवा आर किछु नहि भऽ सकय तँ अपन गाम (हमर गाम कतय अछि ?) जा कऽ खेती करी, पोखरिक माछ पकड़ैत रही, शतरंज खेलाइत रही आ उग्रतारा भगवतीक श्रद्धा प्रमत्त पूजामे व्यस्त ग्रामीणक भीड़केँ अपन करेज पर सहैत रही ।

(ग) हमरा पाइक ततेक दिक्कत रहैत अछि जे पछिला कतेको मासँ हम कोनो किताब नहि किनने छी, एक्को टा मित्र की सम्बन्धीक घर नहि गेल छी आ ने बेनीप्रसाद कन्नौजक ओहिठामसँ मुश्के अम्बरक शीशीए किनने छी ।

नितान्त अनिश्चित भविष्य आ भारी मन लऽकऽ राजकमल कलकत्ता छोड़ि देलनि । पत्नी आ बेटीकेँ पिता लग राखि दिल्ली चल गेलाह । मुदा कलकत्ताक स्मृति हुनका मोहग्रस्त आ भावुक बना दैत छलनि । कलकत्ता छोड़लाक लगभग तीन मास बाद जुलाइ 63मे ओ कपिल

आर्यकेँ लिखैत छथि– हम एगारह अप्रैलकेँ कलकत्तासँ चल आयल छलहुँ । नवादा अयलहुँ । शशि आ दुनू लड़कीकेँ ओतय छोड़ि हम गया, पटना, बनारस, इलाहाबाद, आगरामे रुकैत पहली मइकेँ दिल्ली अयलहुँ । बीचमे एक हफ्ता लेल जयपुर आ एक हफ्ता लेल मसूरी गेल छलहुँ । अखन एतहि रहबाक विचार अछि, ओना, हमर कोन ठेकान, कखन कतऽ चल जायब । कलकत्ताक स्मृति बहुत सतबैत अछि । चौरंगीमे असकरे घुमैत साँझ गुजारि देब, पुतियारीक हमर ओ घर, ओतुक्का लोक, ललित, छेदीलाल, परमेश, अमरजी सभ मोन पड़ैत छथि । मुदा आब कलकत्ता नहि जायब । जा कऽ ओतय करबो की करब ? कोनो छोट आ मामूली शहरमे रहय चाहैत छी । जतय क्यो दोस्त नहि बनथ । जतय कमसँ कम पाइमे गुजारा भऽ सकय । कतहु बिहारेमे रहब । हजारीबागक आसपास वा राँचीक आसपास कोनो छोट कसबामे, जतय सौ सवा सौ टाकामे हमर परिवारक खर्च चलि सकय । दू सौ टाका प्रतिमास हम खाली पत्रिकामे लीखि कऽ कमा लैत छी । खैर, ई सभ सपना सुनेबाक लेल ई पत्र नहि लिखल अछि ।... सितम्बरमे कलकत्ता रेडियोसँ हमर प्रोग्राम अछि । संभव जे एहि लेल हम कलकत्ता जाइ । लोको सबसँ भेंट भऽ जाएत ।

63क अप्रैलसँ सितम्बर धरि राजकमलक जीवन बहुत अस्थिर रहलनि। कोनो एकठाम बहुत दिन धरि नहि टिकलाह । कलकत्तामे लेखनजीवी भऽकऽ ओ देखि चुकल रहथि, जे ओ मार्ग कतेक कठिन अछि । ओहि मार्गसँ ओ थाकि आ उबिया गेल छलाह । लेखन पर निर्भर रहलासँ लेखकीय स्वतंत्रता सेहो सीमित होइत रहनि । तेँ 63क अपन डायरीमे ओ लिखलनि–

1. आइ प्रॉमिस, आइ विल नॉट, आइ विल नेवर राइट फॉर मनी और फेम ।

2. फॉर मनी एंड फॉर सोशल सेक्यूरिटी आइ विल इंटर इनटू जर्नलिज्म बर्किंग फॉर सम डेली प्रेस ।

(हम प्रतिज्ञा करैत छी जे पाइ या प्रसिद्धिक लेल कहियो नहि लिखब। पाइ आ सामाजिक सुरक्षा लेल हम पत्रकारिता करब । कोनो दैनिक पत्रमे काज करब ।)

अक्तूबर 63मे ओ पटनामे स्थिर भऽ गेलाह । पहिने नवराष्ट्रमे काज कयलनि । फेर आकरा छोड़ि देलनि आ भारत मेल नामक एक अर्द्ध साप्ताहिक पत्रमे काज शुरू कयलनि । पत्रक उद्देश्य मालिकक आर्थिक-राजनीतिक स्वार्थ सिद्ध करब छल । राजकमल भारत मेलकेँ थोड़ेक स्तरीय बनेबाक प्रयास कयलनि । एहि पत्रक प्रूफसँ लऽकऽ सम्पादन धरिक काज हुनका करय पड़नि । ज्ञात नहि अछि जे भारत मेल ओ कहिया छोड़लनि । एहि पत्रक जमालपुर संवाददाताक रूपमे उमाशंकर सिंहसकेँ नियुक्त करैत ओ जे परिचय-पत्र जारी कयलनि, ताहि पर 20 जून 1964क तारीख अछि । भारत मेल जाहि तरहक पत्र रहय, ताहिसँ लगैत अछि जे राजकमलकेँ बहुत पाइ नहि भेटैत हेतनि। नोकरी कहियो हुनका सोहेबो नहि कयलनि । ई काज ओ शिवचन्द्र शर्माक आग्रह आ दबाब पर कयने छलाह । बुझाइत अछि अस्वस्थता बढ़ि गेला पर ओ ई नोकरी छोड़ि देने हेताह ।

संभवतः 64क अंतमे नोकरी छोड़ि देलाक बाद ओ फेरसँ स्वतंत्र लेखन पर निर्भर भऽ गेलाह । भिखना पहाड़ीमे एकटा डेरा लेलनि, जकर नाम रखलनि कामायनी । कामायनी ओ मृत्युपर्यन्त किराया पर रखने रहलाह। हालांकि ओहिमे ओ अपने बहुत कम रहि सकलाह । स्वास्थ्य सुधारक लेल आ कहियो काल पैसा-कौड़ीक अभावमे ओ गाम अथवा सासुर चल जाइत रहथि । महिसी आ चानपुराक किछु दिन रहैत रहथि, फेर घूरि कऽ पटना चल अबैत रहथि। आब हुनकर इएह जीवन चक्र भऽ गेल छलनि आ एहि जीवन चक्रसँ ओ अत्यन्त मर्माहत छलाह ।

65क जनवरीमे महिसी सँ जे पत्र ओ लिखने छलाह, ताहिसँ ज्ञात होइत अछि जे हुनक स्वास्थ्य नीक नहि छलनि आ ओ बहुत अभावमे रहथि। ओ लिखैत छथि–

प्रिय शिवमंगलजी,

...हम अखनो स्वस्थ नहि छी । स्थान परिवर्तनसँ नव कम्प्लेक्स पैदा भेल अछि । दूध आदिक पर्याप्त सुविधा अछि । तथाकथित मित्रक अभाव अछि– इएह एकटा नीक बात अछि ।... शशिजी अपन बाल-बच्चा समेत सकुशल छथि । एकटा बात आओर जरूरी अछि जे हम संयम नियमसँ रही । एक दू टा पैघ किताब लिखबा लेल हम जीवित रहय चाहैत छी । आओर किछु तँ हमरासँ भेल नहि । एकटा इएह काज टा भऽ सकैत अछि । धरिसक भइयो जाय, किएक जे आब तँ अन्न, भोग, पान-सिगरेट धरि पीबाक इच्छा नहि होइत अछि । मैथिलीमे मुहावरा अछि– अन्न नहि खाय, देवता मुँह जाय । से देवता हम जरूर बनि जायब– ओहने नपुंसक, ओहने कर्महीन । आदमी कहाँ रहि गेल छी । निवृत्ति मार्ग हमरा कहियो परिसन्न नहि पड़ल । आब बेबस भऽकऽ सएह करय पड़ि रहल अछि ।... कोनो नौकरी कऽकेँ निम्न मध्यवर्गक निम्नतर जीवन बिता कऽ मरि खपि जेबामे कोनो मजा नहि अछि । अहूँ सएह करब तँ हमरा दुख हएत । जे काज हम नहि कऽ सकलहुँ– अपन पारिवारिक चक्रक कारणेँ, अपन मिथ्या मोह आ मूर्खताक कारणेँ– से अहाँ कऽ सकैत छी । किएक तँ अहाँ कोनो शशिजी वा दिव्या संग बान्हल नहि छी ।... पाइ हो तँ धर्मयुग, इव्स वीकली, माधुरी, संडे स्टैंडर्ड आ अन्य पत्रिका बुक-पोस्ट सँ पठा देब। पत्र देब । सप्रेम, राजकमल चौधरी, 11.1.65 ।

राजकमल नाना प्रकारक व्याधिसँ ग्रस्त भऽ गेल छलाह । एहन अवस्थामे संयम-नियमसँ रहब हुनका लेल बहुत जरूरी छलनि । एहि बातक अनुभव ओ निरन्तर कऽ रहल छलाह । मुदा ओ कहियो संयम सँ नहि रहि सकलाह । संयमित आ नियमित जीवन बितायब हुनक स्वभावमे नहि रहनि । लोककेँ ओ कहल करथि जे हम आब शराब, गाँजा, सिगरेट सभ किछु छोड़ि देने छी; मुदा सभटा झूठ, ई सब हुनका कहियो नहि छुटलनि ।

महिसी-पटनाक चक्कर काटैत राजकमल अपन आर्थिक दशा सुधारबा लेल अनेक प्रकारक योजना बनौलनि । राजकमल फिल्मस, मॉडर्न इंडियन राइटिंग नामक अंग्रेजी संकलन आदि एहने योजना सभ छल, जकरा कार्यरूप देबामे राजकमल किछु प्रारंभिक प्रयास तँ कयलनि, मुदा वित्तीय कठिनाइक कारणेँ ओकरा अंतिम रूप देबामे असफल भऽ गेलाह । हुनक आर्थिक स्थिति बहुत गंभीर आ निराशाजनक छल। प्रकाशक पाइ नहि दैत छलनि । एक दिन क्रोध आ उत्तेजनामे ओ ज्योत्सना कार्यालयमे तोड़-फोड़ कयलनि, आ शिवेन्द्र नारायण पर हाथ छोड़ि बैसलाह । शिवेन्द्र नारायण मोकदमा करय चाहैत छलाह । राजकमलकेँ मोकदमाक पता चललनि तँ कहलथिन– जँ कठघराये

ठाढ़े हुअय पड़त तँ ओंकर खूनिए बनि कऽ ठाढ़ होयब । आ भोकदमाक बात दबि गेल । बादमे शंभूनाथ मिश्रकेँ ओ लिखलनि - हिन्दीक कैक टा पैथ प्रकाशक लग हमर पाइ अछि, मगर कतहुसँ एको टा पैसा नहि भेटल । शिवेन्द्र नारायण पिटला पर (1965 मे एकटा यैह सार्थक काज हम कयलहुँ) केस करबाक धमकी देलक । चारिपाँच टा पत्र लिखलहुँ, एक बेर ट्रंक पर गप्प करबाक प्रयास कयलहुँ– मगर साम्यवादी आलोचक नामवर सिंह एकटा पोस्टकार्डो देब उचित नहि बुझलनि । शरद देवड़ा बीस रानियों के बाइस्कोपक एको पाइ पारिश्रमिक नहि पठौलनि ।

राजकमल अपन बीमारीकेँ कहियो गंभीरतासँ नहि लेलनि । स्वास्थ्यक प्रति उदासीन रहलाह । पेटमे जे लम्प छलनि, तकरा चलते दर्द रहैत छलनि । ओहि दर्दकेँ ओ गाजा पीबिकेँ दबा दैत छलाह । ओकर उचित चिकित्सा नहि करबथि । फीस आ दवाइ दारू लेल हुनका लग पर्याप्त पैसा रहिनो नहि छलनि । हुनकर डेरा कामायनीमे सिरमाक ठीक उपर एकटा ससरफाँस लटकल रहैत छल । ई फाँसीक फंदा लोककेँ संत्रस्त करैत छल, किन्तु राजकमलकेँ अपन जीवनक वीभत्सता सँ सामना करबाक लेल साहस आ बल प्रदान करैत छल ।

65क अक्तूबरमे राजकमल गंभीर रूपसँ अस्वस्थ भऽ गेलाह। पेटक दर्द असह्य भऽ गेलनि । लम्प बेस पैथ आ सक्कत भऽ गेल छलनि । किछु गोटय आयुर्वेदिक चिकित्सा करयबाक सुझाव देलकनि। ई चिकित्सा पद्धति सस्त छल आ घटना आयुर्वेदिक अस्पतालक एकटा चिकित्सक हुनक परिचितो छलनि । राजकमल आयुर्वेदिक अस्पतालमे भरती भऽ गेलाह । वैद्य गोमूत्र कल्प करय कहलकनि । गायक गोंत जतेक पीबि सकथि, ततेक नीक । राजकमल निर्विकार भावेँ जतेक गोंत भेटनि, पीबि जाथि । एक दिन ओ हंसराजकेँ कहलथिन– हंसराज, हमरा जीबाक अछि आ जीबाक हेतु हम सभ किछु करैत आयल छी, करैत छी आ करब । हमरा जीबाक अछि । हम जीयब । अपन बीमारीक गंभीरता राजकमलकेँ चिन्तित कऽ देलकनि। आयुर्वेदिक अस्पतालमे पड़ल पड़ल ओ आत्मावलोकन करैत रहलाह। अपन चरित्रक स्वार्थ, वासना आ दुर्व्यसनकेँ चिन्हलनि; अपन व्यक्तित्वमे ओकर उपस्थितिकेँ स्वीकार कयलनि । ओ अनुभव कयलनि जे, हुनका अपन शरीरिक सीमाकेँ चिन्हबाक चाही छल । से नहि कए कें ओ अपने अहित कऽ रहल छथि । मुदा ई सब रुग्णावस्थाक अभिज्ञान मात्र छल, आचरणविहीन अभिज्ञान । अपन सम्पूर्ण जीवन पर सारगर्भित आ मार्मिक टिप्पणी करैत ओ अपन डायरीमे लिखलनि– माइन हैज बिन ए लाइफ ऑफ मच शेम एंड लैस हैपीनेस (जीवनमे हमरा सुख कम आ बदनामी बेसी भेटल) ।

आयुर्वेदिक अस्पतालमे राजकमल पांचे-सात दिन रहलाह । भूपेन्द्र अबोध अपन संस्मरणमे लिखने छथि जे आयुर्वेदिक अस्पतालमे ओ भरि दिन चित्रकारी करैत रहैत छलाह । एकसँ एक भयंकर, नग्न आ वीभत्स पेंटिंग । आ एकदिन अकस्मात अस्पतालसँ पड़ा कऽ ओ डेरा चल अयलाह ।

एहि बीमारीक मध्य शंभूनाथ मिश्रकेँ ओ एकटा पत्र लिखलनि। पत्रकेँ गोपनीय रखबाक हिदायत दैत ओ लिखलनि - एहि बीमारीमे शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक तीनू प्रकारक भौतिक तापक चरम सीमाक अनुभव भेल अछि । बीमारी भोगि रहल छी । मुदा आब अपन शरीरसँ तटस्थ भऽ गेल छी, जेना सुनल अछि जे साधु संन्यासी सभ तटस्थ भऽ जाइत अछि । ई देखब नीक लागल अछि जे हम अपन शरीर आ बीमारीसँ अलग छी । एहिसँ लाभो भेल अछि । आओर लाभ होयत । स्वस्थ भऽ गेलाक बादो ई तटस्थता जीवनमे काज देत आ हमर चरित्र एवं व्यक्तित्वमे सभयल दुर्गुणकेँ दूर करबामे सहायक होयत । हम नीक लोक नहि छी । छोट-छोट वस्तु लेल हम बेकल भऽ जाइत छी । जरूरत पड़ला पर हम ककरो कोनो मदति नहि कयने छी। सदैव अपने स्वार्थक पूर्तिमे लागल रहल छी । भरिसक स्त्री, पैसा, सुख-मौज, यश एहि सभक लेल हम स्वयं कें आ अपन निकटवर्ती लोककेँ ठकैत आयल छी । सत्य नहि, हम केवल मिथ्या जीवन जीवैत रहल छी। तेँ ई बीमारी हमरे हेबाक चाही छल, हमरे भेल । ई कोनो पापक फल नहि थिक– हमर अनुभवक फल थिक । हमरा शांत भऽकऽ एहि प्रतिफलकेँ भोगबाक चाही । हम पाप-पुण्य नहि मानैत छी । हमरा कोनो तरहक नैतिकता पर आस्था नहि अछि । स्वस्थ भऽ गेलो पर हमरा शराब, स्त्री, पैसा, यश, सुख मौज सभ चीज चाही । खाली मिथ्या जीवन नहि । हम सत्य जीवन बितबय चाहब । मुदा हमर ई सत्य की अछि ? आ झूठ की अछि ? यैह बात पछिला कैक दिनसँ हम सोचि रहल छी । तइयो अहाँकेँ बता नहि सकब । यैह बुझि लिअऽ जे अपन सीमाकेँ बुझबाक चाही । जे आदमी अपन सीमा- शारीरिक आ मानसिक सीमा- नहि बूझि पबैत अछि, यैह झूठक जीवन बसर करैत अछि । हम सभ कतेक छोट छी । यैह लघुता हमरा सभक सीमा अछि। हमरा सभकेँ अपन शरीरसँ यैह हेबाक आकांक्षा नहि करबाक चाही। आकांक्षा हम कयने रही आ यैह आकांक्षा हमर असत्य जीवन छल । हम यैह गलती कयने छलहुँ ।

राजकमल किछु दिन धरि संयमपूर्वक गोमूत्र-कल्प करैत रहलाह । हुनक स्वास्थ्य सुधरि गेलनि । ओ पटनाक अव्यवस्थित आ कुसंयमित जीवन त्यागि सासुर चल गेलाह आ फरवरी 1966क मध्य धरि चानपुरेमे रहलाह । चानपूरामे जाड़ बितबैत ओ एक घर एक श्रेष्ठ रचना करैत रहलाह । हुनका बुझेलनि जेना आब ओ ठीक भऽ गेल छथि, आब हुनका किछु नहि हेतनि । एहि विश्वासक कारणेँ हुनकर सभटा सयम नियम टूटि गेलनि । ओ फेरसँ जीवनक घुरान डेरा अपना लेलनि । फल ई भेल जे फरवरी 66क अंतमे ओ पुनः गंभीर रूपसँ दुखित पड़ि गेलाह आ हुनका पटनाक राजेन्द्र सर्जिकल ब्लॉकमे भरती करा देल गेलनि । हुनका तीव्र मूत्रावरोध छलनि । पटनाक प्रसिद्ध सर्जन डा. यू.एन. साही आ डा. जितेन्द्र सहाय हुनक चिकित्सा करऽ लगलथिन। रातिक दू बजे धरि हुनक ऑपरेशन चलैत रहलनि । राजकमल फरवरी 66सँ जुलाइ 66 धरि अस्पतालमे रहलाह । एहि पाँच मासमे तीन बेर हुनक ऑपरेशन भेलनि । 5.4.66कें एकटा पत्रमे अपन स्थितिक चर्चा करैत ओ प्रकाश जैनकेँ लिखलनि अहाँक पठाओल 130/- भेटि गेल अछि । श्री गोपाल कृष्ण कौल (जयपुर) 60/ पठौलनि । हमरा सन दुखिताह लोक ई सभ कर्जा कोना सधाओत ? आइ एकटा स्पेशलिस्ट कहलनि जे हमरा कैंसर नहि अछि, मैलिग्नेंट लिम्फो सर्कोमा भऽ सकैत अछि । एकर इलाज ऑपरेशनसँ संभव अछि । ब्लाडर सँ पीज निकलब एखनो बंद नहि भेल अछि, तेँ ऑपरेशन नहि कऽ रहल छथि । हम ठीक छी । मजगूत छी । मोनाकेँ पठा दियनु। शशिकेँ सहारा भेटनि । ओ बेचारी मने मन बहुत घबड़ा गेल छथि । अहाँ नहि आयब ?

छओ दिनक बाद ओ जीवकान्तकेँ लिखैत छथि– प्रिय जीवकान्त,

अपनहि दू आखर लीखि रहल छी । रोग बड्ड कठिन, आ बड्ड कष्टकर । मृदा, जीबाक अछि । अखन मरबाक मन नहि होइत अछि। सप्रेम, राजकमल 11.4.66 ।

राजकमलमे अदम्य जिजीविषा छलनि । मृत्युक कल्पनासँ ओ सिहरि जाइत छलाह । बाल-बच्चा छोट छलनि आ एखन हुनका बहुत किछु लिखबाक छलनि । मुदा कैंसरक संदेह हुनक विश्वासकेँ हिला देलकनि। धेलनि जे आब ओ नहि जीताह । शशि, दिव्या, मुक्ता, नीलू ओही दिन नवादासँ हुनक भेंट करय अयलनि । राजकमल अपन धीयापूताकेँ देखि विह्वल भऽ गेलाह । हुनका लगलनि उग्रतारा एतेक कसाइ आ निर्दयी नहि होतीह जे बेचारी शशि आ बेकसूर बच्चासँ हमरा छीनि लेतीह । ई हुनक सहज विश्वास आ आन्तरिक प्रार्थना रहनि । मुदा तर्क-बुद्धि कहनि मृत्यु संभव अछि । कहापोहक एही अवस्थामे ओ एकटा वसीयत लिखने छलाह जे अप्राप्य अछि । कहियो एहनो होइत छल जे रोग बढ़ि जानि आ शारीरिक पीड़ा असहनीय भऽ जानि, तखन इच्छा होनि जे मरि जाइ । अस्पताल डायरी 1966मे 26 मइकेँ ओ लिखलनि– प्लीज स्टॉप दि वर्ल्ड, आइ वांट टु गेट ऑफ फ्रॉम दिस अर्थ । (आब किछु नहि, बस मृत्यु चाहैत छी ।)

हुनक बीमारीक समाचार दिनमान, सर्चलाइट आदि कैक टा पत्र-पत्रिकामे छपल आ सहायताक अपील कयल गेल । राजकमलसँ ईर्ष्या आ घृणा केनिहार लोक एहि अपीलसँ भड़कि गेलाह आ राजकमलक विरुद्ध दुष्प्रचार शुरू कयलनि । नई कहानियाँमे मधुकर गंगाधरक वक्तव्य छपल जे राजकमलक बीमारीक इलाज चलि रहल अछि, ओ अभाव आ उपेक्षाक बहाना कए लोकसँ पाइ ऐंठय चाहैत छथि । ओ चिट्ठी लिखि कऽ लहरक सम्पादक प्रकाश जैन आ मनमोहिनीकेँ राजकमलक विरुद्ध भड़कौलनि । राजकमल 12 जूनकेँ अपन अस्पताल डायरीमे लिखैत छथि– मधुकर एंड लहर पीयुल्स हैभ ज्वाइड हैंड्स इन डर्टी प्रोपेगैंडा अगेंस्ट मी । दी बेस्ट इज टु कीप साइलेंस एंड टू रिप्लाइ हेन दि प्रोपर टाइम कम्स (मधुकर आ लहर सँ जुड़ल लोक मिलि कऽ हमर खिलाफ दुष्प्रचार कऽ रहल अछि । एखन चुप्पे रहब नीक अछि। उचित अवसर पर जवाब देल जेतैक ।)

एक दिन डा० चतुर्वेदी हुनका कहलकनि जे अहाँक शिश्नमे यूरेथ्रल कैंसर भऽ सकैत अछि आ जँ से भेल, तखन शिश्न काटय पड़ि सकैत अछि । ई जानकारी राजकमलकेँ बेचैन कऽ देलकनि । सोचलनि जँ शिश्न कटाबहि पड़त, तखन जीबिए कऽ की करब; एहिसँ नीक जे आत्महत्या कऽ ली । ओ डायरीमे लिखैत छथि– इफ आइ हैभ टु कट माइ पेनिस, आइ शिल कमिट सुसाइड । ह्वाट इज दि प्लेऑफ लिभिंग विदाउट इट ? ह्वाट इज दि यूस ऑफ लिभिंग ? (जँ शिश्न कटबहि पड़त, तखन जीबाक आनंद कोन ? कथी लेल जीब ?)

मुदा ई नौबत नहि अयलनि ।

अस्पतालमे राजकमलकेँ एक बातक दुख सभसँ बेसी छलनि। हुनक तीन-तीन भाइ पटनामे नोकरी करैत छलथिन, मुदा क्यो हुनक सहायता नहि केलकनि । शंभूनाथ मिश्रकेँ पत्र लिखैत राजकमल बहुत व्यथित भऽकऽ एहि बातक उल्लेख करैत छथि– एहि सभसँ बेसी दुख एहि बातक भेल जे हमर चारि भाइ पटनामे रहैत छथि । तीन भाइ नोकरी करैत छथि । मुदा एक्को भाइ कहियो एक पाइक दवाइयो अनबाक कष्ट नहि कऽ सकलाह ।

राजकमलक आर्थिक स्थिति एहन नहि छलनि जे पटनामे परिवार राखि सकितथि । हुनक पत्नी आ धीयापूता नवादामे रहैत छलनि आ बीच बीचमे आबि कऽ देखि जाइत छलनि । अस्पतालमे हुनक सभसँ बेसी सेवा चन्द्रमौलि उपाध्याय आ हुनक पत्नी कयलकनि। हंसराज, आलोकधन्वा आदि प्रायः प्रतिदिन हुनका देखय आबथि । राजकमल चन्द्रमौलि उपाध्यायकेँ अपन सर्वाधिक प्रिय मित्रक रूपमे स्मरण करैत छथि । हुनक पत्नीकेँ ओ मेमसाहेब कहैत छलाह । देहगाथा ओ हिनके दुनूकेँ समर्पित कयने छथि । चन्द्रमौलि उपाध्याय आ हुनक पत्नी समय समय पर राजकमलक आर्थिक सहायता सेहो करैत छलाह । उपाध्याय कविता लिखैत छलाह आ जीविकाक लेल चाहक दोकान करैत छलाह । राजकमलक मृत्युक बहुत बाद ओ दुनू पता नहि कोन कारणेँ आत्महत्या कऽ लेलनि । उपाध्याय राजकमलकेँ धार्मिक आ नैसिक जीवन जीबा लेल प्रेरित करैत छलनि । हुनके कारणेँ राजकमल अपन जीवनकेँ नव ढंगे बितयबाक बात सोचैत छलाह ।

तंत्र दिस राजकमलक झुकाव अस्पतालमे भेल छलनि । ओ आचार्य रमानाथ झासँ तंत्रक दीक्षा लेबऽ चाहैत छलाह । मुदा रमानाथ बाबू एहि लेल तैयार नहि भेलाह । प्रणव मंत्र ओँ दैत कहलथिन– अहाँ गाम जाउ । उग्रताराक सेवा करू । हमहूँ हुनक दर्शन कऽ आयल छी। वैह अहाँकेँ त्राण करतीह ।

राजकमलक स्वास्थ्यमे जखन पर्याप्त सुधार भऽ गेलनि आ हुनका बुझा गेलनि जे आब ओ बचि गेलाह, तखन ओ अपन भावी जीवनक योजना बनबय लगलाह । हुनक पहिल योजना छलनि जे गामेमे रहि कऽ खेती-बारी करी आ परिवार राखी । दोसर योजना पटनामे प्रेस जमायब, प्रकाशन आ पोथीक दोकान शुरू करब छलनि। अंतिम योजना छलनि जे छओ मास गाममे रहब आ छओ मास आन कोनो ठाम रहि कऽ किताब लिखब ।

राजकमल जुलाइ 1966क अंतिम सप्ताहमे अस्पताल छोड़ि देलनि आ पिछना पहाड़ी चल अयलाह । ओ रोगसँ पूर्णतया मुक्त नहि भेल छलाह । छओ अगस्तकेँ जीवकान्तकेँ पत्रमे लिखैत छथि– अस्पतालसँ दू सप्ताह पहिने चल आयल छी । मुदा, स्वस्थ नहि छी । आब हमरा जौंडिस भऽ गेल अछि, लीवर एकदम्मे काज नहि करैत अछि । दोसर बात, अंतड़ीमे ओ रोगाधिराज बैसले छथि एखनधरि... ।

एहि पत्रक ठीक चौदह दिनक बाद महिसीसँ ओ दोसर पत्र लिखैत छथि– आन कोनो उपाय नहि घाबि, गाम चल आयल छी, –उग्रतारा अहीठाम छथि । थरि दशमी एसहि रहब । जण्डा रोगक प्रकोप किछु कम भेल अछि। गामक शांत-स्वच्छ परिवेशमे आनो कॉमप्लीकेशंस (शिकायत) घटल जाइत अछि ।... एहि ठाम बड्ड मन लागि रहल अछि । गामक कातसँ कोसीक विराट बांध जाइत अछि । ओहि पार अपार जलराशि, एहि पार हरियर धरती । साँझ खन उग्रतारा मंदिर जाइत छी । शतरंज खेलाइत छी । भांग पीबाक इच्छा करैत छी । (पिबैत नहि छी ।) आरो कतेक की करैक इच्छा करैत छी, जेना, कोनो आन्हर, बताहि, कारी पियासलि स्त्रीसँ प्रेम । एहि स्त्रीक नाम भेल उग्रतारा ।

लगैत अछि ई उग्रतारा आर क्यो नहि, बनारसक अल्लका छलीह । राजकमल लग अलकाकेँ उग्रतारा आ उग्रताराकेँ अलका बनैत देरी नहि लगैत छल। अलका संगे बहुत दिनसँ हुनका पत्राचार भऽ रहल छलनि । ई हुनक अंतिम प्रेम प्रसंग छलनि । अस्पताल डायरीमे ओ लिखैत छथि– नंदा इज कमिंग नियरर ऐ बाइ ऐ । ह्वाट शिल हैपेन टु दिस रिलेशन ? एनी वे, आइ शुड कीप माइ हैंड्स क्लीन। माइ रिप्लाइज शुड बी क्लियर कट एंड फ्रैंक

(नंदा संग हमर संबंध प्रगाढ़तर भेल जा रहल अछि । आखिर एहि सबधक भवितव्य की अछि ? जे हो, हमरा निर्मल रहबाक चाही आ अपन जवाबमे स्पष्ट आ साफ ।)

डायरीक ई नंदा वास्तवमे अलका छलीह ।

राजकमल नवम्बर 66क पहिल सप्ताहमे अलकासँ भेंट करय बनारस गेलाह । एखनधरि ओ दुनू एक-दोसरकेँ देखने नहि रहथि । शंभूनाथ मिश्र माध्यमक काज करैत छलाह । शंभूनाथ मिश्रक ऑफिसमे बैसि कऽ राजकमल एहि यात्राक अनुभवकेँ लिपिबद्ध कयने रहथि । रोग जर्जर शरीरक कारणेँ राजकमल छओ घंटाक यात्रासँ बहुत थाकि गेल छलाह । किछुए दिन पहिने ओ स्वस्थ भेल छलाह । एहन शारीरिक अवस्थामे एहि तरहक एडवेंचर सँ ओ डरि गेल छलाह । अलका उत्तेजना आ घबड़ाहटक अनुभव कऽ रहल छलीह ।

बनारससँ घूरि कऽ राजकमल गाम चल अयलाह । अठारह नवम्बरकेँ ओ जीवकान्तकेँ जे पत्र लिखलनि, ताहिसँ लगैत अछि जे रोमांस आ एडवेंचरक प्रति हुनक आकर्षण एखनो कम नहि भेल छलनि । ओ लिखैत छथि– हम पटनामे नहि छी । आब पटनामे कहियो नहि रहब। किछु दिन गाममे छी ।... बेसी भाग यायावर रहब । बहता पानी निरमला वैह यायावरी सिद्धांत थिक । बहुत दिन एकके पारिवारिक मोहमे, स्थान-काल-पात्रक मोहमे बैसल रहलहुँ । आब देह टूटल अछि, मुदा मोन स्थिर नहि अछि । तैं आब बैसब नहि दू-चारि वर्ख । अहूँ की एक्के ठाम धुड़धुनमे लागल छी । कतहु भागि जाउ, कोनो आन ठाम, अनचिन्हार देसमे । चीन्हल परिवेश मनुक्खकेँ क्लीव आ आलसी बना दैत छैक ।

दिसम्बरक शुरूमे राजकमल फूसक एकटा घर बनबौलनि । खूब सुन्दर आ सुरुचिपूर्ण बंगला । मुदा हुनक मनःस्थिति नीक नहि छलनि। मोन खिनखिन करैत रहैत छलनि । मोनमे अलका आ अलका सम्बन्धी दुविधा चक्कर कटैत रहैत छलनि । बीस दिसम्बरकेँ उपाध्यायकेँ ओ चिट्ठीमे लिखलनि - हर कामसे मुझे अरुचि हो गई है । कुछ अच्छा नहीं लगता । लिखना-पढ़ना भी नहीं । हेनरी मिलर की नई किताब बिस्तरे के सिरहाने खुली पड़ी है । पढ़नेमे जी नहीं है। जी कहाँ है ?

जी ये कहता है कि अब उसी मैखाने में
सुबह आयी है जहाँ आती थी कभी शाम
कोई बात नहीं बनती है दिले-नादाँ से
लरजते हाथों से क्यों छूट जाता है जाम

इच्छा नहीं होती है कि उसके पास जाएँ । मगर जाना तो मुझे होगा । जाम हाथों से छूट कर टूट-बिखर जाए, जो भी होना है, हो जाए । जो भी टूटना है सब टूट जाए ।

आ ओ ठीके सभ मोह-मायाकेँ तोड़ि अलका लग चल गेलाह । भरिसक फरवरी 67क दोसर सप्ताहमे । अप्रैलक मध्यमे घुरलाह । एहि बीच ओ अपन घर-परिवारक कोनो खोज-खबरि नहि लेलनि । पत्नी शशिकान्ता व्याकुल आ व्यथित भऽकऽ मनमोहिनी केँ टूटल फूटल हिन्दीमे लिखलनि– बहुत दिन से मैं सोच रही थी जो तुमको एक चिट्ठी दूँ । लेकिन नहीं दे सकी । माफ करना । देखो आज चार महीने से राजकमल जी का पत्र मैंने नहीं पाया, इसलिये बहुत चिन्तित हूँ । बहन अगर तुमको पता हो तो जरूर पत्र देना । तुमसे भीख माँग रही हूँ दया करना । इधर देखो दिव्या बहुत बीमार रहती है। सर्दी, बोखार, आँख, कान सब मिलकर तबाह किया है । मैंने कमलजी को तीन-चार पत्र दिया । एक का भी जवाब मैंने नहीं पाई। क्या करूँ मुसीबत में पड़ी हूँ । बहन भगवान को कहना है जो मनुष्य पर जब दुख पड़ती है तब हमको याद करते हैं सो मैं अभी तुमको याद करती हूँ । मैंने इतने दिन लज्जावश तुमको पत्र नहीं दे सकी । अब सहारा लेने के वास्ते लिख रही हूँ । बहन अगर पता हो तब भी अगर नहीं हो तब भी जरूर एक पत्र देना । आभारी रहूँगी । तुम्हारी सहायता जीवनमे नहीं भूलूंगी बहन, याद रखना ।

बाइस मइ 67क पत्रमे ओ अंतिम बेर अप्रत्यक्ष रूपमे अलकाक उल्लेख करैत छथि-- पत्र लिखने लायक लड़की एक के सिवा दूसरी कौन रह गई है, और एक ही लड़की को कितने अरसे तक लिखते रहा जाए,... ।

दस जनवरी 1967केँ हुनकर पिताक देहान्त भऽ गेलनि । सिमरिया घाट पर अंतिम संस्कार भेलनि । राजकमल संस्कारमे नहि गेलाह । जेठ पुत्र हेबाक कारणेँ मुखाग्नि हुनके देबाक रहनि । मुदा बहुत पहिने कोनो बात पर रुष्ट भऽ कऽ ओ कहि देने छलथिन जे आगि नहि देब, से नहिएँ देलथिन । शेष सभ संस्कार ओ विधि विधानक अनुसार आ निष्ठापूर्वक सम्पन्न कयलनि । श्राद्धक बाद ओ जीवकान्तकेँ पत्रमे लिखलनि– एकटा दुर्घटना एहि मध्य भेल, जे हमर पिता गत 10 जनवरीकेँ स्वर्गवासी भेलाह ।... आब घर-परिवारक सभटा बोझ माथ पर खसि पड़ल अछि । तीन टा अनुज कॉलेजमे पढ़ैत छथि, एकटा बहीनक विवाह आगाँ बर्ख करइए पड़त । पितृ श्राद्धमे दस हजार टाका खर्च कयना गेल ।... मुदा, एहि सभ समस्यासँ हम विचलित अथवा कि करोमि गोविन्दऽ नहिछी । हम अपन मुक्ति आ स्वच्छन्दताकेँ सुरक्षित रखैत परिवारक प्रति अपन दाय आ दायित्वकेँ सम्हारि लेब– ई हमर विश्वास अछि ।

एही पत्रमे ओ आगाँ लिखैत छथि– आशा अछि, अहाँ ग्राम आनन्द (अर, की ग्राम्य-आनन्द ?)मे तल्लीन छी । एहेन इजोरिया राति-आइये पूसी पूर्णिमा थिक– एहेन कबई माछ-एहेन जुआन जोरगर गोंढ़ि कन्या, ... मनुक्खकेँ मुक्तिक लेल आन किछु नहि चाही ।

हमरा लेखेँ ने देसमे अकाल पड़ल अछि, आ ने हम कोनो सुखक अन्हारमे डुबल छी । उम्मेदवार एम.एल.ए., एम.पी. आदिक जीप, मोटर साइकिल प्रतिदिन दलान लग ठाढ़ होइत अछि, प्रतिदिन हम पहिने सँ बेसी स्वस्थ आ शान्त भेल जाइत छी ।

गामसँ आब अटूट लागि भऽ गेल अछि । कवि राजकमल आब सभ दिन गामहि रहताह । एकबेर अहाँ हमरा गाम आउ ।

1967क आम चुनावक समय राजकमल गाममे छलाह । कांग्रेस पार्टीसँ लोकक मोहभंग भऽ गेल रहैक । कांग्रेसक अनेक नेता भ्रष्टाचारमे लिप्त छल । राजकमल सेहो कांग्रेसी सत्ताक विरुद्ध भऽ गेल छलाह । तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री ललित नारायण मिश्र चुनाव प्रचारक लेल महिसी आवश्यक रहथि । राजकमलक दिआदीमे हुनक कुटमैती रहनि। जखन राजकमलकेँ हुनक कार्यक्रमक जानकारी भेलनि तँ ओ प्रण कऽ लेलनि जे ललित नारायण मिश्रकेँ महिसीमे प्रवेश नहि करय देबनि । ओ गामक किछु युवककेँ संगठित कयलनि आ लाउड स्पीकर पर ललित नारायण मिश्रक विरुद्ध नारा लगबैत गाममे जुलूस निकाललनि। देआद-बाद हुनक एहि क्रियाकलाप अत्यन्त क्षुब्ध आ दुखी भेलाह । राजकमलक घरक ठीक सामने वाला दलानपर बैसकी शुरू भेल । ओ राग विचार करय लगलाह जे की कयल जेबाक चाही । समस्या छल जे अपने लोक अपन कुटुमकेँ गाम नहि आबय देत तँ की प्रतिष्ठा रहत । राजकमलकेँ हुनका सभक अभिमत ज्ञात भेलनि

तँ माइक्रोफोन उठाकऽ बाजय लगलाह– अहाँ सभ सुनि लिअऽ। ललित नारायण मिश्र जँ कुटुम्ब रूपमे महिसी औताह तँ हम हुनकर स्वागत करबनि, छप्पन प्रकारक सरकारी खुऔबनि; मुदा जँ ओ राजनेताक रूपमे आबऽ चाहताह तँ हम किन्हु हुनका महिसीमे प्रवेश नहि करय देबनि। फलतः ललित नारायण मिश्र महिसी नहि अयलाह, सहरसेसँ घुरि गेलाह।

महिसिएक एकटा आओर घटना अछि। महिसी ब्लॉकमे कोनो वर्मा बी.डी.ओ.क रूपमे पदस्थापित भऽ कऽ आयल रहय। ओ बहुत उदंड आ घमंडी रहय। एक दिन साँझकेँ ओ जुत्ता पहिरनहि उग्रतारा मंदिरक परिसरमे टहलैत रहय। ओकर अफसराना शान देखि कऽ राजकमलकेँ रहल नहि गेलनि। ओ जा कऽ ओकर कालर धऽ लेलथिन आ गरजलाह– ऐ वर्मा, सुनो! सरकार ने तुम्हें इसलिए नहीं भेजा है कि तुम यहाँ की संस्कृति को जूते तले रौंदो। तुम हमारे गाँव के मेहमान नहीं होते तो तुम्हें सबक सिखा देता। जाओ, तुम्हें माफ कर दिया। लेकिन ऐसी हरकत फिर मत करना।

स्वर्गीय रामकृष्ण झा 'किसुन' सुपौलमे पाँच आ छओ फरवरी 1967केँ मैथिलीक नवकविता पर एकटा द्विदिवसीय सेमिनारक आयोजन कयने रहथि। एकर आतिथ्य राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला समिति कयने रहय। एहि अवसर पर एकटा कवि सम्मेलन सेहो भेल छल। राजकमल एहिमे आमंत्रित कयल गेल छलाह। रामानुग्रह झा हुनका महिसीसँ आनय गेल रहथि। जखन ओ हुनका घर पर पहुँचलाह तँ एकटा बुढ़िया मुसहरनी हुनक बंगला लेबैत रहनि। काज खतम कए जखन ओ बोनि मांगय अयलनि त कहलथिन– एखन नहि, साँझ खन अबिहेँ।

–से किऐक मालिक?

–अरे, साँझ खन अयबेँ तँ एक बेर चुम्मो तँ देबेँ।

बुढ़िया राजकमलक एहि परिहाससँ लजा कऽ चल गेलि।

अपन संस्मरणमे ओ लिखैत छथि जे सुपौल लेल जखन राजकमल विदा भेलाह तँ अपन पितिऔत हितेन्द्रकेँ संग कऽ लेलनि आ जा कऽ उग्रताराकेँ गोड़ लगलनि। ओहि समयमे महिसीसँ बनगाँव धरि पैदल आबय पड़ैक। रामानुग्रह झा लिखैत छथि जे महिसीसँ बनगाँव धरि अबैत-अबैत राजकमल आ हितेन्द्रकेँ पाँच बेर पात्र प्रवृत्ति भेलनि (पाँच बेर गाँजाक चिलम पिलनि)। बनगाँवसँ सहरसा टमटमपर अयलाह। सहरसामे तीन बोतल शराब किनलनि। स्टेशन आबि तीन टा फस्ट क्लासक टिकट लेलनि आ सुपौल पहुँचैत-पहुँचैत तीनू बोतल पीबि गेलाह।

शैलेश कुमार पाठक लिखैत छथि– राजकमलजी एकटा खुलल पुस्तक जकाँ एकदम साफ, रहस्यहीन छलाह। हुनका लेना जकाँ हम सरल, सहज आ बोहेमियन पौलिमनि; ओ खूब गाँजा धुकैत रहथि आ सिगरेट पिबैत रहथि। चाह, पान आ प्रायः तमाकुलक तँ अखंड सेवन चलैत छलनि, तथापि ई सब ओ केवल भाइजी (किसुनजी)सँ बचा कऽ हुनका अनुपस्थितिएमे करैत छलाह। प्रायः यैह बूझि कऽ भाइजी बेसी काल एम्हर-ओम्हर ध्वस्त भऽ जाइत छलाह।

सुपौलवला एहि सेमिनारक अध्यक्षता राजकमले कयने छलाह दोसर दिन संध्या काल मेला स्थल पर कवि सम्मेलन भेल। कवि सम्मेलन समाप्त भेलाक बाद राजकमल, रमानन्द रेणु, कीर्त्तिनारायण मिश्र आदि मेला घुमय गेलाह। मेलामे नौटंकी चलैत रहैक। राजकमल ककरोसँ पुछलथिन नौटंकीमे छौंड़ियोसब छैक? जवाब भेटलनि– चारि पाँच टा। राजकमल कहलथिन की हौ कीर्त्ति, कने काल नौटंकी नहि देखबह? एखन किसुनजी सेहो नहि छथि। निर्णय पक्षमे भेल आ ओ सभ नौटंकी दिस बढ़ि गेलाह। नौटंकीक मैनेजर कवि छल आ सम्मेलन मे काव्यपाठ कयने छल। हिनका सभकेँ देखि लग आयल तँ राजकमल कहलथिन - इस लड़की का डांस देखना चाहते हैं और दो एक गाना सुनना चाहते हैं।

मैनेजर हिनका सभकेँ गेट पर लऽ गेल। गेटकीकेँ कहलक– ये कवि लोग हैं। इन्हें भीतर जाने दो।

गेटकी बाजल– लेकिन अंदर तो एक्को कुर्सी खाली नहीं है।

कविलोकनिमे सँ क्यो बजलाह– हमलोग बैठेंगे नहीं। खड़े-खड़े देख सुन लेंगे। ताहि पर मैनेजर बाजल - ठीक है, कविजी के लिए कुर्सी की जरूरत नहीं है। ये लोग कुछ देर खड़े-खड़े ही देख लेंगे। ई सुनिते राजकमल तामसेँ बताह भऽ गेलाह। बिहाड़ि जकाँ निकललाह आ गेट पर आबि कऽ गरजय लगलाह– क्या कविजी ऐसा निरीह होता है कि उसे कुर्सी की जरूरत नहीं होती? क्या समझ रखा है तुमलोगों ने कवियों को? देखो, अब मैं कवि राजकमल नहीं हूँ। तुम मुझे मुफ्त में देखने वाला समझते हो? घोट्टा, बेईमान। अभी तुम्हारी नौटंकीमे हंगामा करा देंगे। सारे परदों में आग लगा देंगे। मैं अब कवि नहीं, केवल राजकमल चौधरी हूँ, राजकमल चौधरी।

हंगामा भऽ गेल। मेलाक सचिव आनन्द मोहन दास (मदन बाबू) मैनेजरकेँ बजा कऽ डंटलथिन, मुदा राजकमलक क्रोध शांत नहि भेलनि। फेर किसुनजी बुझौलथिन। नौटंकीमे कुर्सी लगाओल गेल। राजकमल चारि-पाँच मिनट देखलनि आ निकलि गेलाह। शांत आ प्रसन्न। मैनेजरक पीठ थपथपबैत कहलथिन– एक्ट्रेस सब खूब बढ़िया है। आप बुरा तो नहीं मान गए? भइ, अपन तो कभी कभी यों ही बिगड़ जाते हैं। असल में मैं अपमान कतई बर्दाश्त नहीं कर सकता। जाइए, जो हो गया हो गया। अच्छा, अलविदा!

राजकमल सुपौलसँ घुरलाह तँ जीवकान्त, धीरेन्द्र आ रेणु हुनका संगे महिसी अयलाह। रेणु, राजकमलक बनाओल बंगलाक आकर्षक वर्णन कयने छथि - जहिना भगवतीक उग्रतारा दर्शनीय एवं पूजनीय, ओहिना कवि कुटीर-फूसक निर्मित, पूर्ण कलाकारितासँ भरल-पुरल आ गाम भरिक लोकक उल्लास मध्य अवस्थित ओ रम्यगृह। कैक हजार टाकाक व्ययसँ निर्मित छल ओ कुटी। लेखन-कक्ष, विश्राम-कक्ष आ मनोरंजन कक्षमे बँटल।

राजकमल अपन जीवन कालमे यैह टा घर बनबा सकल छलाह।

राजकमल अभ्यागत कवि सभक लेल मनोरंजनक आयोजन कयलनि– बंगट झाक कीर्त्तन। दरी जाजिम बिछाओल गेल। रोशनीक प्रबंध भेल किन्तु बंगट झाक कतहु पता नहि। रातिक दस बाजल, एगारह बाजल, बारह बाजल। बंगटक कोनो पता नहि। खोजी सभ निराश घुरि आयल। तामसेँ लहलह करैत राजकमल बेंत लऽकऽ निकललाह– आइ बंगटक खाल खींचि लेब। मुदा बंगट निपत्ता। भोरमे बंगट अचानक मंदिर लग प्रकट भेल। राजकमल क्रोधसँ कँपैत मंदिर पर पहुँचलाह। बंगटकेँ पकड़ि कऽ हुनका समक्ष आनल गेल। बंगटकेँ अभ्यागत कवि सभक समक्ष घुमाओल गेल– यैह छथि बंगट। मुदा बंगट चुप। मुँह सूखल। राजकमल बंगटकेँ दोकानपर लऽ गेलाह। भरि पेट चूड़ा दही खुऔलथिन। बजलाह– गाउ बंगट, अहाँकेँ यैह दण्ड।

अप्रैल 1967क मध्यमे राजकमल बनारससँ घुरि कऽ पटना चल अयलाह। छब्बीस अप्रैलकेँ तत्कालीन शिक्षा मंत्री कर्पूरी ठाकुरकेँ

अपन योथी मुक्तिप्रसंगक सरकारी खरीद लेल एकटा आवेदन पत्र देलथिन, जकर जवाब हुनका मृत्युपर्यन्त नहि भेटलनि । अलकाक स्मृति एखन ताजा छलनि । मोन मे बेर बेर विद्यापतिक एकटा पद गूंजैत रहैत छलनि । सत्ताइस अप्रैलकेँ ओ जीवकान्तकेँ लिखलनि– आइ-काल्हि विद्यापतिक एकटा पंक्ति बेसी काल मोन पड़ैत अछि, कत न वेदन मोहि देसि मदना । अहाँकेँ सौंसे पद मोन अछि ? मोन हो, तँ लीखब ।

मुदा एहि सभसँ ओ किछु सीमा धरि थाकि सेहो गेल रहथि । आसक्ति आ विरक्ति, स्वेच्छाचरिता आ अनुशासन सम्बन्धी परस्पर विरोधी विचार हुनक मनकेँ मथैत रहैत छलनि । एही पत्रमे ओ लिखैत छथि आब गाम घुरि जायब । आब शहर-बजार, मेडअप स्त्रीगण, रेस्त्रां, झमटगर स्त्री-गाहक छाहरिमे बैसल, आन सभ किछु बिसरि जायब । मुदा गाम अबिते जेना ओ फेर जीवन-रससँ परिपूर्ण भऽ जाइत छथि । जीवकान्त केँ लिखैत छथि : गाममे आबि हमर बधस कतेक कमि गेल अछि । जीवकान्तक निराशाजनक स्वरक विरुद्ध लिखैत छथि – मुदा ई आशाहीन स्वर किएक ? प्रतीक्षा रहबाक चाही, –आन कोनो वस्तुक नहिओ तँ कोनो मदिराक, कोनो स्त्रीक, कोनो रेलगाड़ीक, कोनो सखा सन्तानक, कोनो रोगक, कोनो शोक-भोगक प्रतीक्षा ।

प्रतीक्षा माने परीक्षा, आ परीक्षा माने प्रयत्न ।

सत्रह मइ 67केँ घटनामे हुनका एकटा रेडियो प्रोग्राम रहनि । ओ घटना गेलाह । किन्तु ओतय पहुँचिते दुखित पड़ि गेलाह । बोखार आ पेट दर्द। बाइस मइकेँ कनेक स्वस्थ भेला पर महिसी विदा भऽ गेलाह । उपाध्याय हुनका असकर नहि आबय दैत रहनि । मुदा ओ जिद ठानि लेलनि आ असकरे अलि गेलाह । बरौनीमे भोरका गाड़ीक प्रतीक्षा करैत ओ शम्भूनाथ मिश्रकेँ एकटा पत्र लिखलनि– पटना, महिसी, बरौनी, सहरसा– अब मेरी जिन्दगी कितनी छोटी और कितनी बेमानी हो गई है । चाहता था, मतलबों की दुनिया में कोई बड़े मतलब, –न्यूयार्क, मस्कवा, फ्रांसीसी रिवेरिया मैं अपनी जिन्दगी मैं भी कायम करता । मगर उम्र, सेहत और यह मजबूरी कि कहीं एक कमरा एक ग्लास दारू और एक स्त्री हमारे लिए, सिर्फ हमारे लिए जरूर हो, –दूसरे मतलबों को तोड़ देती है ।

तेइस मइकेँ सहरसा पहुँचला पर ओ चन्द्रमौलि उपाध्यायकेँ एकटा पहुँचनामा लिखलनि : सकुशल सहरसा पहुँचि गेल छी । अहाँसँ टाका लेने बिना काज नहि चलि सकल । सौ टाका हम जमा कयने रही । एखन एतहि जाउर आ कोयला बेसाहि गाम चल जायब । जूनक पहिल सप्ताहमे कोनो दिन भेंट होयत ।

एहि बेर गाम अयलो पर हुनक स्वास्थ्यमे कोनो सुधार नहि भेलनि । आठ दिनक बाद दू जूनकेँ ओ जीवकान्तकेँ पत्र देलनि– 17.5.केँ घटनामे मोन पुनः खराप भऽ गेल । ओही हालतमे 22.5केँ गाम चल अयलहुँ । एखनहुँ अवस्था नीक नहि । सदिखन 101°-102° रहैत अछि । टाका पइसा सँ हाथ पर नहि ।

राजकमलक हालत दिनोदिन बिगड़ैत गेलनि । आठ जूनकेँ हुनका सहरसा अस्पतालमे भरती कराओल गेल । मुदा कोनो फर्क नहि । हुनक स्थिति गंभीर होइत गेलनि । अन्ततः हुनका पटना लऽ जायल गेलनि । सोलह जूनकेँ ओ पटना अस्पतालमे भरती भऽ गेलाह । वैह सर्जिकल ब्लॉक ।

हे राजकमल

हरिमोहन झा

हे राजकमल !
सुन्दर शतदल !
शुचि मानसरोवर मध्य खिलल ।
विकसित उज्ज्वल
अतिशय निर्मल
मधुयुत कोमल
सुरभित परिमल
सौरभ मलयानिल केर शीतल
लोकक करैत सुरसित हीतल
चहुँदिशि सुगंध खिरबैत चलल ।
ओ रूप मनोहर, शील विमल
सौजन्य, विनय, मुसकान धवल ।
अंकित ओहिना स्मृति केर पटल
मन पारि होइत अछि चित्त विकल !
गज-काल आबि कय कैल कवल ।
ओ दिव्य कमल सुकुमार नयल !
सभ केँ करैत शोकित विह्वल ।
तजि देल अहाँ नश्वर भूतल
मुसुकैत रही जहिना सूतल ।

★ ★ ★

साहित्य जगत मे कीर्त्ति अचल
अक्षुण्ण रहत युग युग प्रतिपल ।
मर्म स्पर्शी ओ विभा सकल
सर्वदा अमर भय रहत अनल ।
सुकुमार कथा केर राजमहल ।
सुकुमार काव्य केर ताजमहल
प्रतिभाक पुंज हे राजकमल !
वाणीक दिवगत पुत्र सबल ?
अगणित मानस मे रहब अनल ।
हे अमर ! हमर शुचि राजकमल ।

हरिमोहन झा

मुदा होनी किछु आओर छल । उपाध्यायसँ भेंट भेला पर राजकमल कहलथिन– इस बार नहीं बचूंगा, दोस्त । माँ नाराज हो गई है ।

आ ठीके, ओ नहि बचलाह । उन्नैस जून 1967केँ सदाक लेल चल गेलाह ।

एखन ओ चालीसो बर्खक नहि भेल छलाह कि कॉरोनरी थ्रॉम्बोसिसँ मारल गेलाह ।

साहित्य

नव बाटक खोजमे निकलल लोकक पएर छिलाइते छैक । लोक क्राइस्टकेँ सूलीपर चढ़बैलक आ मन नहि भरलै तँ ओकरा पर थूको फेकलक ।
राजकमल चौधरी

दुखद बचपन लोककेँ लेखक बना दैत छैक । राजकमलक बचपन तँ बहुत बेसी दुखद छलनि । आठे-दस बरखक उमरमे माय मरि गेलनि । पिता तेसर विवाह कऽ लेलकनि । सतमाय आबि गेलनि । राजकमल उपेक्षित आ अपमानित होएब लगलाह । पिताक क्रोध आ घृणा, मारि आ गंजन सहय पड़लनि । राजकमलक किशोरावस्था अत्यन्त दुखमय भऽ गेलनि । दुखी भेला पर ओ घरसँ पड़ाय जाथि । संगी-तुरियासँ स्नेह आ सहानुभूति प्राप्त करबाक लेल लालायित रहल करथि । बेर बेर रूसि जाथि, किछु खाथि नहि । क्रोधमे आबि कऽ कोनो अनर्गल काज कऽ बैसथि, ताहू लेल मारि खाय पड़नि । प्रताड़ना सहय पड़नि । प्रतिशोध लेबाक लेल ओ चुनि-चुनिकऽ ओहने काज करथि, जाहिसँ हुनक पिता आ सतमायकेँ क्लेश पहुँचनि । पिताक कठोर अनुशासनक विरोधमे ओ उग्र आ स्वच्छन्द प्रवृत्तिक होइत गेलाह ।

राजकमलक व्यक्तित्वमे समायल अथाह करुणा हुनका अनायास साहित्य दिस लऽ गेलनि । पिता मधुसूदन चौधरीक किछु कविता हिन्दीक तत्कालीन प्रतिष्ठित पत्रिका गंगा, सुधा आदिमे छपल छलनि । एहि क्षीण काव्यात्मक पृष्ठभूमिक अतिरिक्त ओहि समय भारतमे स्वतंत्रता-संग्राम सम्बन्धी ओजस्वी कविता सम्पूर्ण जनमानसकेँ आन्दोलित आ काव्यपथ बनौने रहय । नवादा हाइ स्कूलमे, जतय राजकमल पढ़ैत छलाह, कैक टा शिक्षक तुकबन्दी करैत छलाह । एक दिन एहिना एकठा शिक्षकक तुकबन्दी सुनैत राजकमलकेँ आभास भेलनि, जेना ओहो कविता कऽ सकैत छथि । बस ओही क्षण हुनक अंतरमे काव्यक प्रथम स्फुरण भेलनि । तकर बाद तँ खाली श्रम आ अभ्यासक बेगरता छल ।

राजकमलकेँ अपन पहिल कविताक प्रति विशेष प्रेम आ मोह रहनि । ओहि कविताकेँ कतेक वर्ष धरि ओ अपन डायरी अथवा नोट बुकक प्रथम पृष्ठपर अंकित करैत रहलाह । राजकमल ओकर शीर्षक देने रहथि— अतीतसँ एकटा प्रेम वा भविष्यक एकटा निश्चितता। एहि कविताक भाव आ भाषा दुनू समृद्ध आ परिपक्व अछि । बुझाइत नहि अछि जे ई हाइ स्कूलक कोनो नवसिक्खू छात्र-कविक रचना हो । किन्तु राजकमल एकरे अपन पहिल कविताक रूपमे प्रचारित करैत छलाह । भऽ सकैत अछि जे एहि सँ पहिने ओ आओर कविता लिखने हेताह मुदा अपरिपक्व बूझि नष्ट कऽ देने हेताह । इहो कविता कतहु प्रकाशित नहि भेल । कविता अछि—

चान सन सज्जित धरा पर
कय रहल प्रियतमा अभिनय ।
बूड़ि थोर मन दुभुकि उठलै
अहाँ सँ हम करब परिणय ॥

एहि कवितासँ राजकमलक साहित्यिक व्यक्तित्वक बारेमे दू-तीन टा संकेत भेटैत अछि । राजकमलकेँ रत्यात्मक विषय प्रिय छनि, छंद आ लयक प्रति झुकाव छनि आ हुनकर अपन विशिष्ट दृष्टि छनि ।

राजकमल सबसँ पहिने मैथिलीमे सृजन प्रारंभ कयलनि आ प्रकाशितो पहिने मैथिली-एमे भेलाह । मैथिलीमे सबसँ पहिने हुनक कथा अपराजिता प्रकाशित भेल । ई कथा अक्तूबर 1954मे वैदेहीमे छपल । अगिला साल हुनक पहिल मैथिली कविता प्रकाशित भेल— 'पटनियाँ टट्टूक प्रति।' ई कविता फरवरी 1955मे वैदेहीमे छपल । हिन्दीमे सर्वप्रथम हुनक कविता 'बरसात रात प्रभात' सितम्बर 1956मे छपल । हुनक पहिल हिन्दी कथा 'सती अनुकाइन' छल, जे मार्च 1958मे कहानीमे छपल । ई कथा मूल हिन्दीमे नहि लिखल गेल छल, अपितु मैथिलीक अनुवाद छल ।

58मे जखन हिन्दीमे राजकमलक एक आध टा रचना छपब शुरू भेलनि, तावधरि मैथिलीमे प्रचुर मात्रामे हुनक रचना छपि गेल छल आ मैथिलीमे ओ एकटा अत्यन्त प्रतिभाशाली लेखकक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ चुकल छलाह । मैथिलीमे ओ तेरह वर्ष धरि लिखैत रहलाह आ हिन्दीमे एगारह साल धरि । एहि तेरह बर्खमे मैथिली-हिन्दी मिलाकऽ ओ विपुल साहित्यक निर्माण कयलनि । हिन्दी लेखनावधि कम रहितो मैथिलीक अपेक्षा हिन्दीमे ओ बहुत बेसी रचना कयलनि । मैथिलीक तुलनामे हिन्दीमे प्रकाशनक अवसर, पाइ आ प्रसार बेसी छल । यैह कारण अछि जे ओ हिन्दीमे बेसी लिखलनि । हुनक लेखन क्रम कहियो भंग नहि भेलनि । ओ निरन्तर लिखैत गेलाह । श्रम आ अभ्याससँ हुनक कला निखरैत गेलनि आ स्मरणीय बनि गेलनि ।

मैथिली

मैथिलीमे राजकमल चौधरी लगभग एक सय कविता, तीन टा उपन्यास, मैनीस टा कथा, तीन टा एकांकी आ चारि टा आलोचनात्मक निबन्ध लिखलनि । राजकमलक जीवन कालमे मैथिलीमे हुनक जे पहिल पोथी छपलनि, से छलनि कविता संग्रह स्वरगंधा । स्वरगंधा 1958मे कलकत्तासँ छपल । राजकमल ओहि समय कलकत्तेमे छलाह । स्वरगंधाक बाद अनेक बर्ख धरि राजकमलक कोनो कविता पोथी नहि आयल । 1981मे मोहन भारद्वाजक सम्पादनमे कविता राजकमलक आयल, जाहिमे ओहि समय धरि उपलब्ध हुनक 89 टा कविता संकलित भेल। हुनक रचना सभ अनेक गोटय लग छिड़िआयल अछि आ समय-समयपर पत्र पत्रिकामे अचानक प्रकट भऽ जाइत अछि ।

1957क नवम्बरमे विद्यापति जयंतीक अवसर पर कलकत्तामे एकटा कवि सम्मेलन आयोजित कयल गेल रहय । सम्मेलनमे यात्री जी सेहो उपस्थित रहथि । मैथिलीमे अधिकांशत: परम्परावादी लेखनक निरन्तरताकेँ देखि कय यात्रीजी बहुत निराश रहथि । ओ बजलाह— मैथिलीमे एखनहुँ पचास बर्ख पूर्वहि जकाँ कविता लिखल जा रहल अछि ।

स्वरगंधा क प्रकाशन यात्रीजीक एहि निराशाजनक विचारकेँ खंडित

करबाक उद्देश्यसँ कयल गेल छल । यद्यपि यात्रीजी स्वयं पारम्परिक लेखनसँ अलग हँटि कय नव तरहक रचनाकेँ रहल छलाह आ हुनक चित्रा नामसँ एकटा संग्रहो प्रकाशित भऽ चुकल छलनि, तथापि नव कविता कम्मे लिखल जाइत छल आ ओकरा व्यापक स्वीकृति नहि भेटल छलैक । समाजमे लखनो परम्परावादी काव्य प्रतिष्ठित छल । तेँ जखन स्वरगंधा प्रकाशित भेल तँ परम्परावादी कवि-समाज दुर्गंधा कहि ओकर उपहास कयलक । नव कविताक स्वीकृति लेल राजकमलक संग-संग रामकृष्ण झा 'किसुन' आदिकेँ तीव्र विचारधारात्मक संघर्ष करय पड़लनि ।

स्वरगंधामे नवम्बर 57सँ अप्रैल 58 धरिक राजकमलक कलकत्ता प्रवासमे लिखल गेल कविता संकलित भेल । भूमिकामे ओ लिखलनि– हमर अधिकांश कविता कोनो क्षण-विशेष, अनुभव विशेषक अभिव्यक्ति-चित्र अछि । किछु कविता भावुक प्रेम, समाप्त भऽ गेल प्रेमकथाक स्मृति, भावुक स्मृतिकेँ चित्रित-अंकित करैत अछि, जे ई सभ वस्तु क्षणिक थिक... किएक तँ एहि प्रेमक उद्गम आ स्मृति कोनो व्यक्ति विशेषसँ सम्बन्धित अछि ।

छंद, अलंकार, लय आदिकेँ राजकमल कविता लेल आवश्यक नहि मानैत छथि । एकर अर्थ ई नहि जे एकरा ओ कविताक क्षेत्रसँ बहिष्कृत करय चाहैत छथि । स्वरगंधाक कवितामे छंद आ लयक प्रभावकारी भूमिका अछि । कविताक लेल ओ मात्र शब्दकेँ आवश्यक मानैत छलाह. शब्दक बिना कविता करब असंभव अछि । ओ लिखैत छथि - कविता गद्य नहि थिक जे शब्दक अतिरिक्त आन कोनो विधान मानिकेँ चलत । गद्यक लेल व्याकरण सम्मत एकटा सुनिश्चित स्वरूप आ मार्ग बना लेल गेल अछि... कवितामे एहन कोनो नियम-उपनियम नहि अछि ।... कविता हमरा लेल जीवन थिक, जीवनक नीक परिधान थिक ।

कविताकेँ जीवन कहबाक पाछाँ राजकमलक अभिप्राय ई अछि जे कवितामे जीवनानुभवे प्रमुख वस्तु होइत अछि आ अपना लेल ओ अपन शब्द ताकि लैत अछि । जीवनक तीव्र आवेग-संवेगमे शब्द तथैत आ आकार ग्रहण करैत अछि आ स्वयं जीवन बनि जाइत अछि। स्वरगंधाक कविता एहने अछि । जीवनक ताप आ उष्मा सँ भरल । पति पत्नी कथामे हुनक अनुभूतिक उत्कटताकेँ बानगी रूपमे देखल जा सकैत अछि–

स्त्री अपन सखा-सन्तान, भानस बासन
सुख सेहन्ता, पीठक
हसिया-पीयर दर्द, आ उधार लहनाक
कथा
कहैत अछि,
कहैत रहि जाइत अछि भोरसँ साँझ धरि
बाड़ीक कोनटासँ
आँगनक माँझ धरि
कहैत रहि जाइत अछि साँझ धरि
पुरुष ओहि स्त्री, आ ओहि स्त्रीक सखा-सन्तान
भानस-बासन, सुख सेहन्ता पीठक
कथा
सुनैत अछि
सुनैत रहि जाइत अछि साँझ सँ भोर धरि
ठोरक मन्द-मन्द मुस्की सँ
आँखिक नोर धरि
सुनैत रहि जाइत अछि भोर धरि

'हमरा लोकनिक युग आ आधुनिक मैथिली कविता' नामक अपन लेखमे राजकमल लिखलनि जे यात्रीजी अर्वाचीन होइतो आधुनिक नहि छथि, किएक तँ ओ मनुक्खक शारीरिक, सामाजिक अपराध आ पीड़ाक अनुभव तँ करैत छथि, मुदा ओकर अन्तरंग, ओकर आत्मदमन, ओकर आत्म शृंगार हुनका बूझल नहि छनि । स्वरगंधामे राजकमल यात्रीजीक एहि सीमाक अतिक्रमण करैत व्यक्तिक आन्तरिक जीवनक राग-विरागकेँ अभिव्यक्ति देलनि । हुनक शब्द, हुनक कविता आत्मभोगक प्रखर तापमे सिद्ध भऽकऽ निकलैत अछि, तेँ बहुत तेजोमय आ प्रभावकारी होइत अछि । हुनक समस्त साहित्य निश्छल वैयक्तिकताक उदाहरण अछि । कविताकेँ ओ आत्माभिव्यक्तिक माध्यम मानैत छलाह । स्वरगंधाक बाद ओ अनेको श्रेष्ठ कविता लिखलनि, जाहिमे 'महाधन', 'प्रेत-पीड़ित प्राण जीबधु आब ककरा हेतु,' 'गामक नाम थिक पुरबा बसात पछबा बसात', 'एहि जंगलसँ ओहि जंगलमे बताह महादेव जकाँ' आदि प्रमुख अछि । कलकत्तामे ज्ञानपीठमे सेठक नोकरी करैत राजकमल बहुत गंभीरतासँ एहि बातक अनुभव कऽ रहल छलाह जे भारतमे स्वतंत्रता सामान्य जनक लेल नहि आयल, सत्ताधारी वणिक सम्प्रदाय आ राजनेताक लेल आयल अछि । सामान्य जनक जीवन असफलता आ दुखक इतिहास अछि । ओ लिखलनि– मानव जीवनक सबसँ पैघ सफलता थिक, मिनिस्टरी दलक एम.एल.ए. बनि जायब । कविता आ साहित्य थिक जीवनक सबसँ पैघ असफलता आ मृत्यु !!

राजकमल अपन कविता द्वारा एहि असफलता आ मृत्युसँ लड़य चाहैत छलाह । मुदा कविता विजय नहि दिआ सकलनि । भेटलनि मात्र व्यथा आ निराश ।

हमरा दुख अछि
कविता हमर काँचे रहि गेल
एहि जारनिसँ उड़ल कहाँ धधरा
व्यथा कहब ककरा
कथा कहब ककरा ?

मैथिलीमे राजकमल तीन टा उपन्यास लिखलनि– आन्दोलन, पाथर फूल आ आदिकथा । आन्दोलन 57क अंतमे लिखायल, पाथर फूल 58क शुरूमे आ आदिकथा 58क मध्यमे । सभसँ पहिने पाथर फूल प्रकाशित भेल– 58क फरवरी वा मार्चमे । पाथर फूल पल्लवक सम्पादक दीपक जीक सहयोगसँ छपल छल, मुदा ककरो ई कहला पर जे उपन्यासक अश्लीलताक चलते प्रकाशककेँ जेल भऽ जेतनि, प्रकाशित सामग्रीकेँ प्रकाशक नष्ट करबा देलनि । ओकर मात्र दुइए-तीन टा प्रति लोकक हाथमे पहुँचल । तहियासँ ओहो दू तीन टा प्रति स्वार्थवश दबल अछि आ अनुपलब्ध अछि ।

सभसँ पहिने आ 1957मे लिखाइयोकेँ आन्दोलन अगिला दस बर्ख धरि प्रकाशित नहि भऽ सकल । यद्यपि ई मात्र पचास पृष्ठक लघु उपन्यास छला राजकमल एहि उपन्यासक कहियो कोनो चर्चा नहि कयलनि । संभव अछि पहिल औपन्यासिक रचना हेबाक कारणेँ राजकमल ओकरा कमजोर मानि चर्चा योग्य नहि बुझैत होथाह । मुदा ई मात्र संभावना अछि । असल ज्ञात कारण ई अछि जे एकरा कथो छापय लेल तैयार नहि रहय । एहि उपन्यासमे राजकमल मैथिली भाषा सम्बन्धी आन्दोलनक पाछाँ नुकायल स्वार्थकेँ देखार करबे रहथि । मैथिलीसँ सम्बद्ध संस्था, उन्नायक, आन्दोलनकर्त्ता आ कलकत्ताक मैथिल समाज– एहि सभकेँ ई उपन्यास भागट करैत रहय । एकरा प्रकाशित करब अपमानजनक आ आत्मघाती सिद्ध होइत, तेँ कथो तैयार नहि भेल । कीर्तिनारायण मिश्र, जे दस बर्षक बाद एकरा छापलनि, लिखैत छथि "एकरा प्रकाशित देखबाक लालसामे स्वयं राजकमलके पोथाक' समर्पित करबाक भाण्डामन कतेक व्यक्तिकेँ देबऽ पड़लनि आ कोना समर्थण लेल एक व्यक्तिक नाम काटि दोसर-तेसर-चारिम व्यक्तिक नाम लिखय पड़लनि, एकर इतिहास आ

रहस्य बड़ रोमांचक आ कष्टदायक अछि। अन्तत आन्दोलनकेँ राजकमल सौराठ सभा-स्थलक वृद्ध इनारकेँ समर्पित कयलनि।

दस बर्खक बाद जखन कीर्त्तिनारायण मिश्रकेँ पांडुलिपि भेटलनि तँ ओ अत्यन्त जीर्ण शीर्ण अवस्थामे छल। जँ ओहि समय पांडुलिपि हुनका नहि भेटल रहितनि तँ ओ नष्ट भऽ गेल रहैत आ आइ ओकर कोनो चेन्ह नहि रहैत। आन्दोलन पहिने 1967 मे आखर मे धारावाही रूपमे छपल आ अप्रैल 1968मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल

राजकमल प्रश्नाकुल व्यक्ति छलाह। हुनका नाना प्रकारक प्रश्नाकुलता घेरने रहैत छलनि। हुनक अधिकांश रचनाक अंत प्रश्नाकुलतामे होइत अछि।

जीवन की थिक ? हम किएक जिबैत छी ? एहि तरहक जिज्ञासा युवावस्थेसँ राजकमलक मानसकेँ मथैत रहैत छलनि। हुनका कहियो एकर कोनो संतोषजनक अंतिम उत्तर नहि भेटलनि। जीवनक अंतिम समयमे अस्पताल डायरीमे ओ लिखलनि– दि क्वेश्चन आइ सफर्ड सो फार, वाज हुवाइ आइ लिभ ? नाउ आइ एम ए चेंज्ड मैन। आइ डोंट सफर एनी क्वेश्चन। आइ लिभ एंड दिस इज दि राइट रिप्लाइ टु ऑल दि क्वेश्चनिंग साइंस। आइ लिभ एंड दैट इज एनफ। (हम किएक जीवैत छी ? ई प्रश्न हमरा सदैव व्याकुल करैत रहल अछि। मुदा आब हम बदलि गेल छी। आब कोनो प्रश्न हमरा पीड़ित नहि करैत अछि। हम जीवैत छी, बस। सभ प्रश्नक हमर यैह जवाब अछि।)

पहिल प्रश्नक उत्तर हुनका अनेक ठाम अनेक प्रकारसँ भेटलनि। आन्दोलनमे ओ जीवनकेँ सुधा, आत्मरक्षा आ यौन-पिपासाक रूपमे परिभाषित करैत छथि। मानव-जीवनक यैह मूल प्रवृत्ति थिक। मनुक्ख एहि परिधिमे चक्कर कटैत रहैत अछि। जीवन एहिसँ उत्पन्न होइत अछि आ एहीमे खतम भऽ जाइत अछि। यैह जीवनक अर्थ आ ओकर सार तत्व थिक।

अपन वक्तव्यमे ओ लिखैत छथि– आन्दोलन मैथिलीक प्रथम उपन्यास अथवा राजनीतिक पर्यवस्थितमे लिखल गेल प्रथम वृत्तान्तक कथा थिक... उपन्यासक सम्पूर्ण संज्ञा देब, हम अनुकूल नइँ बुझइ छी।

आजुक मनुक्खमे तीन प्रवृत्ति मुख्यत: देखल जाइए– क्षुधा, आत्मरक्षा या यौन-पिपासा। एहन तीन प्रवृत्तिक चित्रांकन लेखकक प्रधान प्रयत्न रहल अछि।

आत्मरक्षाक अधिकारक भावनाक कारणेँ देशमे आर्थिक, राजनीतिक आन्दोलन उठि रहल अछि। कलकत्ताक चालीस हजार मैथिल एहिमे प्रगतिशील छथि। कथा वस्तु पर एकर स्पष्ट प्रभाव अछि।

आन्दोलनमे एकटा मैथिल युवकक जीवन-संघर्ष आ मैथिली आन्दोलनक स्वरूप अंकित भेल अछि।

आन्दोलनमे राजकमलक कलकत्ता जीवनक आरंभिक स्थितिकेँ देखल जा सकैत अछि। राजकमल व्यक्ति राजकमल आ लेखक राजकमलमे कोनो भेद नहि मानैत छलाह। तेँ साहित्यमे हुनक व्यक्तिगत जीवन प्रचुर मात्रामे आयल अछि। ओ समकालीन जीवनक महत्वपूर्ण सवालसँ टकराइत रहैत छथि; मनुक्खक संघर्ष आ मुक्तिकेँ सम्पूर्ण संवेदनशीलता संगे वाणी प्रदान करैत छथि। मुदा ई सभ राजकमलक साहित्यमे कोनो सशक्त धाराक रूपमे नहि चलैत अछि, बीच-बीचमे बिजली जकाँ चमकि उठैत अछि। प्रबल आ सशक्त अन्तर्धाराक रूपमे चलैत रहैत अछि लोकक यौन-पिपासाक अन्तहीन कथा।

1957मे वैदेहीमे प्रकाशित लिलीरेक कथा रंगीन परदा पछिकेँ हंसराजकेँ ओ लिखने रहथि– फ्रेंच उपन्यासकार एमाइल जोलाक उपन्यास लज्जा स्मरण भऽ गेल। परपुरुष रति सभ युग ओ सभ देशक कथाक मुख्य विषय थिक। पर रति सुन्दरि ओ सौभाग्यवती नारीक आभूषण थिक सौंसे भारतीय धर्म आ साहित्य विदग्धा राधा-रानीक पर रति कथासँ भरल अछि... मुनि कन्या अहिल्या, स्पार्टाक महारानी हेलेन, इजिप्टक महासुन्दरी क्लियोपेट्रा, तोल्सतोयक महानायिका अन्ना केरेनिना, फ्लाबेयरक आकांक्षामयी मादाम बावेरी, शरतचन्द्रक मालती...।

राजकमल अनुभव कऽ रहल छलाह जे रति भाव साहित्यक मूलाकर्षण थिक आ अपन साहित्यमे एहि भावक विनियोग ओ प्रचुर मात्रामे कयलनि। ई विनियोग निष्प्राण आ कृत्रिम नहि छल, निजी अनुभवक प्राण रससँ सिंचित छल। छेदीलाल गुप्त लिखैत छथि बहुत दिनक बाद एक बेर भेंट भेल तँ ओ फाटाफट कैक टा आश्चर्यजनक घटना सुना गेलाह। ओ श्मशान गेल छलाह। ओठिआम ओ देखलनि जे एकटा स्त्रीक लावारिश लहास पड़ल अछि आ ओकर चारूकात एकटा स्वस्थ व्यक्ति चक्कर काटि रहल अछि। ओ ओहि व्यक्तिसँ भेंट कयलनि। हुनका ज्ञात भेलनि जे ओ व्यक्ति ओहि मृत स्त्री संग संभोग करबाक फिराकमे अछि।

हम ई कहय चाहैत छी जे कथा लिखबासँ पहिने हुनका अपन सोचल कथाकेँ यथार्थ बनयबाक बेगरता होइत छलनि।

व्यक्ति राजकमल आ लेखक राजकमलमे कोनो फर्क नहि अछि– ई कहबाक अर्थ ई नहि जे ओ अपन व्यक्तिगत जीवनक अविकल साहित्यिक अनुवाद कयलनि, अपितु ई जे साहित्यिक सामग्रीक लेल, प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करबाक लेल ओ सायास नाना प्रकारक तीव्र आ वेगमय जीवन बितौलनि।

आदिकथामे ओ अपनाकेँ कुपथगामी मानैत छथि। एहि स्वीकृतिमे कोनो कुंठा नहि अछि। ई उपन्यास ओ मधुकर गंगाधरकेँ समर्पित कयने छथि, जे ओहि समय हुनक अन्तरंग मित्र रहनि, किन्तु आगाँ चलि कऽ विरोधी भऽ गेलनि।

आदिकथा दिसम्बर 1958मे कलकत्तासँ प्रकाशित भेल। आदिकथा बड़ हड़बड़ीमे लिखल गेल छल– मात्र चारि दिन मे। जतेक लिखाइत छल, ततेक रोज छपि जाइत छल। ओहि समय मैथिलीमे लेखन-शैलीमे एकरूपता नहि छल। भाषाकेँ लिपिबद्ध करबाक अनेक ढंग प्रचलित छल। एहि उपन्यासक माध्यमसँ राजकमल मैथिली लेखन-शैलीकेँ वैज्ञानिकता प्रदान करबाक प्रयास कयलनि। मैथिली जेना बाजल जाइत छल, तहिना लिखबाक ओ प्रतिमान उपस्थित कयलनि। ओ एहि बातकेँ रेखांकित कयलनि जे भारतीय भाषा आ लिपिक ई विशेषता थिक जे जएह लिखल जाइए, सएह पढ़ल जाइए, सएह बाजल जाइए। आन भाषा आ लिपिमे सामान्यत: ई योग्यता नहि पाओल जाइछ। भाषा आ लिपिक एहि अनुरूपताकेँ लेखन-शैलीमे स्थान देब राजकमलकेँ बेसी वैज्ञानिक आ श्रेयष्कर बुझयलनि।

आदिकथा मामी आ भागिनक पारस्परिक यौन-आकर्षणक खिस्सा कहैत अछि। लोक प्रेम करइए, प्रेम-पात्रक लेल बेकल रहइए, मुदा संस्कारक ससरफानी तोड़ि नइँ पबइए। इएह आदि-आदिसँ चल अबइत कथा थिक, आदिकथा थिक।

सुशीला आ देवकांत धार्मिक नैतिक संस्कारक द्वन्द्वमे फँसल रहि जाइत अछि आ जीवनकेँ त्रासद बना लैत अछि। सामाजिक वर्जना एहि त्रासदीकेँ ओहि दुनूक नियति बना दैत छैक। ओ दुनू एहि सामाजिक जकड़नकेँ तोड़ि नहि पबैत अछि। अंतमे जा कऽ जँ देवकांत तोड़बाक प्रयास करितो अछि तँ सुशीला जड़ (फ्रिजिड) भऽ जाइत अछि। राजकमल लिखैत छथि– सहरसा पूर्णिया इलाकाक जन जीवनक पर्यवस्थितिमे लिखल गेल ई सामाजिक उपाख्यान समाजक बदलैत धार्मिक-नैतिक मान्यतादिक एहि संक्रांति कालमे कॉमेडी नहि बनि सकल, मात्र एक अपूर्ण ट्रेजेडी रहि गेल। इएह समकालिक यथार्थ थिक।

जीवनकेँ त्रासद बनबय बला धार्मिक-नैतिक संस्कारक प्रति राजकमलक

मोनमे विरोधक भाव रहनि आ ओहिसँ ओ दुखी छलाह । भूमिकाक रूपमे जे पत्र ओ बाबूसाहेब चौधरीकेँ सम्बोधित करैत लिखलनि, ताहिसँ हुनक ई मनोभाव स्पष्ट अछि--

चौधरीजी,

हमरा लेखकक प्रति अहाँक जे विश्वास अछि, तकर रक्षाक प्रयत्न थिक आदिकथा ।

सोना मामीक प्रति देवकातक प्रेम बड़ उच्च आदर्श थिक । आ एही आदर्श रक्षाक कारणेँ देवक जीवन स्वाहा भए गेल छनि ।

आब अहीं कहू, जे धर्म्म करए, आगि लेसने रहए, से आदर्श कोना, अनुकरणीय कोन तरहेँ ? हम सामाजिक मर्यादाक पूजा करइ छी, आ, (अयथार्थ) आदर्शवादिताक घोर विरोध ।

एहि विरोधक प्रति की अहाँक मोनमे एक्को रत्ती सिनेह– सहानुभूति नइँए ?

राजकमल

एहू उपन्यासमे आत्मकथात्मक स्पर्श अछि । एकर स्थल (लोकेशन) राजकमलक मातृक अछि । मुरलीगंजमेँ पश्चिम एकटा छोट मन स्टेशन अछि दीनापट्टी । दीनापट्टीमेँ सटले अछि राजकमलक मातृक ग्राम पुर। आदिकथा ग्रामपरेक कथा थिक । स्त्री पुरुषक प्रकृत आकर्षणक राजकमल मस्थागत अंकुश आ दमनमेँ मुक्त करए चाहैत छलाह । हुनक ई दृष्टि मैथिली साहित्य-जगत लेल अनभआर छल । एहि उपन्यास द्वारा ओ वैवाहिक संस्थाक यन्त्रणादायी स्वरूपकेँ देखार कयलनि ।

जीवकान्त लिखैत छथि आदिकथामे हमरा खगप लगैत अछि शरच्चन्द्रीय करुणा, अवसाद आ आत्मबलिदान आत्मपीड़नक भावना। थाना मामी मैथिल बुझाइतो बंगाली भऽ गेल छथि जना ।.. तथापि, हम ई मानैत छी जे परम्परा आ अर्वाचक मानता दिस संकेत करबला, आ मत्यकेँ चाँकि आकर बाणी दबय वला ई उपन्यास मैथिलीक उपन्यासक भीड़ भाड़मे एकटा विशिष्ट वस्तु अछि

राजकमलक पबमेँ प्रकाशित एकटा एहन मैथिली उपन्यास लिखबाक कथा कयने रहथि नायक एकटा एहन मैथिल ब्राह्मण जाहिमे एकटा युवती भरि जिनगी विभिन्न लोकक संग पड़ाएल घुरइए।

मैथिलीमे राजकमलक सैंतीस टा कथा उपलब्ध अछि । गाममे राति रातिप गाम नँ 1995क अंतिम प्रकाशमे आयल अछि मेहो मूल मैथिली मे नहि, हिन्दी अनुवादक रूपमे । अपन कथा संग्रह छपल देखबाक राजकमलकेँ बड़ इच्छा छलनि । विभिन्न पत्र पत्रिकामे कथा प्रकाशक ताकि एकटा पांडुलिपि तैयार कए देबाक लेल आ हमराजमेँ एकबार अनुरोधो कयने रहथिन । अव्यवस्थित जीवनक कारण हुनका लग किछु नहि रहनि । पाण्डुलिपि रहने ओकरा ओ कतहु कहुना प्रकाशित करेबाक प्रयास करितथि । मुदा हुनक ई इच्छा पूरा नहि भेलनि । जीवन कालमे एक्को टा कथा संग्रह प्रकाशित नहि भऽ सकलनि । मैथिली कथा सभक मात्र एकटा संकलन, कथा पराग सम्पादित कऽ सकलाह ।

मृत्युक लगभग एक साल बाद अप्रैल 1968मे श्री आइ.टी सिन्दरीक किछु उत्साही छात्र लोकनिक सहयोगमेँ हुनक पहिल कथा संग्रह ललका पाग प्रकाशित भेलनि । एहिमे सात टा कथा संग्रहीत कयल गेल । एहि संग्रहक बाद ए.सी दीपकक मैथिली पॉकेट बुक्स सीरीजमे निर्मोही बालम हमर आ एक अनार एक रोगाह बहरायल । ई दुनू आब दुष्प्राप्य अछि । एक अनार एक रोगाह हिन्दीक लघु उपन्यासक मैथिलीक अनुवाद छल । तेसर संग्रह आनन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजक सम्पादनमे फरबरी 1980मे मैथिली अकादमी छपलक । एहिमे तरह टा कथा आ एकटा उपन्यास संकलित भेल । एहि तेरहमे छओ टा कथा पूर्वमे ललका पागमे आबि चुकल छल । एहि संग्रहक नाम अछि - कृति राजकमलक । ललका पाग आ कृति राजकमलकमे राजकमलक विवादरहित कथा सभ छापल गेल । ललका पागमे मात्र एकटा कथा विवादग्रस्त छल जकर शीर्षक छल ललका पाग । एही कथाक नाम पर एहि संग्रहक नाम राखल गेल छल । ई कथा मैथिल ब्राह्मणक बहु-विवाह प्रथा पर बड़ करगर चोट कयने रहय आ मैथिल ब्राह्मणकेँ तिलमिला देने रहय ।

राजकमलक पाँचम कथा संग्रह एकटा खण्डा कलौं एकटा विषधर अप्रैल 1983म लागनट वियार्गाक मम्मटनम बहरायल । एहिमे राजकमलक तेरह टा विवादग्रस्त कथाक संग संग अछि । एखनो राजकमलक अनेक कथा संकलित प्रकाशित हेबाक प्रतीक्षा कऽ रहल अछि

आह माहुन्य हा वा आलोचना अध्ययन क्रममे आवश्यता प्रत्येक बम्बुक प्रति राजकमल तीव्र आ गभीर प्रतिक्रिया करैत छलाह । फूलपरागवाली कथा एहने प्रतिक्रियाक उपज अछि । ललित मुक्ति नामक एकटा कथा लिखलनि जाहिमे ओ देखौलनि जे एकटा स्त्री एकटा स्वस्थ आकर्षक पुरुष संग पड़ाय जाइत अछि । राजकमलकेँ ई यथार्थक प्रतिकूल लगलनि आ ओ फूलपरागवाली लिखि कऽ बतौलनि जे सामान्य मैथिल स्त्री परबनो एहि तरहक मानसिक डंग उठयबाक, एडवेंचर करबाक सामाजिक सांस्कृतिक स्थितिमे नहि अछि ।

1955मे जखन बेदहोंम राजकमलक कथा ललका पाग छपल तँ मैथिली जगत सन्न रहि गल । एकटा वर्ग कथानायिका निरुक त्याग मेँ चमत्कृत रहय तँ दोसर वर्ग बहु विवाहक निन्दनीय स्वरूपक दर्शनमेँ आहत भऽ गेल रहय । पहिल वर्ग राजकमलकेँ विस्मयमेँ देखलक आ दोसर वर्ग घृणा सँ । राजकमलक एखनधरि मैथिलीमे मणीन्द्र राजकमलक नामसँ लिखैत छलाह । ललका पागक संग ओ राजकमल चौधरी भऽ गेलाह । ललका पागक बाद राजकमलक अनेक एक पर एक विवादास्पद कथा आयल । सुरमा सगुन विचारै ना, माहुर, नवलि भाउज आदि तँ सर्वाधिक विवादग्रस्त रहल । राजकमलक आधुनिक कथा यौन जीवनमेँ सम्बन्धित छल आ सभ कथामे कोना ने कोन रूपमे समाजक रूढ़ि जड़ता आ मानव विरोधी रवैयाक आलोचना कयल गेल छल । अपन कथा सभमे राजकमल जैविक सामाजिक आ यौन-सम्बन्धी बर्त्ताड़नकेँ [illegible]

[illegible] छपल तँ हल्ला मचि गेल जे राजकमल महोदर [illegible] सम्बन्ध देखा कऽ समाजकेँ पतित कऽ रहल छथि । [illegible] हुनक [illegible] घृणा देखबामे आओल । एखनधरिक [illegible] सामान्यतया लाजेँ कठौत भऽ जाइत अछि, सेहो एकर [illegible] । विरोध ततेक प्रबल छल जे 'कथा समाधिक विघटन आ समस्या नामक एकटा लेख लिखि कऽ राजकमलकेँ एकर प्रत्याख्यान करय पड़लनि । जवाबमे राजकमल लिखलनि इनमेस्ट अथवा अथार्पिक प्रयास मात्रक कें अंकित करब कोनो तरहेँ सुरमा सगुन विचारै ना कथामे हमर उद्देश्य अथवा घटना माध्यम नहि अछि । कथा नायक (मामाजी) जीवनक गतिहीनतामेँ थाकि गेल छथि, तेँ जगन्नाथपुरी जा रहल छथि, आन कोनो उचित अथवा अनर्गल कारणेँ नहि । गायत्री छोट बहिन छथिन, विधवा छथिन, अपन अग्रजक आश्रयमे छथिन तेँ मामाजी तीर्थाटनक लेल हुनको संग लेने जा रहल छथिन । मामीक मृत्युसँ चारूकात अन्हार भऽ गेल अछि एहन शान्त सुखी परिवारमे अव्यवस्था आ अशान्तिक जंगल पसरल जा रहल अछि ।

आजुक समयमे परिवार कोना टूटि पसिया रहल अछि, कोना लोक

पीड़ा परिताप आ अतीतक पुण्य-स्मरणमे जीवन बिता रहल अछि, एतबे अंकित करब, एहि कथामे हमर उद्देश्य छल। एहिसँ बेसी नहि। भांग घीने प्रमत्त भेल मामाजीकेँ अन्हारमे इनार पर परलोकगत पत्नीक संशय होइत छनि। मात्र संशय होइत छनि। ओ कोनो दिन ई नहि बूझि सकलाह, जे ओ विभा (हुनक पत्नी) नहि छलीह, गायत्री (हुनक विधवा बहिन) छलीह। अस्तु, हम अपन कथामे कोनो ठाम एहि प्रकारक संकेत नहि कयने छी, जे गायत्री आ मामाजीमे स्वाभाविकक अतिरिक्त कोनो अस्वाभाविक असामाजिक आकर्षण छलनि। एहन स्थितिमे, श्रीमती सुधारानी झाक ई मिथ्या आ प्रपंचक आरोप हमरा किछु कष्ट दैत अछि, संतोष नहि।

राजकमलक ई दीर्घ वक्तव्य विवादकेँ कहुना तत्काल शांत कऽ देबाक उद्देश्यसँ लिखल गेल छल। कथामे सगोत्र रतिक अस्पष्ट संकेत भेटैत अछि। माहुर कथाक सम्बन्धमे एकटा रोचक प्रसंग अछि। एक दिन राजकमल मैथिलीक साप्ताहिक पत्रिका मिथिला मिहिरक कार्यालय गेलाह। मिथिला मिहिरक उप सम्पादक उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' हुनका पुछलकनि– राजकमल जी ! हमरा एकटा जिज्ञासा अछि। माहुरमे भावहु आ भैंसुरक बीच अनुचित सम्बन्ध छैक की ? राजकमल जीह कुचैत जवाब देलथिन– नारायण-नारायण ! हमरा एहन पापी जुनि बुझू। कार्यालयसँ बाहर निकलला पर जखन हंसराज हुनका पुछलथिन जे अहाँ मोहनजीकेँ एहन असत्य कथा किएक कहलियनि तँ राजकमल जवाब देलथिन - तों नहि जनैत छह। ओ बूढ़ लोक छथि। हुनका दुख होइतनि। तेँ एना कहलियनि।

ननदि भाउज तँ विवाद केँ पराकाष्ठा पर पहुँचा देलक। एहिमे पद्मा सँपकट्टीमे पड़ल बंगट संगे संभोग करैत अछि। रमानाथ झा एहि कथाक बारेमे लिखलनि जे ओना तँ राजकमलक सभ कथा असाधारण होइत अछि, मुदा ई कथा तँ असाधारणतो मे विचित्र अछि। मैथिलीक पुरान आ परम्परावादी लेखक राजकमलकेँ बताह कुकूर बुझय लगलाह, हुनका प्रति घृणा आ आतंक पसारय लगलाह। प्रतिक्रियामे राजकमल एहन पुरातनपंथी लेखकक प्रति व्यवहारमे उग्र आ आक्रामक भऽ जाइत छलाह। बीभत्सता, अनैतिकता, मर्यादाहीनता, उच्छृंखलता आदिक आरोप राजकमल पर निरन्तर लगाओल जाइत रहल आ ओ अन्हार घर सांपे सांप; तथाकथित परम्परावादीक प्रति आदि लिखिकेँ एहि तरहक आरोप आ लांछनकेँ खंडित करबाक प्रयास करैत रहलाह।

राजकलक दुर्भाग्य ई छल जे हुनक अपनहि रचना आ वक्तव्यकेँ हुनक विरोधक हथियार बना लेल गेल। हुनक कविता पांती हमर मोनक आन्हर बताह कुकूरसँ पैंच लऽकऽ हुनका बताह कुकूर कहल गेल। पत्रमे व्यक्त असंयमित जीवनक आधार पर हुनक समस्त रचनाकेँ त्याज्य आ असफल घोषित कऽ देल गेल। ई खाली मैथिलीएमे नहि, हिन्दियोमे एहिना भेल।

1966मे अस्पतालसँ निकललाक बाद राजकमल रमानाथ झाकेँ एकटा पत्र लिखलथिन - 'शरीरक स्थिति नहि कहब, मुदा मोन आब निरोग अछि। तापहीन संयमित जीवन बितेबाक इच्छा भेल अछि। ताराक सिनेह आ अपनेक आशीर्वाद भेटैत रहत तँ हमर मनुष्य जीवन सार्थक हैत। वयसक छत्तीस वर्ष धरि अन्हारहिमे उबडुब करैत रहि गेलहुँ।' मार्च 1967मे ओ दोसर पत्रमे हुनका लिखलथिन साधना-मार्गमे हम त्रिशंकु जकाँ टांगल छी। रास्ता नहि भेटइत अछि। मोन एकाग्र नहि होइत अछि। कुंडलिनीक गिरह सब कोना टूटत ? हम बड्ड पतित छी, उद्धार होयब संभव नहि लगैत अछि। चमत्कार शक्ति प्राप्त करबाक इच्छा नहि अछि, केवल मोनकेँ एकठाम आनि लेबाक अभिलाषा रखैत छी। से कोनो तरहेँ नहि होइत अछि।

जीवनक कोनो क्षणमे अनुभूत राजकमलक एहि भावनाकेँ हुनक सम्पूर्ण जीवन आ साहित्यक मूल्यांकनक आधार बना लेल गेल। राजकमलेक अनुभवकेँ राजकमलपर अंतिम टिप्पणी बना देल गेल। ललका पागक भूमिकामे एहि दुनू पत्रक शब्दावली उधार लैत मानसिक निश्चेष्टताक संग रमानाथ झा लिखैत छथि– एही एकाग्रताक अभावमे राजकमलक कृतिमे कोनहु विषयमे आस्था, विचारक दृढ़ता, कलाक परिपक्वता अथवा साहित्यिक रचनामे एकतानता नहि भऽ सकल। इजोतकेँ ओ दूर सँ चीन्हल, इजोतमे जएबाक कामना हृदयमे प्रबल भेल, मुदा संकल्पक शिथिलता, मनक चंचल आवेग, वासनाक लौल्य हुनका ओहि दिस बढ़ए नहि देलक। हुनक काव्य-सर्जनमे जीवनक मौलिक स्पन्दन तँ अछि, मुदा आलोकमय नहि, भाव संवेदनक तीव्र बौद्धिक विषयगामिता सँ ऊपर नहि उठि सकलाह। ओ केवल जड़गत रूढ़िक विरुद्ध विद्रोह करैत छथि, मुदा लोकजीवनमे मंगलक भावना हुनक काव्यमे नहि आयल। अन्हारहिमे बौआइत क्षणिक भोगक तरंगमे उबडुब करैत ओ जीवन शेष कऽ देल। वस्तुतः राजकमलक अवसान मानवताक अपूरणीय क्षति मानल जाएत। एहन प्रतिभाक ई अंत जीवनमे संयम आ नैतिकताक महत्व सिद्ध करैत अछि। हुनक अपने शब्दमे 'तापहीन संयमित' जीवनमे राजकमलक प्रतिभाक नैसर्गिक रूप स्फुट भऽ सकैत।

वस्तुतः रमानाथ झा राजकमलक प्रति न्याय आ विवेक नहि कऽ सकलाह। चेतनाप्रवाही आ मनोविश्लेषणात्मक शैलीक कारणेँ ओ राजकमल साहित्यक सम्पूर्ण शिल्प केँ कृत्रिम घोषित कऽ दैत छथि। वस्तुतः रमानाथ झा परम्परावादी चिन्तन आ दृष्टिक प्रतिनिधित्व करैत बुझाइत छथि।

आभिजात्य आ सामन्तवादी संस्कारसँ पोषित परम्परावादी लोकनि राजकमलक साहित्यकेँ पतितोपाख्यान कहि कऽ ओकर खिल्ली उड़ौलनि। हुनका सभक नजरि राजकमलक यौन-सम्बन्धी विषय पर तँ गेलनि, हुनक दृष्टि पर नहि गेलनि। राजकमलक उद्देश्य पाठकक कामुकताकेँ भड़काएब कथमपि नहि रहल, अपितु मध्यवर्गीय आ निम्नमध्यवर्गीय मैथिल स्त्रीगणकेँ विभिन्न प्रकारक शोषण आ यंत्रणा सँ मुक्ति देआएब छल। राजकमल धर्म आ नैतिकताकेँ एक वर्गक मनुक्ख द्वारा दोसर वर्गक मनुक्खक शोषण करबाक हथियार बुझैत छलाह। यैह कारण छल जे ओ यौन-जीवन सनक गोपनीय विषयकेँ सार्वजनिक बना, ओहि माध्यमसँ धर्म आ नैतिकताक मानव विरोधी आ बीभत्स स्वरूपकेँ उजागर कयलनि। राजकमल लिखैत छथि– धर्म, नैतिकता, देव-देवतादि समाजक हाथक साधारण हथियार थिक। आन किछु नहि मात्र व्यक्तिकेँ बध करबाक हेतु समाज धर्मक गीत गबइए, नैतिकताक माला जपइए, देवी देवता पर पुष्पहार सजबैए।

बीमारीक पहिल गंभीर दौराक बाद 1966क आरंभमे अपन सासुर चानपुरामे स्वास्थ्य-लाभ करैत राजकमल अनेक श्रेष्ठ रचना कयलनि। कथा साँझक गाछ आ कविता महावन ओही कालक रचना अछि। साँझक गाछ विश्वदर्शी (पैनोरैमिक), तात्विक (फिलॉसोफिकल) आ त्रासदीसँ पूर्ण रचना अछि।

एहि कथाक प्रस्तुत अंशमे राजकमलक वैयक्तिक जीवनक विरोधाभास आ विडम्बना प्रकट भेल अछि– "हमर एतेक पैघ आ वैविध्यपूर्ण जीवनमे हमरा मात्र दुइए तरहक स्त्रीगणसँ भेंट भेल अछि– पहिल तरहक हमर स्त्री आ हमर भौजी आ दोसर तरहक ओ सभ स्त्रीगण जे शहर-बाजारमे घुमैत अछि, एक दोकानमे कोनो वस्तु कीनि, दोसर दोकानमे कोनो आन वस्तु बेचैत अछि। जे थियेटर रोटंकीमे काज करैत अछि, जे ओ काज करैत अछि जे एहि विशाल संसारमे कयल जाइत छैक। पहिल तरहक स्त्रीसँ हम पचहत्तरि योजन दूर भागि कऽ धरि जीवन बौआइत रहल छी,

पहिले तरहक स्त्रीक सम्पर्क पयबाक हेतु, आ अपन गामसँ भागि कऽ, हम सभ ठाम अपन गाम ताकि रहल छी... ।

इऐह थिक हमर जीवनक विरोधाभास - एहन विरोधाभास, जे अपन स्वामीकेँ शरीरसँ रुग्ण रोगग्रस्त, मोनसँ जर्जर आ जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे असफल बना दैत अछि ।'

राजकमल एकटा एहन युगक देन छलाह जे भारतीय स्वतंत्रता संग्रामक साक्षी छल आ नव स्वतंत्र भारतमे अपन अनेक आशा आकाक्षाक पूर्तिक स्वप्न देखैत छल । ओहि समय भारतीय बुद्धिजीवीक एकटा वर्ग एहन छल जे एक दिस पूंजीवादक विरोधी तँ दोसर दिस वैयक्तिक स्वतंत्रताक हनन लऽकऽ मार्क्सवादक कटु आलोचक छल । ई वर्ग एकटा एहन सामाजवादी व्यवस्था चाहैत छल, जाहिमे पूंजीवादी आ मार्क्सवादी व्यवस्थाक दोष नहि हो । मुदा एहि वर्ग लग ओकर बहुत स्पष्ट परिकल्पना नहि छल । एहि वर्गमे जनताक प्रति अपार सहानुभूति आ राजनीतिक व्यवस्थाक प्रति विरोधक भाव छल । राजकमलकेँ भारतीय बुद्धिजीवीक एहने वर्गमे राखल जा सकैत अछि ।

राजकमलक समयमे एहि नव समाजवादी दृष्टिक संग-संग कला एवं साहित्यक क्षेत्रमे पूंजीवादी तथा मार्क्सवादी दृष्टि सेहो प्रतिफलित भऽ रहल छल । मैथिली तथा हिन्दीमे एहि तीनु प्रवृत्तिक प्रतिनिधित्व विभिन्न रचनाकार द्वारा भिन्न-भिन्न ढंगसँ भऽ रहल छल ।

मैथिली कविताक क्षेत्रमे सुरेन्द्र झा 'सुमन' पूंजीवादी भावधारा आ पारंपरिक रचना पद्धतिक प्रतिनिधित्व कऽ रहल छलाह तँ वैद्यनाथ मिश्र यात्री मार्क्सवादी भावधारा आ लोकशिल्पक प्रतिनिधित्व कऽ रहल छलाह । मैथिलीमे चल अबैत लोकोन्मुखी काव्य परंपराकेँ यात्री उत्कर्ष प्रदान कयलनि । ओ जीवन यथार्थ केँ देखबाक एकटा नव दृष्टि आ ओकरा अभिव्यक्त करबाक एकटा नव पद्धति विकसित कयलनि । राजकमल एहि काव्य परंपरासँ अपनाकेँ जोड़लनि अवश्य, मुदा ओकर मतवाद सँ स्वयं केँ पृथक कऽ लेलनि । यात्रीक रास्ता जतय समाजसँ व्यक्ति दिस जाइत छल, ततय राजकमलक रास्ता व्यक्ति सँ समाज दिस । यात्रीए जकाँ राजकमल कविताकेँ शास्त्रीय बंधनसँ मुक्त कयलनि आ काव्य भाषाके लोक भाषाक निकट अनलनि। मुदा यात्रीक सामाजिकता आ राजकमलक वैयक्तिकताक कारणेँ दुनूक शब्दावली, मोहावरा, बिम्ब आ प्रतीक भिन्न भऽ गेल ।

राजकमलक कविता व्यक्तिक राग विरागक ग्राफ अछि । ओहिमे निजता आ अपनत्व अछि । राजकमलक काव्यानुभूति ततेक तीव्र आ निष्कपट अछि जे ओ अनायास आकृष्ट तथा अभिभूत कऽ लैत अछि। अभिनव दृष्टि आ अनुभव सिद्ध संवेदना हुनक काव्यकेँ विशिष्ट आ शक्तिशाली बनबैत अछि । व्यक्तिपरक होइतहु ऐतिहासिक तथा पौराणिक प्रतीक एवं बिम्ब निर्माणक कारण हुनक काव्य संदर्भ विस्तृत आ व्यापक भऽ जाइत अछि ।

राजकमलक समयमे मायानंद मिश्रक अभिव्यंजनावाद, सोमदेवक सहजतावाद आ कीर्तिनारायण मिश्रक अकवितावाद चर्चाक विषय बनि कऽ रहि गेल, कानो काव्यादोलन ठाढ़ नहि कऽ सकल । एहि सभकेँ समाहित करैत नवकविता अस्तित्वमे आयल जे तत्कालीन नव काव्य दृष्टि आ नवीन अभिव्यक्ति पद्धतिक परिचायक भऽ गेल । नवकविता अनुभूत यथार्थ आ ओकर अकृत्रिम अभिव्यक्ति पर जोर देलक । राजकमल एहि नवकविताक सब सँ समर्थ प्रतिनिधि छलाह । मैथिलीक कथो साहित्यमे अनेक प्रवृत्ति आ रुझान प्रकट भऽ रहल छल । एक दिस जँ भाववादी रोमांटिकता सँ युक्त मायानंद मिश्र सनक कथाकार छलाह तँ दोसर दिस मार्क्सवादी विचारधारासँ प्रभावित ललित छलाह । ललित नव स्वतंत्र भारतक मूलभूत सामाजिक आर्थिक परिवर्तनकेँ रेखांकित कयलनि । एहि परिवर्तनकेँ राजकमलोक कथामे लक्षित कयल जा सकैत अछि, मुदा ललितमे जे विविधता आ व्यापकता भेटैत अछि, से राजकमलमे नहि । ललितक झुकाव प्रतिनिधिक चरित्र निर्माण दिस बेसी छनि; राजकमलमे एहन झुकाव नहि अछि । राजकमल मुख्यतः स्त्रीक शोषण आ उत्पीड़नकेँ अपन कथा साहित्यक विषय बनौलनि जखन कि ललितक संसार विस्तृत आ बहुरंगी अछि। राजमोहन झा लिखैत छथि - ''कथ्यक विविधता, दृष्टिक विस्तार तथा अनुभूतिक गाम्भीर्य जे ललितमे भेटैत अछि से राजकमल आ मायानंदमे नहि । राजकमल आ मायानंदक भावभूमि सघन बेसी अछि, विस्तृत कम ।'

मैथिली हिन्दी कथा साहित्यमे राजकमलक शैली सर्वाधिक विशिष्ट वस्तु अछि । ओ कथाक पारंपरिक वर्णनात्मकता एवं लम्बवत विकासवला ढाँचाकेँ तोड़ि देलनि । हुनक शिल्पमे कथा एवं कविता दुनूक वैशिष्ट्य समाहित अछि ।

राजकमलक मैथिली साहित्य अधिकांशतः ग्रामीण जीवनसँ जुड़ल अछि। हुनक व्यक्तित्व मैथिल संस्कृतिसँ निर्मित आ संस्कारित छल । मैथिल संस्कृति मूलतः कृषि संस्कृति अछि । यैह कारण अछि जे हुनक मैथिली साहित्य ग्राम्य जीवनपर केन्द्रित अछि । मैथिलीमे हुनक स्वाभाविक, सहज सरल आ अकृत्रिम रूप प्रकट होइत अछि, तेँ हुनक मैथिली साहित्य नैसर्गिक आभासँ युक्त आ जीवन्त अछि ।

हिन्दी साहित्यमे राजकमल शहरी जीवनक चित्रण कयलनि । शहरी जीवनक कृत्रिमता आ अविशिष्टता सँ हुनक मैथिली साहित्य बचल अछि तेँ बेसी मानवीय, भव्य आ मोहक लगैत अछि ।

राजकमलक कलाक बारेमे जीवकान्त सार्थक आ सटीक टिप्पणी करैत लिखैत छथि - ओ लेखने टा नहि गपाशप मे शब्दक विलक्षण ढंगे प्रयोग करैत छलाह । शब्दपर राजकमलक निजत्वक छाप रहैत छलनि। शब्दकेँ ओ बड़ तपस्यासँ सिद्ध कयने छलाह, अपन वशमे कयने छलाह । यैह कारण अछि जे मैथिलीमे हुनक शब्दक, हुनक मोहावराक एकटा विशिष्ट आकर्षण आ स्वाद छल । कविता आ गद्यक भाषा जे ओ अपना लेल विकसित कयलनि, से बड़ टटका, बड़ मोहक आ बड़ विस्मयकारी छल। हिन्दियोमे ओ एहने भाषा, निजत्वपूर्ण भाषा विकसित कयने छलाह, जकर आकर्षणमे हुनक विरोधियो फँसि जाइत छल आ ओहि सटीक आ महत्वपूर्ण भाषाक लोहा मानि लैत छल ।

हिन्दी

राजकमल चौधरी हिन्दीमे आठ उपन्यास, दू अढ़ाय सय कविता, बेरानबे टा कथा पचपन टा निबंध, तीन टा नाटक आ पाँच टा नियमित स्तम्भ-लेखन कयलनि । निबन्ध, नाटक आ स्तम्भ लेखन एखनधरि पुस्तकाकार प्रकाशिते नहि भऽ सकल अछि । हिन्दी मे तीन टा कथा संग्रह अयला पर हुनक अनेक कथा एखनो असंकलित अछि। सामुद्रिक और अन्य कहानियाँ आ मछली जाल ई दुनू कथा संग्रह दुष्प्राप्य अछि । एकटा संग्रह 1995मे आयल अछि । सरेश शर्मा आ शोभाकांत मिश्रक सम्पादनमे हुनक कविता संकलन इस अकाल वेलामे 1988मे छपल, जाहिमे हुनक ककविता आ मुक्तिप्रसंग समेत दू सय पन्द्रह टा कविता संकलित भेल अछि । हिन्दीमे ओ किछु बंगला उपन्यासक अनुवाद कयलनि । राजकमल अंग्रेजियोमे किछु कविता लिखलनि । हुनक 10-12 टा अंग्रेजी कविता उपलब्ध अछि । हुनक ब्लीफ शीर्षक कविता अमरीकी पत्रिका पटिपोरीक ग्रीष्म अंकमे छपल छल ।

हिन्दीमे राजकमल 1956सँ छपय लगलाह । पहिल रचना जे सितम्बर 56मे नई धारामे छपलनि से छलनि 'बरसात रात प्रभात नामक कविता' तकर बाद डेढ़ साल धरि कतहु कोनो कविता नहि छपलनि। 1958मे मात्र दू टा कविता छपलनि । 56सँ 58 धरि तीन सालमे हुनक मात्र तीन टा हिन्दी कविता छपलनि । 1957क अंतमे ओ कलकत्ता

चल गेल छलाह आ ओतय जीवाक लेल तीव्र संघर्ष कऽ रहल छलाह। कवितामे पाड़ नहि छलैक, पाड़ छलैक गद्यमे। आ जीवाक लेल हुनका पाइक बड्ड बेगरता छलनि तेँ ओ कविता कम, गद्य बेसी लिखलनि। 1957-58मे ओ मैथिली मे तीन टा उपन्यास, अनेक कथा आ कविता लिखलनि। हिन्दीक लेल हुनका समयो नहि छलनि। 1958क उत्तरार्द्धमे ज्ञानपीठमे नोकरी शुरू कयलाक बाद ओ हिन्दी दिस झुकि गेलाह। हिन्दीमे बेसी रचना करय लगलाह। 1960धे नोकरी छोड़ि देलाक बाद तँ ओ पूर्णतया हिन्दीकेँ समर्पित भऽ गेलाह। 1961-62मे पाँच-सात टा छोट-छोट कविताक अतिरिक्त ओ मैथिलीमे किछु नहि लिखलनि। एहि अवधिमे ओ बहुत तीव्र गतिएँ हिन्दीमे प्रचुर रचना कयलनि। जीविका लेल लेखन पर निर्भर रहबाक कारणेँ दोसर कोनो उपायो नहि रहनि। पाड़ हिन्दिएमे रहैक, मैथिलीमे नहि। पाइए लेल ओ कैक टा बंगला उपन्यासक हिन्दी अनुवाद कयलनि, जाहिमे सभसँ बेसी शंकरक चौरंगी प्रसिद्ध भेल। कलकत्तामे रहैत ओ बंगला सीखि गेल छलाह। सम्पर्क आ अध्ययनक बलेँ हुनका बंगला भाषा पर अधिकार भऽ गेल छलनि। अप्रैल 1963धे कलकत्ता छोड़बा धरि ओ खाली हिन्दिएमे लिखैत रहलाह। 1960सँ 1967 धरि, सात साल, ओ हिन्दीमे घुरझार लिखलनि। ओना हिन्दीमे लिखब ओ बहुत पहिनहि शुरू कयने छलाह 1948-49मे, मुदा छपब शुरू कयलनि 1956सँ।

मैथिली आ हिन्दीमे राजकमल अनेक नामसँ लिखलनि— शशि चौधरी, अनामिका चौधरी, चन्दलता सिंह, कमल चौधरी, फूलचन्द, मासूम अजीमाबादी आदि। 1956क जमानामे राजकमल मासूम अजीमाबादीक नामसँ उर्दू शेरो शायरीक तर्ज पर किछु रचना कयने छलाह। ओहि समय ओ पटना सचिवालयमे किरानी छलाह आ अपन जीवनसँ असंतुष्ट रहबाक कारणेँ व्यवस्थाक प्रति हुनका मोनमे विद्रोहक भाव छलनि। विद्रोहक ई भाव हुनक उर्दू ढाँचावला रचनामे सेहो प्रकट भेल।

हुनक ई विद्रोही मनोभाव कलकत्ताक जीवन संघर्षक कारणेँ आओर तीव्र आ गहन भऽ गेलनि। एक दिन ओ छेदी लाल गुप्तकेँ कहने छलथिन जे हम कम्युनिस्ट छी आ हमरा कम्युनिस्ट पार्टीक काज करबाक चाही। एही कारणेँ किछु दिन धरि ओ कम्युनिस्ट पार्टीक पत्र स्वाधीनता जाइत रहलाह। कम्युनिस्ट ओ रहल होथि वा नहि, मुदा हुनक जीवन परिस्थिति जेहन छलनि, जे ओ मार्क्सवादी विचारधाराक प्रति आत्मीयता आ सहानुभूति अवश्य अनुभव करैत रहल होताह। छेदीलाल गुप्त लिखैत छथि— मुझसे वह जब-जब मिला है, तब-तब उसके चेहरे पर आदमी की जहालत के झेलने का तनाव मिला है और आक्रोशमे कहते-कहते चुप हो जाने के बाद सहसा अब चला कह कर वह चला गया है।

कलकत्ताक हुनक आरंभिक जीवन कष्ट आ अपमानक जीवन छलनि। अभावपूर्ण जीवन हुनका मिथिला दर्शन आ स्वाधीनता सँ दूर लऽ गेलनि। ओ ज्ञानपीठसँ सम्बद्ध भऽ गेलाह। हुनक एहि यात्राक व्याख्या करैत छेदीलाल गुप्त लिखैत छथि— स्वाधीनता से ज्ञानोदय तक की उसकी यात्रा न केवल एक काम करने वाले आदमी की यात्रा थी, बल्कि एक सूझ बूझ वाले आदमी के स्वाभाविक विकास की यात्रा थी। उसके विचारों में भी परिवर्तन आया था और उसके ज्ञानोदय के दफ्तर में ही बैठकर मार्क्सवाद को कोसा था और प्रगतिवाद को पुराना करार देते हुए वह सब अस्वीकार गया था, जिन स्वीकारोक्तियों के आधार पर वह नौकरी ढूंढने का काम मुझ पर सौंपे था। इस परिवर्तन से मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ था, क्योंकि कलकत्ते में हजार हाथ की काली की कराल प्रतिमा है, चौरंगी है, बार हैं, होटल हैं और एक ऐसा वर्ग व्यामोह है जो सहज में आदमी को आकर्षित करता है, लालसाओं की चटखार के लिए ढकसाता है, क्योंकि यहाँ आए दिन की जरूरतें निर्णायक परिस्थिति बनती हैं...।

छेदीलाल गुप्त सँ एक दिन अचानक भेंट भेला पर राजकमल कहलथिन— नीक बूझी अथवा बेजाय, हम तँ आब वैह लिखब जे लिखने पाइ देबऽवला अखबार पाइ दैत अछि।

राजकमलक एहि कथनक अर्थ ई नहि लगाओल जयबाक चाही जे एहिसँ पूर्व ओ क्रांतिकारी साहित्यक सृजन करैत छलाह आ आब प्रतिक्रियावादी भऽ गेलाह। विद्रोह राजकमल साहित्यक स्थायी चरित्र अछि, ठीक ओहिना जेना सेक्स; राजकमलक विद्रोह वैयक्तिक दुखभोग आ पीड़ासँ जन्य लैत अछि तेँ ओहिमे प्रभूत ओज आ करुणा भेटैत अछि, आगाँ चलि कऽ जे छूटि जाइत अछि से अछि युवा राजकमलक राजनीतिक प्रतिबद्धता। आब ओ अपन निजी इच्छा-आकांक्षा, अनुभव आ ज्ञानसँ परिचालित होमय लगैत छथि।

मुदा राजकमलमे ई परिवर्तन अचानक नहि भेल। प्रखर राजनीतिक चेतनासँ सम्पन्न आ जुझारू महानगर कलकत्तामे जीवन बितबैत ओ आधुनिक सभ्यताक मारूख चरित्रकेँ चिन्हलनि आ ओकरा अपन पहिल हिन्दी उपन्यास नदी बहती थी मे व्यक्त कयलनि— बड़े-बड़े पुस्तकालय, और म्यूजियम, और घास के लम्बे मैदान, और पार्क, और विश्वविद्यालय, और शेयर मार्केट, और सरकारी दफ्तर सारे के सारे अफीम हैं। हम सभी अफीम के नशे में कैद हैं। हमें पता नहीं चल रहा है कि वक्त हमें किन चक्कियों में पीस रहा है। हम अपना खून उगल रहे हैं, और अपने इर्द गिर्द के लोगों का खून पी रहे हैं।... हम लूट लिए जाते हैं, लेकिन हमें मालूम नहीं होता कि लुटेरा कौन है। अब लूट का तरीका बदल गया है, लुटेरे हमारी दौलत, ताकत, इज्जत या ईमान लूटते नहीं, बस खरीद लेते हैं। हम बिक जाते हैं, अपना सम्पूर्ण अस्तित्व उन्हें सौंपकर हम भर जाते हैं। हमारा घर-परिवार, हमारी सुख शांति, हमारी दुनिया मर जाती है और उनकी दुनिया बनती जाती है।

हुनका विश्वास भऽ गेल छलनि जे एहि खरीद-बिक्रीसँ एहि मृत्युसँ कोनो राजनीतिक विचारधारा वा दल छुटकारा नहि देआ सकैत अछि। आरंभमे जाहि मार्क्सवादी विचारधारा पर हुनका आस्था रहनि, तकरो सँ मोहभंग भऽ जाइत छनि। नदी बहती थीक पात्र रंजीत कहैत अछि— मार्क्स-एंगेल्स से हीं क्या मिला ? हुनक ई निराशा कलकत्ता प्रवाससँ लऽ कए जीवनक अंत धरि बनल रहलनि। 1967क आम चुनावक बाद अपन वक्तव्य मे ओ लिखैत छथि— जनता परिवर्तन चाहती है, जबकि परिवर्तन के स्वरूप की उसे कल्पना नहीं है, और न ही किसी भी वामपंथी राजनीतिक दल के सिद्धान्तों और योजनाओं को जनता ने स्वीकार ही किया है। जनता नहीं जानती है कि आर्थिक स्वाधीनता का अर्थ क्या होता है और इसे कैसे प्राप्त किया जाता है। ऐसी परिस्थिति मे बुद्धिजीवियों का- खासकर लेखकों और कवियों का यह सामाजिक कर्तव्य होता है कि वे जनता को सही जानकारी दें— उसकी स्थिति के विषय में और उसकी मुक्ति के विषय में।

सही जानकारी देबाक लेल आ मुक्ति देआबए लेल राजकमल जनता लग वापस चल जाए चाहैत छथि। राजकमल जनताक दुखसँ व्यथित छथि आ अपन दायित्व-चेतना हुनक पीछा करैत रहैत छनि, मुदा मुक्तिक उपायक बारेमे हुनका बूझल नहि छनि, तेँ मुक्तिप्रसंगमे ओ लोकतंत्री संसारसँ अलग भऽकऽ साधु, भिखमंगा आ रंडीक दुनियामे आ मसानमे चल जेबाक आह्वान करैत छथिन। एहि अनास्थावादी, अराजकतावादी, आत्मघाती आह्वानक लेल राजकमलक बहुत तीव्र आ व्यापक आलोचना भेल। मुदा ई आह्वान हुनक तात्कालिक

तांत्रिक मनोदशा मात्रकेँ इंगित करैत अछि । मुक्ति प्रसंगक एहि तथाकथित अराजक स्वरक बाद जखन हुनक ई वक्तव्य आयल जे आब ओ जनता लग वापस चल जेताह तँ हिन्दी जगत चैनक सांस लेलक आ एहि वक्तव्यकेँ आधार बना हुनक तथाकथित साहित्यिक बुराइ लेल क्षमा-याचना करैत हुनक प्रतिभाक मंगलकारी प्रस्फुटन लेल एकटा आशावादक स्थापना कयलक ।

किन्तु राजकमल तँ राजकमल छलाह वैयक्तिकता आ सामाजिकताक द्वन्द्वसँ निर्मित । जँ जीवित रहितथि तँ कोनो दिन कहि सकैत छलाह - हम जनता लग नहि जायब, हमर की कऽ लेब ? जेना ओ अज्ञेयक प्रसंगमे कयने छलाह । राजकमल मुक्तिप्रसंग अज्ञेयकेँ समर्पित कयने छलाह, अज्ञेयक पत्रक संग । पत्रमे अज्ञेय लिखने छलथिन जे मृत्युकेँ स्वीकार कए जीवन जियल जा सकैत अछि । एहि पत्र पर अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत शिवचन्द्र शर्माकेँ राजकमल कहने रहथिन– ओहुना कोनो स्वीकार्य हमरा लेल सदैव अस्वीकार्ये रहल अछि । आ मृत्यु ! डेरबुक आ लोक केँ फुसियाहऽवला निरीह शब्द । अंतिम सांस धरि हमरा जीबने स्वीकार्य होयत ।

राजकमल कोनो तरहक मतवादकेँ साहित्य लेल घातक बुझैत छलाह। हमरा लोकनिक युग आ आधुनिक मैथिली नामक अपन निबंधमे ओ लिखैत छथि– कविता जखन वादक ससरफानी सँ बान्हल जाइत अछि, तखने कविताक अर्थ, रस, संदर्भ आ प्राणवत्ता समाप्त भऽ जाइत छैक , कविताक लेल बाट होइत अछि खेतक ऊँच आरि जकाँ, जे एहि खेतक पानि ओहि खेतमे जाय नहि देत । साहित्यिक संदर्भमे सभ प्रकारक मतवादक विरोधी हाइतो राजकमल लेखकीय जीवन-दर्शनकेँ नीक साहित्यक लेल अनिवार्य बुझैत छलाह । ओ लिखैत छथि लेखक आधारि अपन जीवन-दर्शनक अनुसार जीवन व्यतीत करैत अछि आ संघर्षमे सम्मिलित रहैत अछि, ताधरि ओकर रचना नहि टुटैत छैक आ ओ अपनो नहि टुटैत अछि । अर्थात् लेखककेँ सम्मिलित रहब आवश्यक छैक आ आवश्यक छैक जे ओकरा अपन एकटा जीवन दर्शन हो ।

राजकमल अपन वैयक्तिक मान्यता आ विचारक आधार पर जीवन बितबैत सामाजिक संघर्ष करय चाहैत छलाह । हुनक विश्वास छलनि जे कोनो बाह्य मतवाद वा जीवन-दर्शन रचनाकारक व्यक्ति-जीवन आ लेखकीय-जीवनक निजता आ स्वतंत्रताक अपहरण कऽ लैत अछि। एहन स्थितिमे रचनाकारक व्यक्तिगत जीवन बलीव आ ओकर साहित्य निष्प्राण भऽ जाइत अछि ।

राजकमल अपना लेल एकटा जीवन-दर्शन गढ़लनि । हुनक जीवन-दर्शन व्यवस्थित आ सुसंगत नहि अछि आ ओहिमे बहुत अन्तर्विरोध अछि । ओ प्रकटतः अत्यन्त व्यक्तिवादी लगैत अछि मुदा सारतः व्यक्त आ समाजक पारस्परिक द्वन्द्व पर आधारित अछि ।

राजकमलमे जे व्यक्तिवाद, विद्रोह आ सेक्स भेटैत अछि, ताहि आधार पर हुनका अमेरिकाक बीट पीढ़ी, बंगलाक भूखी पीढ़ी आ हिन्दीक अकविता आन्दोलनसँ जोड़ल जाइत रहल अछि । किछु गोटय तँ हुनक जीवन शैली आ समस्त साहित्यकेँ बीट आ भूखी पीढ़ीक अनुकरण आ नकल मानैत अछि । एहन आरोप तथ्य सँ दूर आ असत्य अछि ।

अमेरिकामे बीट पीढ़ी जखन 1954-55मे जन्म लऽ रहल छल आ अपन प्रतिष्ठा आ प्रचार लेल संघर्ष कऽ रहल छल; राजकमल तखन मैथिलीमे खूब छपि रहल छलाह आ हुनक व्यक्तिवाद, विद्रोह आ सेक्स हुनक साहित्यमे तखनो उपस्थित छल । बीट पीढ़ीक गंध भारतकेँ 1960-61मे लागल आ ओकर प्रचार तखन भेल, जखन 1962मे एलेन गिन्सबर्ग भारत अयलाह ।

समृद्ध अमेरिका आ पिछड़ल भारतक आर्थिक-सांस्कृतिक स्थितिमे धरती आकाशक अंतर छल । बीट पीढ़ी जकाँ राजकमल ने तँ मादक द्रव्य पर सँ प्रतिबंध हटयबाक मांग कयलनि, ने समलैंगिक यौन सम्बन्धक ओकालति कयलनि । राजकमल बिटनिक जकाँ ने कविताकेँ एहि रूपमे कहियो परिभाषित कयलनि जे ओ व्यक्तिक गोपन आत्माक झाँकी होइत अछि, ने ओ यौन-सम्बन्धमे अविश्वसनीय माधुर्यक खोज कयलनि । राजकमलक साहित्य बीट पीढ़ीक नकल अथवा ओकर उत्पाद (आउटप्रोडक्ट) नहि अछि । बीट, भूखी पीढ़ी आ राजकमलक आपसी समानता पूंजीवादी समाजक सामान्य चरित्रकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि । अपन साहित्यमे राजकमल बीट पीढ़ी आ गिन्सबर्गक उल्लेख करैत छथि, किन्तु ई उल्लेख अपन जीवन-शैली आ साहित्यकेँ मान्यता आ प्रतिष्ठा देअयबाक उद्देश्यसँ होइत अछि । भूखी पीढ़ी आ अकविता आन्दोलन सँ अपन सहानुभूति आ निकटता प्रदर्शित करबाक काज राजकमल अपन विरोधीकेँ कमजोर करबाक उद्देश्यसँ करैत छथि । ई सर्वविदित अछि जे वामपंथी लेखक आ आलोचक हुनक प्रबल विरोधी छल ।

राजकमलकेँ बंगालक भूखी पीढ़ीक हिन्दी प्रवक्ता बुझल जाइत छल। लहर अप धर्मयुगमे भूखी पीढ़ीपर लेख लिखि कए राजकमल ओकर प्रचार प्रसारमे सहायक भेल छलाह । 1965क शुरू मे कंचन कुमार सँ बनारससँ प्रकाशित पत्रिका मरालक बंगला नवलेखन विशेषांकक ओ सम्पादनो कयने छलाह । ई विशेषांक भूखी पीढ़ी पर केन्द्रित छल। शिवचन्द्र शर्मा हुनका पर आरोप लगौलनि जे राजकमल हिन्दी पाठककेँ भूखी पीढ़ीक असली चेहरा एहि खातिर नहि देखौलनि जे ई कथलासँ हुनक अपन पर्दाफाश भऽ जइतनि । शिवचन्द्र शर्माकेँ लगैत रहनि जे राजकमल भूखी पीढ़ीक नकल करैत छथि ।

शिवचन्द्र शर्मा लिखैत छथि– भूखी पीढ़ीक मलयराय चौधरी (एक प्रकारसँ) घटनेक छथि । राजकमल, रेणु, शिवमंगलजी आदिमँ हुनका बराबरि भेंट होइत रहैत छलनि । राजकमल आ मलयराय बहुत घनिष्ठ छलाह । दुनू स्वयंमे छोट-मोट दैनिक सर्कुलेशन छलाह । हिन्दीक छोट-छोट पत्रिकामे भूखी पीढ़ी आबि चुकल छल । बादमे लहर आ धर्मयुगमे राजकमल आदि पर परिचयात्मक लेख लिखलनि। मुदा ओहिमे ओकर ओहन उद्धरण (सोद्देश्य) नहि देल गेल, जाहि लेल ई पीढ़ी ख्यात अथवा कुख्यात छल ।

ई सत्य अछि जे राजकमलक परिचयात्मक लेखमे भूखी पीढ़ीक मूलभूत स्थापना नहि आबि सकल । शास्त्रीय विवेचनाक ढंगमँ भिन्न राजकमलक अपन नाटकीय उपस्थापन शैली रहनि । एकर अर्थ ई नहि जे राजकमल अपन अनुकरणकेँ चुकयबाक लेल भूखी पीढ़ीक मान्यताकेँ विरूपित कऽ देलनि ।

भूखी पीढ़ीक बन्मदाता मलयराय चौधरी अपन जेठ भाइ समीरराय चौधरीक माध्यमे गिन्सबर्गक सम्पर्कमे आयल छलाह । मलयराय चौधरीक पढ़ाइ लिखाइ पटनामे भेल छलनि आ पत्रकार आ स्टेट बैंकमे नोकरी करैत छलाह । गिन्सबर्ग पटनामे मलयराय चौधरीक घर पर गेल रहथि। मलय गिन्सबर्गक विचार आ जीवन शैलीसँ बहुत प्रभावित भेल छलाह। एहिसँ किछु पहिनहि मलयकेँ स्यैंगलरक सांस्कृतिक अपक्षय सम्बन्धी धारणा आकृष्ट कयने छलनि । ओ अंग्रेज कवि चौसरक *In the soure hungry tyme* पंक्तिसँ हंग्री शब्द लऽकए ओकरा स्यैंगलरक दार्शनिक चिंति प्रदान कयलनि । गिन्सबर्गसँ भेंट हुनक धारणाकेँ बल प्रदान कयलकनि आ नव आयाम देलकनि । मलय अपन धारणाक समर्थनमे शक्ति चट्टोपाध्यायसँ गप्प कयलनि । शक्ति क्षुब्ध कातर आक्रमण शीर्षकसँ एकटा लेख लिखलनि, जाहिमे मलयराय चौधरीक परिकल्पनाकेँ व्याख्यायित कयल गेल छल । अप्रैल 1962मे मलय हंग्री

जेनरेशन नामक एक पृष्ठक बुलेटिन कलकत्तासँ प्रकाशित करबौलनि। भूखी पीढ़ी एही बुलेटिनसँ प्रारंभ होइत अछि। एहि बुलेटिनमे स्रष्टाक रूपमे मलयराय चौधरी, नेतृत्वमे शक्ति चट्टोपाध्याय आ सम्पादनमे देवी रायक नाम छपल छल। हंग्री जेनरेशनक ई पहिल बुलेटिन भूखी पीढ़ीक सैद्धान्तिक स्थापनाक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अछि।

मलयराय चौधरीक सम्पूर्ण वक्तव्यमे कोनो विषयक अथवा मादक द्रव्यक सम्बन्धमे कोनो स्थापना नहि अछि। ओ कवितासँ अन्तरात्मा एवं बहिरात्माक क्षुधा शांत करबाक काज लेबय चाहैत छथि। अन्तरात्माक क्षुधा-शांति पर हुनक जोर बेसी छनि। हंग्री जेनरेशनक दोसर बुलेटिनमे शक्ति चट्टोपाध्यायक कविता छपल। कविताक अंतमे ओ भात पर अर्थात् बहिरात्माक क्षुधा शांतिपर जोर देलनि। हंग्री जेनरेशनक चारिम, पाँचम आ छठम बुलेटिन अंग्रेजीमे छपल, जाहिमे आलोचनाक कर्तव्य निर्धारित कयल गेल।

आगाँ चलिकेँ मलयराय चौधरी भूखी पीढ़ीक उद्देश्यकेँ आओर स्पष्ट करबाक लेल चौदह टा सूत्र उपस्थित कयलनि, जकर मूलमे अहं आ परम्परासँ विद्रोह मुख्य अछि। भूखी पीढ़ीक रचनाकारकेँ एहि बातक रोष रहनि जे प्रतिष्ठित पत्रिका हुनका सभक रचना नहि छपैत अछि। एक बेर ओ सभ एकटा पत्रिकाक ऑफिसमे ढूकि गेलाह आ सादा कागजक ताव दैत कहलथिन— ई कथा देने जाइत छी, एकरा छापय पड़त। दोसर बेर ओ सभ पुस्तक समालोचना स्तम्भक अन्तर्गत समीक्षा करबाक लेल सम्पादककेँ जूताक खाली डिब्बा पठौने छलाह।

एक दिन ओ सभ भाड़ा पर एकटा स्वीकेँ आनि ओकर स्तनक प्रदर्शनी लगबौलनि। एहि तरहक वक्तव्य आ क्रिया-कलापक उद्देश्य निश्चित रूपसँ लोकक ध्यान आकृष्ट करब आ प्रचार पायब छल। भूखी पीढ़ी तत्कालीन बंगला जगतमे ख्यातिक संग संग घृणा आ विरोध सेहो अर्जित कयलक। 2 सितम्बर 1964केँ कलकत्ताक पुलिस भूखी पीढ़ीक एगारह टा रचनाकारपर हंग्री जेनरेशन सन अश्लील पत्रिका प्रकाशित करबाक कारणेँ मोकदमा दायर कयलक। ओही दिन कलकत्तामे सुभाष घोष आ शैलेश्वर घोषकेँ गिरफ्तार कऽ लेल गेल। 4 सितम्बर 1964केँ पटनामे मलयराय चौधरीक घरक तीन घंटा धरि तलाशी लेल गेल आ मलय गिरफ्तार भऽ गेलाह। तकर बाद चाइबासासँ समीररायचौधरी, त्रिपुरा सँ प्रदीप चौधरी आ हावड़ासँ देवी रायकेँ गिरफ्तार कऽ लेल गेल। ई सभ बादमे जमानत पर छुटलाह। आगाँ चलि कऽ मोकदमा मात्र मलय पर चलल। हंग्री जेनरेशनक आठम अंकमे मलयराय चौधरीक कविता छपल छल— प्रचंड वैद्युतिक छुताए। एही कविताक आधार पर पुलिस हंग्री जेनरेशनकेँ अश्लील आ अवैध घोषित कऽ देने छल। एलेन गिन्सबर्गकेँ पता लगलनि तँ ओ न्यूयार्कसँ अनेक व्यक्तिकेँ पत्र लिखि कए सहायता देबाक अपील कयलनि।

ई कविता प्रचलित काव्य संस्कारसँ भिन्न छल। एहिमे उच्छ्वास आ प्रचण्ड भावावेग अछि। ई कविता मलय केर धारणक अनुरूप विराम चिह्न रहित आ छंदहीन अछि। भाषा बोलचालक अनुरूप अछि।

कलकत्ताक निचला अदालत मलयकेँ दू सय टाका जुरमाना अथवा एक मासक कारावासक सजा सुनौलक, किन्तु हाइकोर्ट 26 जुलाइ 1967केँ हुनका बरी कऽ देलक। एहि सभसँ भूखी पीढ़ी छिड़िया गेल। बरी भऽ गेला पर मलय हंग्री जेनरेशनक दू अंक निकाललनि— नवम आ दसम। 1968मे दसम अंकमे मोकदमाक रिपोर्टिंग संगे हंग्री जेनरेशन सभ दिनक लेल बंद भऽ गेल आ मलय साहित्य-जगतसँ आत्मनिर्वासित भऽ गेलाह।

भूखी पीढ़ीक उपर्युक्त इतिवृत्तकेँ देखि कए लगैत अछि जे राजकमल कलकत्ता-प्रवासमे हंग्री जेनरेशनक अंक देखनहु हेताह तँ एक्के आध टा। एहि पत्रिकाक वितरण स्थल कलकत्ताक कॉफी हाउस छल, जतय राजकमल जाइत छलाह। भूखी पीढ़ीकेँ एखन एक्के साल भेल रहय कि राजकमल कलकत्ता छोड़ि देलनि। पटना अयलाक लगभग एक साल बाद ओ भूखी पीढ़ी पर लहरमे एकटा लेख लिखलनि। एहिसँ लगैत अछि जे मलयराय चौधरीसँ हुनक सम्पर्क पटना अयलाक बाद मेल हेतनि। राजकमलक अनुभव आ संवेदनाकेँ भूखी पीढ़ीसँ परिप्रेक्ष्य भेटल हेतैक, एहि तरहक कल्पनो करब हास्यास्पद अछि। विस्तारित अहं; शिल्प आ परम्परासँ विद्रोह आदि समानता रहितहु राजकमलक काव्य संस्कार भिन्न अछि आ हुनक अपन अनुभव जगतक देन अछि।

अकविता-आन्दोलन व्यक्ति सत्ता, अनुभूत सत्य आ वैयक्तिक चेतना पर जोर दैत छल। ओ कैक दृष्टिएँ बीट आ भूखी पीढ़ीक मेलमे अछि। अकविता आन्दोलन 1966मे अकविता नामक पत्रिकाक प्रकाशन संगे शुरू भेल, मुदा एकर पैनी 1963मे छानल गेल जखन जगदीश चतुर्वेदी प्रारंभ नामक एकटा संकलन बहार कयने छलाह। एहि संकलनमे राजकमलकोक कविता संकलित अछि। अकविता पत्रिकामे सेहो राजकमलक कविता छपल। राजकमल प्रचुर मात्रामे रचना करैत छलाह आ मुक्त भावसँ प्रकाशन लेल दऽ दैत छलाह। हुनक एहि प्रवृत्ति पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करैत शिवशंकर शर्मा लिखैत छथि— राजकमल नई से नई पीढ़ीमे इसलिए प्रचारित-परिचित हो जाते थे कि, खुटभैये भी, अगर दस-पाँच पेज की भी, कोई अपनी मैग्जिन (लिट्ल मैग्जिन) निकालते थे, तो राजकमल सहर्ष, कभी-कभी अधाचित रूपमे भी, उनमें होते थे। बयार को पीठ देने में राजकमल उस्ताद थे।

बीट, हंग्री आ अकविता संगे राजकमलक सम्बन्ध कतहु बयारकेँ पीठ देब नहि छल। ब्रह्मचारी जे इन्टरव्यू हुनकासँ लेने रहनि, ताहिमे बीट, हंग्री आ अकविता संगे अपन सम्बन्धकेँ स्पष्ट करैत ओ कहने रहथिन— अमेरिकामे बरोज, गिन्सबर्ग, करुआकक नेतृत्वमे नव पीढ़ीक कवि आ बुद्धिजीवी प्रभुसत्ता (एसटेब्लिशमेंट)क विरुद्ध आन्दोलन आरंभ कयलक। बंगालमे यैह काज अपन सीमा संग मलयराय चौधरी आ हुनक संगी आरंभ कयने छथि। हिन्दीक अकविता कवि नागरिक द्वारा अथवा नागरिक कवि द्वारा काव्य विषय आ काव्याभिव्यक्तिक नव माध्यम आ प्रवाहकेँ अपन कवितामे प्राप्त करबाक चेष्टा कयल गेल अछि। हम राजकमल चौधरी, बहुत बातमे बहुत दूर धरि हिनका सभक संग रहितो हिनका सभमे नहि छी। हमर अपन शारीरिक सीमा अछि जे हमरा कोनो वाद, विवाद, भीड़, जुलूस, गोष्ठी, आन्दोलन एवं संस्था-सम्मेलनमे सम्मिलित हेबामे तँ बाधक नहि होइत अछि, मुदा बिना सदस्य भेनहुँ हम ई मानैत छी जे अमेरिकामे एखन एलेन गिन्सबर्ग सभसँ पैघ कवि छथि आ भूखी पीढ़ी बंगला साहित्यक सम्पूर्ण व्यावसायिक स्वरूपकेँ तोड़ि-फोड़ि देने अछि आ अकविता निश्चित रूपसँ नवकवितासँ आगाँ बढ़ि जयबाक कवि-चेष्टा अछि।

राजकमलक विचार आ मान्यता अन्तर्विरोधसँ भरल अछि। ओ एक दिस कविताकेँ आत्माभिव्यक्ति मानैत ओकर व्यक्तिवादिता स्पष्ट करैत छथि, तँ दोसर दिस कविताक ताकत पर विश्वास रखैत ओकर सामाजिकता केँ रेखांकित करैत छथि। एक दिस जँ ओ ई कहैत छथि जे हमर लेखक आ हमर व्यक्ति एक्के स्तर पर, एक्के शरीरसँ, एक्के कारणसँ एक्के जीवन जीबैत अछि तँ दोसर दिस नदी बहती थी मे ई कहैत छथि जे एहि दीर्घ कथामे हम कतहु नहि छी। देहगाथाकेँ ओ अपन प्रारब्ध नहि मानि कऽ प्रारंभ तँ मानैत छथि, किन्तु व्यक्तिगत नहि। एक दिस जीवनक लेल ओ सामाजिक संस्थाकेँ अनिवार्य बुझैत छथि तँ दोसर दिस एहिसँ अलग भऽ कए जीवन बितायब चाहैत छथि।

एतबे नहि, ओ अनेक ठाम एक्के वक्तव्यमे परस्पर विरोधी बात कहैत छथि– हम मुक्ति चाहैत छी । ई मुक्ति वास्तविक जीवनमे असंभव अछि, आ संभव अछि । हम शरीरमे रहितो शरीर मुक्त, आ समाजमे रहितो समाज मुक्त छी । फेर ओ कहैत छथि– मुक्त भऽ जायब कवितासँ पहिने आ मृत्युसँ पहिने मुक्त भऽ जायब असंभव अछि । एक दिस शरीरकेँ ओ अपन दास मानैत छथि, तँ दोसर दिस ई कहैत छथि जे शरीर पर आघात भेलासँ मन आघातित होइत अछि । एक दिस ओ कहैत छथि जे– हम मात्र अपन आ अपन कविताक वर्तमानमे जीबैत छी तँ दोसर दिस कहैत छथि- परम्पराक संग व्यक्तिक जे सम्बन्ध होइत अछि, एहि परम्परासँ हमर ओहने सम्बन्ध अछि ।

ओ अपना पर ककरो अधिकार, कोनो बंधन स्वीकार नहि करैत छलाह, मुदा रामनाथ पाठककेँ लिखलथिन जे बंधन नहि रहलासँ लोक भटकि जाइत अछि । मासिकामे प्रकाशित भैरवी तंत्र नामक अपन आत्मकथ्यमे ओ लिखलनि जे– हम अपन शरीर पर ककरो कोनो अधिकार नहि मानैत छी । शशियोक अधिकार नहि । मुदा शिवमंगलकेँ ओ पत्रमे लिखलनि– जे काज हम नहि कऽ सकलहुँ, अपन पारिवारिक चक्रक कारणेँ, अपन मिथ्या मोह आ मूर्खताक कारणेँ ओ काज अहाँ कऽ सकैत छी । किएक तँ अहाँ कोनो शशिजी अथवा दिव्याक संग बन्हायल नहि छी ।

राजकमल पर चंदकिशोर नवलक ई टिप्पणी सटीक लगैत अछि जे इसी विरोध और खींचतान में, जिसमें एक ओर वे स्वयं थे और दूसरी ओर उनका समाज, एक ओर सेक्स था और दूसरी ओर देश-विदेश की राजनीति, एक ओर मूल्यहीनता थी और दूसरी ओर मूल्यों की खोज एवं उनकी स्थापना, एक ओर अबाध स्वतंत्रता थी और दूसरी ओर जनता से प्रतिबद्धता, एक ओर बहिर्गमन था और दूसरी ओर प्रत्यागमन, एक ओर निष्क्रियता थी और दूसरी ओर उत्कट जिजीविषा, उनका जीवन और साहित्य चलते रहे ।

हिन्दीमे राजकमलक पहिल कविता 1956मे प्रकाशित भेल, मुदा पहिल संग्रह कंकावती आठ साल बाद 1964मे आबल । कंकावतीक मात्र पचास टा प्रति छपल छल आ सभ पर राजकमलक दस्तखत रहय। योगिराज लिखैत छथि जे पटना प्रवासमे हिन्दी कविता संकलन कंकावती सेहो एहिना बहार भेल । चीना कोठीमे शिवचन्द्र शर्माक सहयोगसँ कम्पोजिंग सेट अनौने छल ओ । तखन भारत मेल अर्द्ध साप्ताहिकमे काज करैत छल । ओही कम्पोजिंग सेट पर कम्पोज करबा कऽ संभवतः स्पार्क प्रेसमे फुलस्केप कागज पर छपा कंकावती बहार कयलक– मात्र 50 प्रतिक संस्करण ।

श्रीकांत वर्मा कंकावती पर आरोप लगौलनि जे ओ पोर्नोग्राफी अछि । राजकमल स्वय एहि संग्रहक भावभूमिकेँ मानवीकृत करैत लिखने छलाह जे कंकावती जनवरीसँ मइ 1964 धरि पटनामे हमर बनि कऽ रहलीह अछि । भूमिकामे संभोग शब्दक ओ अनेक बेर प्रयोग कयने छलाह आ एहि संग्रहक अधिकांश अनुभवकेँ आत्मस्वीकृति घोषित कयने छलाह ।

कंकावतीमे अधिकांशतः शहरी मध्यवर्गीय जीवनक विडम्बना चित्रित भेल अछि । अर्थ-व्यवस्थाक चक्कीमे पिसाइत भग्न, टूटल आ विषण्ण मध्यवर्गीय जीवनक अनेक चित्र कंकावतीमे अछि, जाहिसँ खिन्नता, उदासी आ अवसादक सृजन होइत अछि । चाय के प्याले में, चाय सुबह की, मान लिया गया, नवदम्पत्ति कथा, गतिरोध, सुबह का अखबार आदि मध्यवर्गीय विवशता आ घुटनकेँ व्यक्त करैत अछि । किछु कवितामे देह-व्यापार करैत स्त्रीक रुग्णकारी चित्र अछि ।

कंकावतीक अनेक कविता मोनताज टेकनीकमे लिखल गेल अछि आ ओकर ढाचा गद्यात्मक अछि । कंकावतीक तीन टा कविता पर बहुत विवाद आ चर्चा भेल कवि कर्म, भाषा आ सरस्वती वन्दना । परम्परावादी आ विशुद्धतावादी लेखक-आलोचक एहि तीनू कवितासँ बहुत क्षुब्ध भेलाह । आधुनिक सभ्यता वर्तमान जीवनकेँ सांस्कृतिक दृष्टिसँ कतेक विपन्न आ शून्य बना देलक अछि, कवि कर्ममे तकरे चित्र अछि कविता अछि–

वेश्याओं के ऊँचे पलंग हैं, या जली हुई
लकड़ियाँ । कहीं जगह खाली नहीं है गज
भर, जहाँ बैठकर लिखी जा सके गीता, या
गीतांजलि । ऊँचे पलंग हैं, या रसोई घर
की जली हुई लकड़ियां हैं ।

भाषा कवितामे राजकमल सामाजिक मूल्यहीनताक कारणेँ उत्पन्न भाषाक सम्प्रेषणीयता सम्बन्धी समस्याकेँ व्यक्त कयलनि–

भाषा अब वेश्या है । सबकी बाँहों में
समाई हुई सबके ओठों पर बसी रहती
है । इसके विवस्त्र अंगों में अब कोई अर्थ नहीं ।

एहि कविताक कारणेँ राजकमलक ई कहि कऽ आलोचना कयल गेल जे भाषाकेँ भ्रष्ट बना कए राजकमल अनर्गल प्रलाप कऽ रहल छथि ।

राजकमल कंकावतीमे व्यक्त दमघोंट जीवनकेँ बदलए चाहैत छथि । हुनक ई इच्छा एक प्रश्न हजार उत्तर कवितामे प्रकट भेल अछि–

मैंने सूरज से पूछा - धरती कब आग का
गोला बन जाएगी ? मुझसे सूरज ने पूछा,
तुम बरफ घरम सोये रहोगे कब तक ?

चाय के प्याल में कवितामे ओ कहैत छथि–

हजार छोटे
दंगे फसाद होते हैं, इतिहास और आर्थिक
सभ्यता को उजागर करने के लिए- एक
बड़ी लड़ाई नहीं होती । आदमी केले खरीदने
में व्यस्त रहता है... ।

राजकमलमे वैयक्तिकता आ सामाजिकताक बीचमे द्वन्द्व चलैत रहैत अछि ई सदैव एकान्तिक नहि रहैत अछि । वैयक्तिकता समाजिकतामे रूपान्तरित भऽ जाइत अछि । राजकमलक अनेक कविता इकाई आ समूह समूह आ इकाइक बीच दोलायमान रहैत अछि । व्यक्ति आ समाजक बीच इ लयात्मक दोलन शव यात्रा का मृत संगीत, दास कविता आ मुक्तिप्रसंगमे सर्वाधिक अछि । ई तीनू कविता दीर्घ अछि आ मिजाजमे एक अछि । कलात्मक दृष्टिसँ मुक्ति प्रसंग शव यात्रा का मृत संगत आ दास कविताक स्वाभाविक विकास लगैत अछि । शव यात्रा का मृत संगीतक रचना काल 1962, दास कविताक 1965 आ मुक्तिप्रसंगक 1966 अछि ।

शव यात्रा का मृत संगीत महाप्राण निरालाकेँ समर्पित कयल गेल अछि–

समूचा नगर पेट्रोल की गंध में डूबा हुआ...
आग लगती है । धड़ाके से ग्लोब फट जाता है,
आग लगती है ।
कहीं कोई सायरन नहीं बजता...
मैं पटाल में
आग में
ग्लोब में
अपने अकेलेपन में
तुम्हारी मृत्यु के अपराध में, कैद हूँ ।
और, हमारे कंधों पर तुम्हारा अ मृत शव है

और पेट्रोल की गंध में डूबा हुआ है समूचा नगर
और, आग लगती है
और, धड़ाके से फट जाता है ग्लोब
कविताएँ
कल्पनाएँ
शब्द
अर्थ
ध्वनियाँ, शीशे के टुकड़ों की तरह
बिखर जाती हैं....
मगर कहीं कोई सायरन नहीं बजता है ।
कहीं कोई अरथी नहीं सजती है
कहीं कोई शोक-गीत गूंजता नहीं है
कहीं कुछ नहीं होता ।

दास कविता राजकमलक महत्वपूर्ण कविता बूझल जाइत अछि । ई कविता अपूर्ण अछि आ अनुपलब्धताक कारणेँ जहिया लिखल गेल, तकर बाइस साल बाद प्रकाशित भऽ सकल । दास कविता मानव-दासताक विरोधमे लिखल गेल अछि । मानव-दासताक प्रबल विरोधी मार्क्स एहि कविताक प्रेरणा-स्रोत रहल छथि । कविताक शीर्षक मार्क्सक ग्रंथ दास कैपिटलसँ जुड़ल अछि । कविताक अंत एहि प्रकारक करुणा आ आह्वानमे होइत अछि–

अगली दुनिया के अन्वेषकों !
हमारी दुनिया तो यही है–
प्रभुता से नियंत्रित, दासता से अभिशप्त,
बर्बर, अमानवीय ताकतों से अनुशासित;
अनियामक जनता की दुनिया, इसे तोड़ो–
जो शोषित रहकर भी
शास्ता और शासक के अटूट सम्बन्ध की
मूलभूत चक्राकार अवस्थिति को
चाहे अनचाहे, जाने अनजाने
पोसती और पालती है ।

मुक्ति प्रसंग राजकमलक सर्वाधिक चर्चित आ सर्वश्रेष्ठ कविता अछि। ई फरवरीसँ लऽकऽ जुलाइ 1966क बीच लिखल गेल छल, जखन राजकमल पटना अस्पतालक सर्जिकल ब्लॉकमे भरती छलाह । अस्पतालमे ओ डायरी लिखैत छलाह । डायरी-लेखन नियमित नहि छल, जहिया कोनो उल्लेखनीय घटना होइत छल अथवा कोनो महत्वपूर्ण विचार हुनका दिमागमे अबैत छलनि, तकरा ओ लिपिबद्ध कऽ लैत छलाह । मुक्तिप्रसंगक संदर्भमे डायरीक दू टा अंश उल्लेखनीय अछि । एहि दुनू अंशसँ मुक्ति प्रसंगक रचना-कालक हुनक मनःस्थिति आ रचना-शिल्प पर रोशनी पड़ैत अछि ।

डायरीक पहिल पृष्ठपर बर्ख 1966क वैचारिक सारकेँ ओ एहि रूपमे अंकित करैत छथि–

थॉट फॉर दि ईयर
माइ थम्ब एंड माइ
हेडेक, इज मोर ऑथेंटिक
इंपोर्टेंट, सीरियस, एंड इंगेजिंग
दैन एनी ग्रेट पीस ऑफ आर्ट ।

(हमर औंठा आ हमर मथदुक्खी कोनो महान कलाकृतिसँ बेसी प्रामाणिक, महत्वपूर्ण, गंभीर आ रमणीय अछि ।)

दोसर अंशमे ओ लिखैत छथि–

ह्वाइल राइटिंग पोयेम्स : (1) चूज योर ओन सिम्बल्स एंड इमेजेज (2) गिभ ए फ्रेस एंड डेमेजिंग कंटेंट (3) बी ग्राफिक (4) अरेंज टेकनिक्स ऑफ कलर फोटोग्राफी इन इट ।

(कविता लिखैत काल निजी बिम्ब आ प्रतीकक चयन करबाक चाही, अंतर्वस्तु टटका, विध्वंसक एवं सुचित्रित हो आ ओहिमे रंगीन छाया चित्रक खूबी हेबाक चाही ।)

पहिल अंशमे हुनक प्रचंड वैयक्तिकता ध्वनित होइत अछि, जे ओज संगे मुक्ति प्रसंगमे व्यक्त भेल । ई भिन्न गप्प अछि जे हुनक वैयक्तिकता बेर बेर सामाजिकताक रूप लैत रहैत अछि । दोसर अंशमे ओ मौलिक बिम्ब आ प्रतीक पर जोर दैत छथि । राजकमल आरंभे सँ अपन रचना लेल पौराणिक बिम्ब आ प्रतीकक प्रयोग करैत आबि रहल छलाह । मुक्ति प्रसंगक पौराणिक बिम्ब आ प्रतीक तत्कालीन हिन्दी कवितासँ एकदम अलग, बेछप आ मौलिक अछि । नव आ आक्रामक अन्तर्वस्तुक रूपमे राजकमल मुक्ति प्रसंगमे एकटा बीमार व्यक्तिक प्रलापक माध्यमसँ ओहि व्यक्तिक पीड़ा, क्षोभ, आक्रोश आ आकर अन्तर्बाह्य संघर्षकेँ चित्रित कयलनि । एहि संघर्षक विकास चक्करदार होइतहु सुसंगत, स्पष्ट आ ऊर्ध्वमुखी अछि । ओहिमे भावक अनुरूप रंगदर्शी सम्वेदना अछि ।

मुक्तिप्रसंगक भूमिकामे राजकमल लिखैत छथि जे– सती-वर्तमान के अग्निजर्जर शव को अपने कंधों पर मैं शिव की तरह, धारण करता हूँ। मैं इस शव के गर्भ में हूँ, और यह शव मेरे कंधों पर है । इसकी विकृति, वीभत्सता और दुर्गन्धियों में मुझे जीवित रहना ही पड़ेगा । जीवित ही नहीं, मुक्त और स्वाधीन भी रहना होगा । यही मनःस्थिति इस कविता का प्रसंग है ।

वर्तमान जीवन अतीतक देन अछि । वर्तमान कुरूप आ दुर्वह अछि जकरा उधब मनुक्खक नियति बनि गेल अछि । मनुक्खकेँ एहि नारकीय भोगसँ छुटकारा पयबाक इच्छा आ प्रयत्न करबाक चाही । वर्तमान जीवनक स्थिति दारुण अछि–

केवल वर्तमान में जीते हैं अब समस्त प्रजाजन
मर जाते हैं अतीत में और भविष्य में मर जाते हैं
भीड़ जुलूस लाठी-चार्ज जन-आन्दोलन आम सभाओं
के
श्रोता वक्ता भोक्ता
गेहूँ के सिवा कोई बात नहीं कहते

मुक्तिप्रसंग जानि-बूझि कए पन्द्रह अगस्त 1966केँ जारी कयल गेल छल, जाहिसँ भारतक जनतांत्रिक स्वतंत्रताकेँ कविताक अयनामे ओकर अपन असली चेहरा देखायल जा सकए -

जठराग्नि... दावानल...
सब बुझ गए अचानक पहले अगस्त की
पहली रात के बाद
अब राख ही राख बच गया है पीला मवाद
ग्यारह बजकर उनसठ मिनट पर हर रात
शहीद स्मारक के नीचे नंगी
होती है
पागल काली एक मरी हुई स्त्री
उजाड़ आसमान में दोनों बाहें फैलाकर रोने
के लिए
रोते हुए सो जाने के लिए पानी और अनाज
के देवताओं में भीख मांगती है
तिरंगा फहराने के अपराध में मार डाले गए
1942 के छात्रों के नाम पर

अपन इन्टरव्यूमे राजकमल रामानुग्रह झाकेँ कहने छलथिन जे सब रचनाकार अपन सर्वोत्तम प्रयाससँ भाषामे चरम तत्वक उपलब्धि

करय चाहैत अछि । एहि करय तत्वकेँ स्पष्ट करैत ओ कहने छलथिन - हमरा शब्दसँ अधिक ध्वनि प्रिय अछि । हम अपन रचना प्रक्रियामे शब्दक एही मूल नादक खोज करैत छी, प्रकृतिक सहस्रमुखी धारा-ध्वनिकेँ एक-एक तार पर झंकृत सुनय चाहैत छी, हम नय करय चाहैत छी ओ स्रोमुख की थिक हमर प्राण कुंडमे, हमरा अन्तमे की अछि अथवा एहि शरीरक बाहर कतहु कोनो अंधगुफामे ध्यानावस्थित बुद्ध जकाँ समाधिलीन के अछि ? हम नय करय चाहैत छी जे शब्दक मूल तंत्र की थिक आ कोन श्रीचक्र पर शब्दक पार्थिव प्रतिमा स्थापित भेल अछि । आ एहि नय करब हमरा लेल संत्रास आ यातनाक स्थिति धरि जाइत अछि ।

मुक्तिप्रसंगमे शब्दक एहि मूल नादक महत्वपूर्ण भूमिका अछि । ध्वनिक आरोह अवरोह, लघुता दीर्घता, कर्कशता-मृदुलता, उद्घात शीतलता, घर्षण चिकनाहट आदि संवेदना आ भावक मूल आत्माक अनुरूप बदलैत रहैत अछि आ कविता संगीतक निर्बाध गति आ वेग जकाँ हृदय मे झंकृत होइत रहैत अछि । स्थितिक अनुसार बदलैत ध्वनि रूपकेँ एहि अंशमे देखल जा सकैत अछि--

इस प्रकार स्थान पात्रों में घुलमिल जाता था
संगीत
बन जाता था जुलूस भूख मार्च हाहाकार
रंग में अल्काहल भाषामे केवल बीत हुए
गलित व्रण केवल चीत्कार

मुक्ति प्रसंगक सम्बन्धमे नन्दकिशोर नवल लिखैत छथि इनवॉल्वमेंट राम की शक्ति पूजा और अन्धेरे में भी है, लेकिन मुक्तिप्रसग म जो वह हद से ज्यादा है । एक तरफ इस कविता की परिधि अत्यधिक व्यापक है, दूसरी तरफ यह एक अत्यधिक आत्मपरक कविता है । उसकी शक्ति का स्रोत सभवत इन दो अतिवादी बिन्दुओ का मिलन और सघर्ष ही है ।

डा० श्यामसुन्दर घोष राजकमलक कवितापर समग्र रूपमे टिप्पणी करैत लिखैत छथि - राजकमल की कविता हिन्दी कविता क्षेत्र मे आसानी स खारिज नहीं की जा सकेगी . उसमें एक बेचैन आत्मा का सघर्ष पूरी सिद्दत और प्रामाणिकता क साथ मौजूद है । उसके अपने विकास क ग्राफ हैं, अपना कशमकश है । हम उसमे गुजर कर कुछ पा सकते है ।

हिन्दीमे राजकमलक पहिल कथा 1958म छपलनि, जखन ओ कलकत्तामे रहैत छलाह । आर्थिक तंगी राजकमलकेँ अधिकाधिक गद्य लिखबा लेल बाध्य कयलकनि । अपन हिन्दी कथामे राजकमल शहरी जीवनकेँ चित्रित कयलनि । मैथिली कथामे शहरी जीवन बिरल अछि । उच्च, मध्य आ निम्न-मध्यवर्गक सभ स्तरकेँ ओ अपन कथाक विषय बनौलनि । किछु कथा ओ सर्वहारा वर्ग पर सेहो लिखलनि । राजकमलक हिन्दिया कथामे सेक्स अबैत अछि, मुदा आरोपित ढंग सँ नहि, जीवनक अंग बनिकऽ । शराब आ स्त्री राजकमलक व्यक्तिगत कमजोरी रहलनि । एकरा ओ नुकबिता नहि छलाह । इएह कारण अछि जे हुनक जीवन आ साहित्य दुनू म सेक्स सम्बन्धी कोनो कुंठा नहि अछि । मातृहीन राजकमलक अतृप्त मानस जीवन भरि आहि मातृ प्रेमक खोज करैत रहल, जाहिस प्रेमक समस्त रूप समाहित रहैत अछि तथा जे विशाल आ पूर्ण होइत अछि . स्त्री विषयक एतावमे ओ लिखैत छथि स्त्री केवल संभोग के मुहूर्त में साथ नहीं रहती है । ऐसी और भी स्थितियाँ है, जब वह अशरीर भी साथ रहती है और मेरी इच्छाओं का दिशा निर्धारण करती है ।

राजकमलक साहित्यम चित्रित सेक्स शारीरिक आ मानसिक उत्तेजना नहि पैदा करैत अछि । एकर एकटा प्रत्यक्ष कारण ई इ अछि जे राजकमलक सेक्समे मापन तत्वक अभाव अछि, आहिम झाँप ताप नहि अछि । दोसर कारण ई अछि जे राजकमल सेक्सक प्रति ओहि पूंजीवादी भोगवादी अभिरुचि आ दृष्टिकेँ रूपायित करैत छथि, जे विकृत आ कुरूप अछि आ तेँ ओ पाठक केँ उत्तेजित करबाक बदलामे विकर्षित करैत अछि । पिरामिड, चलचित्र चोरी, मदालसा सुन्दरम, पत्थरों के नीचे दबा हुआ हाथ, वेणी संहार आ एहि तरहक हुनक अनेक कथा उदाहरण रूपमे देखल जा सकैत अछि . पिरामिडक कुर्ममे सेक्स्य नहि अछि, व्यवसाय अछि । मुनियोमे वएह व्यावसायिक हाव भाव अछि । रसिक लाल द्वारा हाथ दबौला पर कुम्मी उत्तेजित नहि होइत अछि । अर्थात रसिक लालसँ बेसी विठ्ठासँ मुनिया उत्तेजित नहि होइत अछि । कुर्म्मा रसिक लालसँ कहैत अछि- मुझे जल्दी फुरसत दे दीजिए . एक आदमी मुख्य में कथाक नायक एहि खातिर नाराज अछि जे नायिका दहेज स्वीकार करए लागल अछि । स्त्रीचक सेक्सक राजकमल जीवनक कालिमाक रूपमे चित्रित करैत छथि । राजकमलक कथा सेक्सक गल्पक बदला मध्यवर्गीय जीवनक विडम्बनाक मुखर करैत अछि ।

राजकमलक मान्यता छलनि जे कविता व्यक्ति सत्यकेँ आ कथा समाज सत्यकेँ प्रकट करैत अछि । हुनक कथामे आधुनिक समाजक सत्य प्रचुर मात्रामे भेटैत अछि । अपन आरंभिक हिन्दी कथामे राजकमल कलकत्ता प्रवासक जीवनानुभवकेँ अभिव्यक्ति देलनि । जीभ पर बूटों के निशान कलकत्ताक परिवेश पर लिखल गेल अछि । ई कथा मनुक्खक स्वार्थ आ लोभक विकट रूपकेँ चित्रित करैत अछि । आर्थिक दबाव पात्रक बीच सभ तरहक मानवीयता आ अपनत्वकेँ नष्ट करैत देखल अछि । ओ सभ एक दोसर सँ ओतबे मतलब रखैत अछि जतबा सँ स्वार्थ सिद्ध भऽ सकय ।

आपाद्रक राजकमलक बहुचर्चित कथा रहल अछि . सेक्स अहूमे अछि किन्तु कथामे मध्यवर्गीय मानसिकता मुख्य अछि । दीघाक समुद्री कछरक परिदृश्य दू टा स्त्री पात्रक बीचक द्वन्द्व, अलगाव, असहायता आदिक एहि कथामे प्रभावकारी चित्रण भेल अछि । राजकमलक कथामे पात्रकेँ आ वस्तु संगठनमे नहि अछि, वास्तविकताक कठोरता अछि राजकमलक सम्पूर्ण कथाकेँ शैलीगत विशिष्टता देखल जा सकैत अछि । एकाधिक स्तर पर अपन कथामे विभिन्न प्रयोग करैत रहलाह । वृत्त विन्यास, पात्रानुकूल भाषा, चेतन प्रवाह आदि अनेक शैली राजकमलक कथा अछि । कथ्य आ अभिव्यक्ति दुनू दृष्टिसँ राजकमल अपन समकालीन कथाकारसँ भिन्न छथि .

राजकमलक कथा पर टिप्पणी करैत सुरेन्द्र चौधरी लिखैत छथि- राजकमलक कथा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उस भीषण दु:स्वप्न की तरह है, जिसमें दृश्य बदल या बदलते रहते हैं और अपने बदलते हुए परिदृश्य की भयानकता में हम कहीं उत्तेजित, कहीं अतिक्रांत और कहीं अभिभूत रह जाते है ।

कथ्य तक राजकमलक सभ हिन्दी उपन्यासमे शहरी जीवन चित्रित भेल अछि हुनक अधिकांश उपन्यास कलकत्ता पर केन्द्रित अछि . देहगाथामे प्रसंगक परिवेश बीस रानियों के बाड़ुम्काप में बाम्बइक परिवेश आ ई कथा था शहर नहीं था मे पटनाक परिवेश आयल अछि। विषय वस्तु चरित्र, गठन आ प्रभावमे देहगाथा सभसँ भिन्न आ विशिष्ट अछि कलकत्ता जीवन पर केंद्रित उपन्यास सभमे राजनीतिक व्यंजनाक कारण हुनक पहिल उपन्यास नदी बहती थी विशिष्ट अछि ई उपन्यास पाल्ब विवाद नामक पत्रिकामे धारावाही रूपमे छपल, फर 1961म कलकत्तामे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल ।

उपन्यासक भूमिकामे राजकमल लिखैत छथि- बम्बई सिल्म की अकर्मण्य परिस्थितियों में छटकारा पाकर अचानक 1957 के नवम्बर में मैं कलकत्ता चला आया एशिया का यह सबसे बड़ा शहर मुझे बहुत

पराया लगा, चौड़ी-चौड़ी सड़कें, और फिर गलियों के अन्दर और भी तंग गलियाँ। शानदार कपड़े पहने हुए मर्द और उनके भीतर छिपे हुए बूढ़े जानवर। सो-कट और शार्ट्समें घिरी हुई औरतें, और उनके भीतर छिपी हुई भूखी हिरणी। मर्द और औरत, और उनके बीच एक सौदा, एक समझौता करने वाली एक हसीन चीज– पैसा।

पैसा अर्थात् पूंजीवादी अर्थतंत्रक बीच सम्मानजनक आ स्वतंत्र जीवन हासिल करबा लेल संघर्ष करैत लोकक पराजय-गाथा। शेफाली देह बेचि कए अपन भाइ सुभाष आ बहिन सोनाली कें नव, सम्मानजनक आ स्वतंत्र जीवन प्रदान करए चाहैत अछि। ओ स्वयं अपन घृणित जीवनकें त्यागि विवाह करैत अछि। मुदा ओकर सभटा सपना चूर भऽ जाइत छैक। सोनाली विमल ठाकुरक रखैल बनि जाइत अछि आ शेफालीक पति शेफालीकें फेरसँ देह बेचबा लेल बाध्य करैत अछि। उपन्यासक अंतमे शेफाली मरि जाइत अछि। सोनाली विलाप कऽ रहल अछि। मिसेज सविता राय चौधरी ओकरा सान्त्वना दैत कहैत अछि– सोनाली, अब पुकारने से क्या होगा ? नदी सूख गई है।

एहि त्रासदीक बीच ओहि बस्तीक सामाजिक समस्या अछि, राजनीतिक संघर्ष अछि, राजनेता आ राजनीतिक दलक पाखंडपूर्ण चरित्र अछि, पूंजीवादी व्यवस्थाक बर्बर आ हिंस्र रूप अछि आ एहि सभ पतनशीलताक प्रति लेखकीय आक्रोश आ व्यंग्य अछि।

ताश के पत्तों का शहर, अग्निस्नान, एक अनार एक बीमार, बीस रानियों के बाइस्कोप सभ उपन्यासक इएह हाल अछि। सभ पूंजीवादी समाजक पतनशीलताक खिस्सा कहैत अछि, पात्रक जिजीविषा आ संघर्षक खिस्सा कहैत अछि, ओकर मूल्यहीनता-दिशाहीनताक खिस्सा कहैत अछि, ओकर टूटैत-बिगड़ैत जीवनक कथा कहैत अछि। सभ उपन्यासक अंत त्रासदीमे होइत अछि। सभ उपन्यास पाठकक मोनमे अवसाद आ करुणाक भाव उत्पन्न करैत अछि। इएह राजकमलक औपन्यासिक विशिष्टता अछि, इएह उपन्यासक आपसी अविशिष्टता अछि। सभ उपन्यासक समस्या एक अछि, रूप भिन्न-भिन्न अछि। एक उपन्यास दोसर उपन्यासक परिवर्ती (variable) अछि। सभ उपन्यासक परिवेश एक अछि, समस्या एक अछि, परिणति एक अछि।

ताश के पत्तों का शहर क बोनी हो वा नीलू, बीस रानियों के बाइस्कोपक कुन्दन बाई हो वा एक अनार एक बीमारक सीता हो वा अग्निस्नानक लूलू हो वा श्रीमती- सभक एक्के दुख अछि, एक्के दर्द अछि।

अग्निस्नानक एकटा मार्मिक दृश्य एहि रूपमे वर्णित अछि– लूलू की आँखों में आंसू भर आए। वह चुपचाप खड़ी रही, टूटती हुई, मरती हुई। फिर, चुपचाप बाहर चली आई। लूलू एकदम खुले रास्ते पर आ गई। और कोई रास्ता नहीं था। उसकी आँखों में सपने थे। हर औरत की तरह साधारण सपने। घर, परिवार और थोड़ी सी हँसी-खुशी, थोड़ा-सा प्यार! मगर वह सपना टूट चुका था। फिड के साथ रहने का मतलब था भूख और गरीबी और सिर्फ गरीबी ! औरत, अगर उसके पास औरत का मन है, औरत का शरीर है, तो गरीबी क्यों सहे ? लूलू अपने नैतिकता, अपने शरीर का कुंवारापन कायम रखना चाहती है, मगर जब समाज नहीं चाहता तो वह क्या करे ?

लूलू श्रीमती बनि जाइत अछि जे बहुत पछिनहि सँ देह-व्यापारमे लागल अछि। किन्तु आब ओकर हाल ई छैक जे– श्रीमती का कमरा अंदर से बंद था। कमरा अंदर से बंद था और कमरे के अंधेरे में बंद श्रीमती रो रही थी। रो रही थी जैसे अपनी गलती से उंगलियाँ जल जाने पर बच्चे रोते हैं।

नदी बहती धीक शेफाली कहैत अछि– तुम्हारे ही कारण यह सब हो रहा है, जयन्त ! तुम यहाँ रहने लगे और मेरी सोनाली चली गई। आज सुभाष भी चला गया। मैं तुम्हारे बिना ही ठीक थी, देह बेचकर दो पैसे कमाती थी और चैन से सोती थी। तुमने मुझे देह बेचने से रोका, बचाया और अब फिर सीधे-सीधे नहीं, मगर घुमा-फिरा कर मुझे वही करना पड़ता है।

एक अनार एक बीमारक एकटा कारुणिक दृश्य अछि– बहन के वापस आने तक सीता ने फ्रॉक और अंडरवियर नहीं पहना था। सामने, कमरे में रहने वाली निर्मला मौसी ने कहा था– तेरी बहन को गर्मी हो गई है। तू बड़ी हो जाएगी तो तुझे भी गरमी होगी। इस मुहल्ले की हर औरत को यही होता है। मुझे भी हुआ था। निर्मला मौसी पागल है, कुछ से कुछ बकती रहती है– लौटकर बड़ी बहन ने कहा था और सीता को अपनी गोद में बिठाकर, बाँहों से जकड़ती हुई रोने लगी थी।

बीस रानियों के बाइस्कोपक वर्णित विषय एहिसँ भिन्न नहि अछि– कुंदन अपनी बड़ी बहन के चरित्र और स्वभाव से एकदम अलग थी, परिस्थितियों से समझौता कर लेने वाली लड़की थी। शोरगुल नहीं करती, सह लेती थी। छोटी उम्र में पुखराज के साथ बम्बई आ गई। जमाने के सारे दुख उसने देखें। फारस रोड के बीमार मौसम में वह बड़ी हुई।

घोषित रूपसँ समलैंगिक यौन-समस्यासँ सम्बन्धित होइतहु मछली मरी हुईमे कल्याणीक देह-व्यापारक प्रचुर चित्रण भेल अछि।

एक अनार एक बीमारसँ राजकमल संतुष्ट नहि छलाह। एहि उपन्यासकें ओ फेरसँ लिखय चाहैत छलाह। आत्मकथात्मक उपन्यासक रूपरेखामे ओ लिखैत छथि– रीराइटिंग एक अनार एक बीमार टु रिकंस्ट्रक्ट ईश्वर एंड हिज फिलॉसफी। (ईश्वर आ ईश्वरक जीवन-दर्शनक पुनर्निर्माण करबाक लेल हम एक अनार एक बीमार फेरसँ लिखय चाहैत छी।)

राजकमलक आन सभ औपन्यासिक पात्र जकाँ ईश्वर सेहो अपन अस्तित्वकें कहुना कायम रखबामे लागल अछि। पूंजीवादी शोषण-चक्रमे फँसल मनुक्खक नियति कें ईश्वर अनिवार्य आ अपरिवर्तनशील मानैत अछि। वर्तमान परिस्थितिक सम्मुख लोक बेबस आ लाचार अछि– अब उसकी मर्जी से कहीं कुछ नहीं होता है। औरतें जहाँ और जब चाहती हैं, अपनी इच्छा से गर्भ धारण कर लेती हैं। बच्चे पैदा होते हैं, और पाँवों में पैसों का स्केट बांधकर सैर पर चल देते हैं। वापस नहीं लौटते।

एहि परिस्थितिकें लोक छाहियोकऽ बदलि नहि सकैत अछि। ईश्वर कहैत अछि– मैं कुछ करना नहीं चाहता। क्योंकि करने से कुछ नहीं होता है ... दक्ष प्रजापति, रावण, कंस, दुर्योधन की कहानियों से लेकर अब ख्रुश्चेव-माओत्सेतुंग तक कोई बात नहीं बदली है। एहि परिस्थितिसँ छुटकाराक एक्के टा उपाय अछि– मृत्यु। ईश्वर कहैत अछि– साहब, आप जीवन से मुक्ति लीजिए, तभी स्वाधीन हो सकेंगे। ईश्वर मरि कऽ एहि घृणास्पद परिस्थिति सँ छुट्टी लेबऽ चाहैत अछि– माई फ्रेंड ! मेरे दोस्त ! मर्डर मी ! मुझे मार डालो ! एंड, फक माई लेडी ! और मेरी औरत को पेंग मारते रहो। होल नाइट। सारी रात ! सारी रात पेंग मारते रहो, मेरी औरत को, मुझे मार डालने के बाद मेरे दोस्त ! माई फ्रेंड,... ईश्वर चीख रहा था और उल्टियां कर रहा था।

राजकमलक औपन्यासिक संसार बहुत त्रासद अछि। ओ मनुक्खक पराजय आ विवशताक चित्र उपस्थित करैत छथि। देहगाथाक देवकांत आ एक अनार एक बीमारक ईश्वरक दृष्टिमे उल्लेखनीय समानता अछि। देवकान्त कहैत अछि– उजाला मैं भी नहीं मांगता हूँ। मांगने से मिल सकेगा, मुझे विश्वास नहीं है।

देवकान्त टूटि आ थाकि गेल अछि– उजाला तो एक स्थिति है जिसे लाने के लिए अंधेरे की स्थितियों के खिलाफ जेहाद करना पड़ता है। मुझसे संभव नहीं है यह जेहाद यह क्रूसेड। मेरी तलवार की मूठ टूटी हुई है, मेरे जिरहबख्तर को जंग के कीड़े खा गए हैं।

राजकमलक पात्र जेहाद नहि कऽ पबैत अछि। ओ मात्र अस्तित्व रक्षामे

लागल रहैत अछि। ओहिसभक स्वत्व छिना गेल छैक आ ओ सभ वस्तुमे बदलि गेल अछि। सामाजिक-धार्मिक-नैतिक-- सभ तरहक मूल्य पैसा मे तिरोहित भऽ गेल अछि आ अप्रासंगिक बनि गेल अछि। पात्र सभक कोनो भविष्य नहि अछि। ओ सभ बंद दुनियाक वर्तमानमे कहुना जीबैत रहैत अछि-- टूटल, हारल, निस्सहाय। राजकमल द्वारा चित्रित संसार मनमे करुणा उत्पन्न करैत अछि। करुणा राजकमलक ऐकांतिक मूल्य लगैत अछि। जीवनक अंतिम समयमे लिखल गेल मछली मरी हुई मे ओ लिखैत छथि-- प्यार मरता है। वासनाएँ भी मर जाती हैं। करुणा नहीं ! केवल एक करुणा नहीं मरती है।

राजकमलक विश्वास रहनि जे करुणा द्वारा एहि संसारकेँ मानवीय बनाओल जा सकैत अछि आ ओहिमे मनोवांछित परिवर्त्तन कयल जा सकैत अछि। राजकमलकेँ कोनो राजनीतिक वा दार्शनिक विचारधारामे आस्था नहि रहनि। एकर अर्थ ई नहि जे ओ अनास्थावादी आ अराजक छलाह। हुनका ओकर प्रभावकारितामे अविश्वास छलनि। ओ ओकर निष्फलताक अनुभव कऽ रहल छलाह। राजकमल यथास्थितिवादियो नहि छलाह। ओ परिवर्त्तनकामी छलाह। मुदा एहि परिवर्त्तनक कोनो बाह्यगत रस्ता हुनका नहि भेटलनि। तेँ ओ एकटा आत्मगत आ भावात्मक रस्ता पकड़लनि। ओ करुणा सनक एकटा भावात्मक दर्शन गढ़लनि आ ओहिमे मनुक्खक मुक्तिक भविष्य देखलनि। राजकमलक उपन्यासमे उपभोक्तावादी समाजक त्रासदी व्यक्त भेल अछि। प्रभूत करुणासँ परिचालित दृष्टिक कारणेँ राजकमलक कथा-साहित्य नितान्त भिन्न भऽ गेल अछि। पारम्परिक औपन्यासिक संरचनाकेँ राजकमल तोड़ि देलनि। हुनकर उपन्यासमे पारम्परिक वर्णनात्मकता, विश्लेषणात्मकता, विस्तार आ पसार नहि भेटैत अछि। हुनक कथा-साहित्य काव्ये जकाँ संश्लिष्ट, व्यंजक आ ध्वन्यात्मक अछि। ओहिमे काव्ये जकाँ आत्मपरकता आ भावात्मक सघनता भेटैत अछि।

राजकमलक मैथिली कथा साहित्यक बारेमे ललित जे टिप्पणी कयने रहथि, से हुनक हिन्दियो कथा-साहित्यक सन्दर्भमे सटीक अछि। ओ लिखने रहथि जे– राजकमलक कथामे आघात (*shock*) एवं चकित (*surprise*) करबाक तत्व भेटैत अछि। सर्वोपरि जे भेटत राजकमल केर लेखनमे से थिक गोपनतत्व। एकटा कुहेलिका, एकटा कुहेस। जतय द्रष्टाकेँ अपन कल्पनानुसार इमेज गढ़बाक स्वतंत्रता रहि जाइ छैक। तहिना राजकमल केर कृतित्वमे अनएक्सप्लेंड इभेंट्स (अव्याख्यायित घटना) भेटत। छोट-छोट कड़ीकेँ थांगि कऽ आगू बढ़बाक प्रवृत्ति। प्राय: लेखक द्वारा धोगल यथार्थ एतेक भयावह थिक, जकर पूर्ण अभिव्यक्ति करबाक साहस किंवा औचित्य ओ नहि बुझैत अछि।

राजकमल अनेक निबंध लिखलनि, मुदा एखनधरि हुनक एक्को टा निबंध-संग्रह नहि छपि सकल अछि। हुनक अधिकांश निबंध साहित्य चिन्तासँ सम्बन्धित अछि। किछु निबंध चित्रकला एवं सिनेमासँ सम्बद्ध अछि। हुनक निबंधमे मात्र तत्व-चिन्ता नहि अछि। हुनक तत्व-चिन्ता तत्कालीन साहित्यिक परिवेश सँ घनिष्ठ रूपमे जुड़ल अछि आ अपन समय संदर्भकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। शिवचन्द्र शर्मा लिखैत छथि– राजकमलजी ने कलकत्ता, दिल्ली आदि शहरों पर ऐसे खाकानुमा, जीवन्त निबंध लिखे हैं, जो रोचक होते हुए भी तथ्यपरक हैं। वैसे निबंध दूसरों ने, उस ढंग से नहीं लिखे हैं।

राजकमल हिन्दी में तीन टा नाटक लिखलनि-- पाषाण सुन्दरी, भग्न स्तूप का आहत स्तम्भ आ पेरी गली में आना। ओ मैथिलियो मे तीन टा नाटक लिखलनि-- हफीम, महाकवि विद्यापति आ बसात। बसात रेडियो रूपक अछि। ई सभ एक अंकी नाटक अछि। नाटकमे राजकमलक पैठ आ गति ओहि तरहक नहि छलनि, जाहि तरहक गति आन विधामे भेटैत अछि।

हिन्दीक अनेक पत्रिका लेल राजकमल नियमित स्तम्भ लिखलनि-- कबिरा खड़ा बाजार में (लहर), पत्राचार (लहर), डायरी बेतारीख (निवेदिता), वह एक कहानी (नई कहानियाँ) एवं सामयिक कथा-साहित्य (विनोद)।

राजकमल अनेक बंगला उपन्यासक हिन्दीमे अनुवाद कयलनि। कहल जाइत अछि जे ओ शंकरक चौरंगी, मणिक वंदोपाध्यायक प्राणेश्वर, संजय भट्टाचार्यक तीसरा नेत्र, दीपक चौधरीक फरियाद आ वाणी रायक मेरी आँखों में प्यासक अनुवाद कयने छलाह। एहि सभमे सँ शंकरक चौरंगी प्रकाशित भऽ कए बहुप्रशंसित भेल।

राजकमल प्रस्तावित भोजपुरी फिल्म टिकुलियावालीक पटकथा लिखने छलाह, मुदा ई फिल्म नहि बनि सकल। कलकत्तामे 1965मे जे भोजपुरी फिल्म फेस्टिवल भेल छल, तकर प्रमुख संयोजक सभमे सँ एक राजकमल चौधरीयो छलाह। ओ स्वयं फिल्म बनबऽ चाहैत रहथि।

प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक तपन सिन्हासँ हुनका बहुत रास गप्पो भेल रहनि। राजकमल फिल्मस नामसँ ओ एकटा लेटरपैड छपबौने रहथि। मुदा आन अनेक इच्छा-आकांक्षा जकाँ राजकमलक ईहो इच्छा साकार नहि भऽ सकल। तपन सिन्हा हुनक प्रतिभासँ बेस प्रभावित रहथि। हुनक मृत्युक समाचार सुनि केँ ओ अत्यंत दुखी भेल छलाह आ बाजल रहथिन– ए जीनियस इज गोन एंड लॉस्ट। (एकटा प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति उठि गेल।)

मैथिली आ हिंदी साहित्यकेँ एखन हुनका सँ बहुत आशा छल ओ असमय आ अचानक चल गेलाह। रहि गेल अछि हुनक साहित्य जे हुनका बहुत दिन धरि जिओने रहत किएक तऽ ओहिमे एकटा बेचैन आत्माक आवाज अछि।

मृत्युक बाद मैथिली-हिन्दीक अनेक पत्रिका हुनका पर विशेषांक प्रकाशित कयलक, जाहिमे हुनक जीवन आ साहित्यक मूल्यांकन कयल गेल। हुनक मूल्यांकन एखनो भऽ रहल अछि। राजकमलक साहित्यमे अद्भुत आकर्षण अछि। जे पढ़ैत अछि से ओकर कायल भऽ जाइत अछि। राजकमल एखनो एकटा वैध पाठकवर्गकेँ आकृष्ट कऽ रहल छथि आ बुझाइत अछि आगुओ करैत रहताह।

बंगला लेखक शरतचंद्र चटर्जी आ राजकमल चौधरीमे अनेक समानता अछि। शरतक जीवन विविधतासँ भरल आ विशाल छल। राजकमलोक अनुभव-क्षेत्र व्यापक आ बहुरंगी अछि। शरत आ राजकमल दुनू जीवन भरि भटकैत रहलाह। दुनूक जीवनमे सुख कम आ बदनामी बेसी रहनि। दुनू लांछनासँ भरल जीवन बितौलनि। शरतक जीवनमे अफवाह, अनुश्रुति आ प्रवादक कोनो अंत नहि छल। राजकमलोक जीवन एहने रहनि। दुनू अपन जीवनक बारेमे दंत कथा पसारलनि। शरतकेँ आ राजकमलकेँ दुखदायी बचपन भेटलनि। दुनूक जीवन आ साहित्यमे प्रभूत करुणा अछि। दुनू करुणामयी स्त्रीकेँ साहित्यक विषय बनौलनि। प्रसिद्धि दुनू केँ भेटलनि। राजकमलकेँ शरत-साहित्य प्रिय छल। राजकमल आ शरत विलक्षण व्यक्ति छलाह। हुनक साहित्यो विलक्षण अछि।

युगबद्ध मिथुन की भावभूमि तुम रस-पिच्छल
तुम स्वेद-सुरभि, हारा जिससे मृगमद परिमल
बिम्बग्राही तुम स्वच्छ स्फटिक, तुम प्रभा तरल
भासित जिसमें सित-असित, मलिन एवं उज्ज्वल
तुम चर्चाओं के केन्द्र-बिंदु, तुम नित्य नवल
इस-उस पीढ़ी के लिए विरोधाभास प्रबल
बाहर छलनामय, भीतर-भीतर थे निश्छल
तुम तो थे अद्भुत व्यक्ति, चौधरी राजकमल

: नागार्जुन

PROUD OF MADHUBANI

Indian Public School

Stadium Road, Madhubani, Bihar-847212

Founder : Dr. Faiyaz Ahmad

Director : Mrs. Nikhat Reyazi

Special Attraction

- We believe in complete education & discipline
- Residential Co-education upto +2 level
- Completely English Medium
- Widely extended campus
- Conveyance facilities
- Hostel well furnished
- Centrally located
- Rich Library
- Free computer education
- Games & sports facilities
- Audio Visual Teaching Aids
- Admission only on merit basis
- Regular interaction with parents
- Well equipped science laboratory
- Music, Quiz, Drawing, Painting etc.

Admission for 2006-2007 Session is going on

Principal

डाक सम्पर्क : प्रो० विश्वनाथ झा
मैथिली रचना मंच, सोमनाथ निकेतन,
शुभंकरपुर, दरभंगा-6 9334931266

रचनाक प्रकाशन पर शुभ कामना
मो० अयूब
दरभंगा

मुद्रक : प्रिंटवेल, अशोका मार्केट,
टावर चौक, दरभंगा, दूरभाष-248421
सम्पादन पूर्णतः अवैतनिक

HOLY MISSION SCHOOL & HOSTEL

BENGALITOLA, LAHERIASARAI, DARBHANGA - 846 001
TEL. NO. - 06272-244107
(UNDER C.B.S.E. +2 LEVEL)
(RUN & MANAGED BY - H.M.E.W.C. TRUST)

38770
1935

SALIENT FEATURES

- ★ Centrally located in well decorated building.
- ★ Trustworth education on C.B.S.E. at reasonable fee structure.
- ★ Well decorated & Well equipped science, comp. lab & library.
- ★ Grandsome hostel with all facilities.
- ★ Efficient & experienced teachers as per C.B.S.E. pattern.
- ★ Regular assessment & timely examinations.
- ★ Best discipline & perfect academic atmosphere ensured.
- ★ H.M.S. does not believe that any child is problem.

"VISIT ONCE & FEEL THE DIFFERENCE".